अथ गंगासुतकृतकाव्यसंग्रह पञ्चाङ्ग प्रारभ्यते

प्रथम अंगकोश द्वितीय अंगनाममाला
तृतीय पिंगल चतुर्थ काव्यभूषन
औ दूषन और अलंकार
पंचम नायक नायका भेद
यह पांचो चीजोंका बहुत तरहसे खुलासा किया
है यह नवीन ग्रंथ बहुत उत्तम है

वाराणसीप्रसादस्य नियोगेन प्रयत्नतः ॥
काशीसंस्कृतमुद्रायां मंकितोयं शिलाक्षरैः १
श्रीकाशीजीमे ज्ञानवापीके पूर्व फाटकपर श्रीविश्वना
थजीके पास महाराज शिवलाल दुबेजीके मकानमे
छपी जिनको लेना होय उनको श्रीयुत बाबू वाराण
सीप्रसादजीके पास वा भाई प्रतापसिंहजीके पास मि
लेगी संवत् १९३४ तारीख ७ माह अगस्त सन् १८७७ ई०

अथ गंगासुत कृत नायक नायका भेद काव्यसंग्रह पंचांग लिख्यते

श्रीगणेशायनमः॥ दोहा॥ एकरदन गजबदन के चरनकमल कर जोरि॥०॥ कहौं काव्य के भेद सब जस कछु लघु मति मोरि। एक रोज एक मकान पर सब इष्ट मित्रों का मजमा जमा हुआ था और चर्चा काव्य का हो रहा था उस वक्त उन लोगों ने मुझसे फरमाया कि आगे प्राचीन कविवरों ने जो सतसैया कविप्रिया रामचंद्रिका आदि जो ग्रंथ बनाये हैं उनका पढ़ना और समझना अत्यंत कठिन है सो कोई ऐसी सीधी राह निकालना चाहिये कि जिसमें थोडे परिश्रम में सब खासुआम की समझ में आ जावे इस कारण से बमूजिब फ़र्माने सब मित्रों के मैं रामूजी उपाध्या गंगापुत्र वासी श्रीकाशी मह़ल्ले मीरघाट के ने यह ग्रंथ बतौर वार्तिक के लिख कर नाम उसका काव्यपंचांगसंग्रह रखा किस वास्ते कि हमको इस ग्रंथ में पांच चीजों का लिखना जरूर पडा पहिले कि बिना जाने काव्य कोश के शब्दों का अर्थ समझ में नहीं आता और यह न ही मालूम होता कि एक वस्तु के कितने नाम हैं इस सबब से प्रथम अंग कोश किया और द्वितीय अंग नाममाला कि एक नाम की कितनी चीजें हैं और तृतीय अंग पिंगल कि जिसके देखने से छंद बनाने की रीती और गनयगन के फलाफल समझ में आ जावे और चतुर्थ अंग ये कि काव्य मे दूषन भूषन के तने हैं और अलंकार और रस किसको कहते हैं और पंचम अंग नायक औ नायकान को भेद करके महात्माओ कविवरों से यह बिनय करता हौं कि प्राचीन कवियों ने संस्कृत से भाषा किया अब मैं उस भाषा को वार्तिककर्ता हूं बमोजिब कहने इष्टमित्रों के सो आप लोग कृपा करि के जो कुछ इसमें नामुनासिब जानो सो सुधार लेना हमारी नादानी पर ख्याल मत

करना किसवास्तेकिजैसेकोईअंधामनुष्यरास्तापरचलाजा
ताहैतोवहधीरेधीरेमंजिलतैकरकेमकामपरपहुंचजाताहै
परन्तुउसकोउसराहकाजोसुखहैसोनहीमिलताइसीनरह
जोलोगरामायनआदिहरिचरित्रपाठनपठनकरतेहैंसोनारा
यनकीकृपासेमनोर्थतोउनकासिद्धिहोजाताहै परन्तुउस्के
अर्थअन्वैकाआनंदउनकोनहीप्राप्तहोता इस्वास्तेउनमनु
ष्योंकेलियेयेकाव्यपंचांगसंग्रहनेत्रहैसोचाहियेकिजिसकि
सीकोभाषापढनेकीइच्छाहोयसोपहिलेइसग्रंथकोपढैऔ
घोखैऔरगुरुजीकोभीचाहियेकिविद्यारथियोंकोयेहीउपदे
सनकरैजिसमेपढ़नेपढ़ानेवालेकोश्रमकमपरै इसकारनस
बसेहमारीयेहीप्रार्थनाहैकिकृपाकरकैइसकोदेखैं ॥ ॥
श्रीसरसुतीयेनमः ॥ दोहा ॥ श्रमकरआवतहैहियेछाडिब
ह्मआगार ॥ बुद्धिप्रकासितकविनकीऐसीमानुउदार ॥ कवि
त्त ॥ बानीजगरानीकीउदारताबखानीजाइऐसीमतिकहौ
धौउदारकौनकीभई ॥ देवताप्रसिद्धसिद्धिरिषराजतपवृद्धि
कहिकहिहारेसबकहिनाकाहूलई ॥ भावीभूतवर्तमानज
गतबखानतहैकेसवदासकेहैनावखानीकाहूपैगई ॥ वर
नैपतिचारमुखपूतवरनैपाचमुखनातीवरनैषटमुखतद
पिनईनई ॥ अथकाव्यसंग्रहपंचांगप्रथमअंगकोशलिख्य
ते ॥ अथगनेशनाम दोहा ॥ लंबोदरहेरंबपुनिद्वैमातुरएकदं
त ॥ मूषकवाहनगजबदनगनपतिगिर्जानंद ॥ वक्रतुंडसुं
डालपुनिविघनहरनससिभाल ॥ गंगासुतकविवरनकेबु
धिदायकसबकाल ॥ अथसरस्वतीनाम ॥ सरस्वतीअरु
सारदावीनावाकविधुवाम ॥ इराभारतीवातुरीगिराभवानी
नाम ॥ अथब्रह्मानाम ॥ अजकमलजवेधापिताधातासतधृत
सोइ ॥ अष्टाचतुराननधिखनवहुरिस्वयंभूहोइ ॥ विधीवि
धातानामपुनिस्त्रष्टीसिरजनहार ॥ गंगासुतपैजानियेब्रह्म
देवकर्त्तार ॥ अथविष्णुनाम ॥ सारंगीश्रीचक्रधरजलसाई

भगवान॥श्रीधरश्रीवैकुंठधरदनुजारीजगजान॥अथशि
वनाम॥गंगाधरहरसूलधरससिधरशंकरवाम॥सर्वसं
भुभवभीमशिवभार्गकामरिपुनाम॥त्रियनयनत्रिवंकत्रिपु
रहरईसउमापतिहोय॥जटीपिनाकीधुरजटीनीलकंठभृगु
सोय॥महादेवसेदेवबलिजाकोधरनितध्यान॥ताकोतूकप
टीकहतनेरोकोनस्थान॥अथइन्द्रनाम॥कौसिकवास्वव्र
तहामघवासातुरसूत॥सक्रसतक्रतुसचीपतिसक्रदनपुर
हूत॥विष्णुपुरंदरवज्रधरआखंडलीरिपुपाक॥गंगासुतये
जोनियेसुरपतिइन्द्रवराक॥अथसूर्यनाम॥देवदिवाकर
विभाकरदिनकरभास्करहंस॥मेहरतिमिरहरप्रभाकरवि
वैस्यानरनिभंस॥अथबृहस्पतिनाम॥धिषनसिखंडिन
अंगिरासुराचार्जेगुरुजीव॥सुरगुरूश्रीबृहस्पतिसरवससु
खमासीव॥अथदेवतानाम॥देवमनिरजरविबुधसुरसुम
नसत्रिदिवेस॥विंदारिकाविमानगतिअग्निजीभअम्रतेस॥
दिविखदलेखावरहिमुख श्रीवानवरदानि॥गंगासुतकवि
योंकहैइतेदेवताजानि॥अथअमृतनाम॥सोमपीयूखसु
धामधुअगदरागसुरभोग॥अमीमयूखकान्हरकथासुनि
सुखपावेलोग॥अथचंदनाम॥सोमसुधाकरचंद्रमाऔ
रछपाकरनाम॥उडगनपतिपुनिनिसापतिविधुशिवभालल
लाम॥ससिमयंकमृगांकपुनिहिमकरइंदुवखान॥कहत
सुधानिधकलानिधपुनिदुजराजहिजान॥अथशुक्रनाम॥
उसनाभार्गवकाव्यकविअसुरपरोहितजान॥गंगासुतश्री
रामकीनखसीज्योतिवखान॥अथमंगलनाम॥भौमअं
गारककुजकहैलोहिकांगमहिपाल॥करजोरोपायनपरो
मंगलरूपगोपाल॥अथमाननाम॥अहंकारअभिमानम
दगर्भदर्पगुमान॥गंगासुतकवियोंकहतएतेनामवखान॥
अथसखीनाम॥सखीसहेलीसहचरीवेसासाधीहोइ॥दि
तूलहवरीश्यामकीआलीकहसबकोइ॥ अथप्रियानाम॥

बुधीमनेखास्वपसुखीमेधाधिखनाधीय।।गंगासुतयेप्रिया
हैभलीविचच्छनतीय।अथसीघ्रनाम।।छिप्रासहरउतारद्रु
तजुरतझटितलघुआसु।।तुरनिऔवातुरकहे।गंगासुतसुख
सासु।। अथधामनाम।।भवनसदनसंकेतगृहआलयनील
यजान।।गंगासुतअस्थानकेएतेनामवखान।।अथमुक्तीना
म।।अमृतमुक्तिकैवल्लपुनिगंगासुतअपवर्ग।।निश्रियपेनि
र्वानपुनिभाखतयेतेस्वर्ग।।अथसुवर्ननाम।।अष्टापदहा
टकपुरटमहारजतअरुसोन।।कांचनअरजुनकोडीस्वर
चामीकरछविभौन।।हेमहिरन्यकलधौतपुनिविष्णुवरनस
बज्ञान।।गंगासुतजाकेसरनपावतपदनिर्वान।।अथरूपा
नाम।।रूपकारजतखरजोरपुनिजानरूपऔररूप।।चांदीके
येनामसबभाखतसुकविअनूप।।अथउज्जलनाम।।सुर्कसु
भ्रपांडरविसदअर्जुनसितअवदात।।धवलधारश्रीगंगकीका
टतपानकघात।। अथसोभानाम।। सोभाआभाप्रभापुनि
सुखमापरमाकांति।।दुतिकहियतश्रीरामकीगंगासुतयहि
भांति।। अथकिरिननाम।।गोमरीचयप्रभस्तिपुनिअंसमयुष
वसजोति।।रस्मीयेससिसूरकीकहतसकलकविगोति।।
अथसिद्धीनाम।।अनिमामहिमागरिमालघुमाप्राप्तप्रकास
।।वसीकरनऔरईसताअष्टसिद्धिहरिदास।।अथनवनिधि
नाम।।महापदमअरुपदमपुनिकच्छपमकरमुकुंद।।संख
रध्वजऔरनीलनदकअरुइककहियतुकुंद।।अथअंतहकरन
नाम।।सांतह्रिदयमनमधपिताआनममानसनाम।।हियहर्षे
तसुनिहरिकथासुंदरजसअभिराम।।अथहीरानाम।।निहक
रपदकरवज्रपुनिवैरागरयहिनाम।।हीराखचितजोसेजपै
सोयेसुंदरश्याम।।अथमोतीनाम।।ससिगोतीमोतीगुली
जलजसीपसुतनाम।।मुक्तागजमुक्तानकीमालापहिरे
श्याम।।अथमयूरनाम।।शिवसुतवाहनअहिभखीकेकीव
रहीमान।।सिखीसिखंडीमोरपुनिनीलकंठयहजान।।और

कलापीजानियेयहमयूरकोनाम॥जाकेपंखनकोमुकुटधरे सीसघनस्याम॥अथसिंहनाम॥पंचाननअरुसिंहहरिकं ठीरवमृगराज॥पुंडरीकनरसिंहजूरारवोजनकीलाज॥दे वीवाहनकेहरीपसुपतिअतिबलवान॥कहेनामगनिग जअरीकविजनपरमसुजान॥अथअस्वनाम॥वाजीवा हतुरंगहयअस्वअर्वकीमान॥तरलतेजगतिअतिचपलसुं दरघोडाजान॥अथगजनाम॥हस्तीदंतीदीर्घरदपद्मीवा रनव्याल॥कुंजरइभकुम्भीकरीतंबवेरनसुंडाल॥सिंधुर अनकपनागहरिगजअरुमत्तमतंग॥रामद्वारझूमतख डेविरचितनानारंग॥अथराजानाम॥प्रभुपतिभूपतिस्वामि पुनिअधिपतिराजाभूप॥अवनीपतिमहिपालकहिनरपति परमअनूप॥अथकिंकरनाम॥अनुचरकिंकरदासपुनि विधिकरअनुगअवदात॥सेवकभृतश्रीरामकेछविबरनी नहिजात॥अथदासीनाम॥भृत्यादासीकिंकरीचेरीभर हीअंभ॥चेरिनलषिरघुनाथकीलजतउरवसीरंभ॥अथ अंजननाम॥कज्जलगजपाटलमखीनागतूनद्रिगबान ॥गंगासुतकवियोंकहेएतेअंजनजान॥अथलक्ष्मीनाम॥ श्रीपद्मपद्मालयाकमलाचपलाहोइ॥सिंधुसुतामाइ न्दिराविष्णुवल्लभासोइ॥जाकीनेककटाक्षछविरहीसक लजगछाय॥सोलक्ष्मीवृषभानगृहआपवसीहेआय॥अ थजननीनाम॥अंबासावित्रीप्रसूजनिइत्रिमानाम॥जन नीराधाकुअरकीवेठीमंदिरधाम॥अथनमस्कारनाम॥वंद नअभिवंदनप्रनतिनमस्कारकरितादि॥प्रनम्यप्रनामनि तकीजियेजेजगकारकआदि॥अथनिसेनीनाम॥आरो हननिसेनपुनिऔरगोनिसोपानि॥श्रीरघुनंदनसदनमेंम निमयसीढीजानि॥अथपुत्रीनाम॥पुत्रीदुहिताकन्यिका तनयातनुजामान॥सुतासोश्रीवृषभानकीसबसुखदा निबखानि॥अथसेज्जानाम॥कसिपुतुलयसेज्जासयनसं

वेसनसेयनीप॥दुग्धफेनकीसेजपरपोढेराममहीप॥अ
थउसीसानाम॥उपवरहनउपधानपुनिकंदुक सोयउ
छीर॥मृदुलउसीसासोंउठगिबैठेमानगंभीर॥अथकुसुमना
म॥प्रसुनकुसुमसोफूलपितापुहुपमंजरीनाम॥फूलगेंद
कोकरलियेखोरीखेलतश्याम॥अथकेसनाम॥अलक
सिरोरुहचिकुरकचकुंतलकेससुढार॥कबरीललितलि
लाटपरसुखमाकरतपसार॥अथलिलाटनाम॥मस्तक
ललितलिलाटपरबेंदीबनीजराय॥मानोंसुबरनसिलाप
रबैठेउडुगनआय॥अथनेत्रनाम॥लोचनअंबुकचखुदृ
गइछनरूपअधीन॥कंछुरिसिरतिनयनपुनिजानहुभीजे
मीन॥अथबंसीनाम॥बंसीकुम्भिनमानहापस्याधारीना
म॥वेसरसोउरभीजोलटमनहुबंसिकाबाम॥अथश्रवन
नाम॥श्रुतीश्रवनअरुसब्दिकासूत्रकानगंभीर॥जनुवि
वरुपककमलकलिफूलीससिमुखतीर॥अथअधरनाम
॥वानीओष्टपुनिरदनछदअधरबिंबअरुनाय॥राधाजीके
ओठकीछबिबरनीनहीजाय॥अथदंतनाम॥रदनदसन
द्विजदंतरदइमिदमकतरसभीज॥नवनीरजमेंजमेंजनु
सीतलविद्रुतबीज॥अथठोढीनाम॥चिबुकचारुठोढी
कविचतिलराजतछबिऐन॥मनहुरसीलेअंककीसुखरी
मूंदीमैन॥अथवदननाम॥आननआस्यवदनपुनिवक्तुं
डछबिभौन॥मनौरुपयछैजातइमिजिमिदर्पनसुखमौन॥
अथग्रीवानाम॥गलनलकंधरग्रीवपुनिकंठकपोतीकौन
॥पीकलीकजनुझलमलैसबछबिकीन्हीओन॥अथकर
नाम॥हस्तबाहुमुखपानिकरकबहूधरतकपोल॥वरअ
रविंदबिछायजनुसोवतइन्दुसदोल॥अथउरजनाम॥उ
रजपयोधरकुचस्थनउरमंडनछबिऐन॥कंचनसंपुटदे
वतापूजिजेपायेमैन॥अथकिंकिनीनाम॥रसनाकांचीकिं
किनीसुक्षमेखलाजाल॥[illegible]

घनवार॥अथनूपुरनाम॥तुल्यकोटमंजीरपुनिनूपुररुनकतपाय॥भ्रमकिउठीजनुमैनकाबिनासहजसुभाय॥अथअंबरनाम॥चूनीचोलदुकूलपटअंसुकवसनसोचीर॥पियतनवासजोवसनमेंछिनछिनहोतअधीर॥अथसुकनाम॥रक्तचोचसुककीरजवपढनलगतपियनाम॥भुकिभहरावतिमुसकिजबअतिछबिपावतभाम॥अथदर्पननाम॥प्रतिबिंबीआदरसपुनिमुकुरसोकरलेत॥पियमूरतिनेननिनिरखिफेरडारितिपदेत॥अथवीनानाम॥तंत्रीवीनावल्लकीबहुरिविपंचकआदि॥जंत्रबजावतसहचरीबहुतभेदजततादि॥अथनागवल्लीनाम॥मुखवासनताम्बूलहूजपानसखीकरचादि॥भौंहउमेठतिवितनजनुचापचढावतिआदि॥अथसमयनाम॥सामजसमयअनीहवैअनमिखवेलाकाल॥बडीदेरलेगिसखिनयों देखीबालरसाल॥अथपानीनाम॥अंबुककमलकिलालजलपयपुहकरवनवारि॥अमृतअन्नजीवनभुवनघनरसकुसयावारि॥मेघपुष्कविषसर्पमुखकेकबंधरसतोहि॥उदकपाथसंबरसलिलअपकुपीठपुनिसोइ॥अथचालनाम॥तरलचलनगतिगवनपुनिगांहापादपपाय॥पदवंदनकरसहचरीठाढीसनमुखजाय॥अथहरिद्रानाम॥पीतागौरीकंचनीरजनिपिंडानाम॥हरदीचूनामिलतजोंदेखिभईतिमभाम॥अथकुटिलनाम॥वक्रअरिलपुनिकुटिलयेटेढीभौंहनठौर॥अरुनकमलपरभ्रातजनुपंखपसारेभौर॥भ्रूतद्रभकुटीकुटिलभौंहसतरकरभाल॥वहुतकालवीतेननिकवोलीवालरसाल॥अथनायकावचननाम॥क्षेमअनामयभद्रभयसिवसेसुभकल्ल्यान॥किमडोलतकछुकुसलहैपूंछतकुअरसुजान॥अथसखावचननाम॥संज्ञाआहूगोत्रपुनिक्षेमधामतुअनाम॥अमीवर्षतदरसननतेसवभेएपूरनकाम॥अथयुवतीनाम॥इस्त्रीललनासीमं तनीवामावनितावाम॥अबलाबालाअंग

नाप्रमदाकांताबाम॥तरूनीरमनीसुंदरीतनूदरीपुनिसोय॥ति
यतोसीतिहुंलोकमेंऔरनदूजीकोय॥ अथक्रोधनाम॥काप
अनुजअमरखरुटरोषमन्यूतमकार॥क्षोभभरेश्रीरामको ल
खिकाप्योसंसार॥ अथअर्युननाम॥ जिष्णुधनं जैविजैनरफा
ल्गुनक्रीडिहोय॥गुडाकेसगांडीवधरपारथकपिध्वजसोय॥
अथसुंदरनाम॥सुभगसुसमबंधुररुचिरकांतकमनकमनीय
॥सूयसलभव्यउत्सदरसनीयारमनीय॥सुंदरचारुरसाल अ
तिराधावरकोनाम॥गंगासुतजेहिसुमिरकैनरपावतसुख
धाम॥ अथयुदिष्ठिनाम॥धर्मतातअजीतरिपुकौन्तेयकुरु
राव॥नृपतीयुदिष्ठिरसमरप्रियतेरेसोनियभाव॥अथगंगा
जीनाम॥विष्णुपदीनिर्जरनदीनिगमनदीहरिरूप॥धूनदा
मंदाकिनीभागीरथीअनूप॥सुरसरीयायहिलोकमेंपाप
हारिसुभकारि॥तिमतुअकीरतिसरिततिअकियेपुनीत
नरनारि॥अथदीर्घनाम॥पृथुलअकासपरिनाहप्रभुआतु
रईबिसाल॥दीर्घस्वासजिनभरहुवलिकोकारनहैवाल॥अ
थसरीरनाम॥कायकलेवरकुनयवपुदेहआत्माअंग॥विग्र
हउपधनसहनऔधामसरीरपतंग॥तुअतनसमसरिकरन
हितकनकअंगभ्रपिलेहु॥कोमलसरससुगंधनहिकोक
बिउपमादेहु॥अथवारिजनाम॥पुंडरीकपुहकरकमलज
लजअंबुजअंबोज॥पंकजसारसतामरसकुवलयकंजस
रोज॥मकरंदीअरविंदपुनिपद्मकुसेसयनाव॥तवमुखम
लिननलिनकछूदेखतहोवलिजाव॥अथकामनाम॥मन
मथमदनमनोभवापंचसरस्समरमार॥मीनकेतकंदर्पपुनि
दर्पकविरहविदार॥पुष्पचापमनसिजवितनशिवअरिजानो
काम॥गंगासुतयहिजीनीहैजोभजिहैहरनाम॥ अथमधुक
नाम॥मधुकरभ्रमरद्विरेफअलिअलिनसिलीमुखभृंग॥चं
चरीकरोलंबपुनिकीलालयसारंग॥मधुपमधुव्रतमधुरसि
कइन्दीरसमधुबीर॥भ्रमरबिनाकेतकिनकछुकेतकीबिना

नभीर॥अथदामिनीनाम॥छनरुचिछटाअकालकीतडित
चंचलाहोय॥दामिनीविमानघनवनैघनविनदामिनिसोय॥
अथसेनानाम॥प्रनियनीजनीवाहनीचमूविरुथिनऔनि॥
॥सैनाविनाननृपवनै नरपतिविनानहिसैनि॥अथमित्रनाम
॥इष्टादइतावल्लभाप्रियाप्रेयसीहोइ॥प्रियकेतोसीप्रेयसी॰
अवरनदेखीकोइ॥अथलतानाम॥व्रततीविसतीवल्लकी
विसनीलताअतान॥अमरवेलजिमिफूलविनइमिदेख
ततुअमान॥अथपुत्रनाम॥आत्मजसूनुअपत्यपुनितनु
जरनूदयतात॥नंदकेनंदगुविंदसोंनकरुगरवकीवात॥अ
थमनुष्यनाम॥मानुषमर्त्यमनुष्यनरमानवमनुजपुमान
॥नरजिमभजैनंदनंदकोहरिईश्वरभगवान॥अथयोगीस्व
रनाम॥ऋषिभिक्षुकतापसजतीतपीकहतपुनिताहि॥यो
गीनिरमलचितकियेनितहीखोजतआहि॥सन्यासीपरि॰
व्याजमुनिजटिलीमुंडीहोइ॥दंडधरेभगवावसननिर्वानीप
दसोइ॥अथवेदनाम॥धर्मश्रुतिपुनिब्रह्मद्रुमधर्ममूलस
बकाम॥निर्नयअगमजाकोकहतवेदहिसुंदरश्याम॥अथ
सेषनाम॥शेषमहाअहिसर्पपतिधरनीधरनअनंत॥सहस
वदनकैगुनगनततरूपिनपावतअंत॥अथधर्मराजनाम॥
वैवससुतपुनिपितर्पतिसबजीवनपतिहोइ॥महिखद्ध्व
जनरदंडधरसमवातीपुनिसोइ॥अंतकालकृतांतजमजा
तेजगडरपंत॥सोतुअखिलभूभृंगतेथरथरथरकापंत॥
अथकुबेरनाम॥पुन्यजनेस्वरवैस्यवनधनदएलविलहोइ
॥गुह्यकपतित्रिवंकसखाराजराजपुनिसोय॥नखाहनकिन्नरअ
धिपद्रव्याधीसकुबेर॥हरिपदपंकजपरसिकैपावतनाहिअ
वेर॥अथवरुननाम॥वरुनप्रचेतापासधुनिजलपतिजलचर
ईस॥सोपुनितवपियपदननितपसतरहतहैसीस॥अथ
दुर्गानाम॥उमाअपर्नाईश्वरीगौरीगिर्जाहोइ॥मिडाचंडि
काअंबिकाभवाभवानीसोइ॥आर्जारूपायेनकाअजासर्वमंगला॰

नाम॥ मायाजीआधारजगहै बिस्तारनिबाम॥ अथपापनाम॥ येनब्रजनदुह्कृतदुरितहै मलीनसपंक॥ कल्मिखक लिमखकलुषपुनिकस्मलसुमलकलंक॥ पापमहावनदवनदवजाकोरंखकनाम॥ ताकोतूकपटीकहततोहिकहाकहुवाम॥ अथनौकानाम॥ उडपपोतनौकातरनिपुनिवहिवजलयान॥ नामनावचढिभवउदधिकेतेतरेअपान॥ अथश्रोनितनाम॥ श्रोनितरक्तककोनिपुनिरुधिरस्रकछतजात॥ लोहूपीवतपूतनाभईपवित्रहुगात॥ अथराक्षसनाम॥ जैननिसाचरतमीचरजातुधानक्रमव्याध॥ कौनपअरितपउन्यजनसिंकासुवनअसाध॥ ऐसेराक्षसपातुकीमैदेखीगतिहोति॥ उलटिसमानीराममेंप्रगटितजाकीजोति॥ अथधूरिनाम॥ धूरिधूसरीरवेहरजपासुसर्करामंद॥ जापदपंकजरेनुकोचाहतमनकसनंद॥ अथमिथ्यानाम॥ मिथ्याघोखमृखाअनृतविपथअलीकअनर्थ॥ ऐसेपतिकोभूठवलिसोबोलियेविपर्थी॥ अथनिकटनाम॥ निकटनगीचनियरानतटउपसमीपअभ्यास॥ अवस्यनिरादरलहैसोरहैनिरंतरपास॥ अथचंदननाम॥ गंधसारसीखंडहरिमलयजभद्रपटीर॥ चंदनकोंईधनकरतमलयावासीवीर॥ अथमीननाम॥ सफरीअनमिखभस्पतिपृथुरोमापाठीन॥ मकरउलीपीअंडभववैडावनभ्रखमीन॥ अथसागरनाम॥ सिंधुसलिलपतिसरितपतिअंबूनिधिकूपारि॥ इरावानआरनवउदधिकुस्तुभअग्रअपारि॥ अथवानरनाम॥ कपिसाखामृगवलीमुखकीसप्रबललंगूर॥ वानरकारवरनारिअरिहरीविधाताकूर॥ अथवलभद्रनाम॥ रौहिण्यवलभद्रबलसंकरषनबलराम॥ नीलांबररेवतीरमनहलधरपालककाम॥ अथपृथ्वीनाम॥ पृथ्वीछितछोनीछमाधरनीधात्रीगाइ॥ ऊरवीजगतिवसुमतीवसुधासर्वसहाइ॥ अचलाविपुलासागराधराधात्रीहोइ॥ गोत्राअवंनीकुंभिनी

महीमेदनीसोइ॥विस्वंभरावसुधाथिराकास्यपीपुनिआहि॥रसाअवंताभूइलाविलाकहतपुनिताहि॥अथबाननाम॥मरखंगनासकविसिखजीन्हसिलीमुखवान॥कनमार्गननाराचइषुधात्रीसोखनप्रान॥सायकघायपिरायपुनिसिमिटसरीरविलाइ॥वचनतीरकोपीरवलिमिटैनजोयुगजाइ॥अथअगनीनाम॥पावकवन्हीदहनज्वलनसिखिधनंजयहोइ॥सुक्रऊर्खवुधवाइसिखिवित्तहोत्रपुनिसोइ॥जातवेदजलजोतिहरिचित्रभानुव्रिहदान॥अनलहुतासनविभावसुनिरजरजीभक्तसान॥अग्निदग्धजेद्रुमलताफिरिदलफूलनलेत॥वचनदग्धजेहीयवलिवहुरिनअंकुरलेत॥अथमूर्खनाम॥मुअचमूढजडमूकनौअज्ञकदुकवदसंठ॥मूर्खनजानैमहामनिजैसेदियेकपिकंठ॥अथअभिज्ञनाम॥अभिज्ञकुसलकोविदनिपुनछंनप्रवीननिस्नात॥वदुविदियज्ञनागरनवलजानेरसकीबात॥अथअपराधनाम॥अघआगसहेलनअहितअवगुनजोइयेपीव॥कूपछाहजिमिराषियेज्ञोनभाखियेजीव॥अथप्रेमनाम॥दोहदहरअभ्नेहहितप्रेमऔरअनुराग॥जिनकोहितसिंयरामसोंताहीकोवडभाग॥अथपर्वतनाम॥अगनगभूधरस्तनपुनिश्रृंगीसिखरीहोइ॥सैलसिलोचनगोत्रदरिअचलअद्रपुनिसोइ॥गिरगोवर्धनवामकरधरेश्यामअभिराम॥तुअउत्तंवहधरधरीअवलोमिटीनवाम॥अथभुजंगनाम॥पन्नगनागभुजंगउरगजिम्हकभोगीसर्प॥चक्षुश्रुवाहरिजीभद्रूकाकोदरगरदर्प॥आसीविषीविषधरफनीमनीविलसब्याल॥चक्रीदर्वमूढहलिजिहलिहकेवलकाल॥कालीअहिगंजनसमयमैगदिरास्वीवांद॥नंदनंदनप्रियप्रेमवसपरतहतीदहमांह॥अथपीरानाम॥वाधाविधुराव्यथारुजपीराअंगगिलानि॥अवजनुपरसतिपीरवलिकिनसिखईयहवानि॥अथअसुरनाम॥दानवदनुजदइत्यपुनिसुररिपुअ

सुरअसंत॥मायारूपीरैनदिनडोलतविकटअनंत॥अथ
कानननाम॥विपिनअरन्यवनगहनपुनिसघनकच्छकां॰
तार॥अटवीमेंअकिलैदईमोहननंदकुमार॥अथसंध्या
नाम॥निसमुखसंध्यापत्रिप्रसुसायंकालप्रदोष॥सांझरूप
रीअवचलहुवलिछाड़िछमाकरिरोष॥अथविषनाम॥गर
लहलाहलगरअमृतकालकूटःरसमार॥रसमेंविरसनबो
रुवलिअवजनिकरैअवार॥अथपपीहानाम॥कालकंठदा
त्यूहहरिचातिकसारंगनांव॥घनसेसरूठेपपिहरेनहिनावनै
वलिजांव॥अथरजनीनाम॥छंदाछपातमीस्वनीजमीतमा
श्रीहोइ॥निसिसावरी विभावरीरात्रीजामासोइ॥सुखदसो
हाईसरदकीराकारजनीजाति॥चलुवलिमोहनलालपैक्यों
वैठीअंगराति॥अथआकासनाम॥अंबरपुहकरनभविव
तअंतरिछघनवास॥व्योमअनंतविवहावसीखंसुरत्तम॰
आकास॥गगनजोउडगनवनिरहेनेकचलोतजिरोष॥सोम
सरदकीचंद्रिकासरससुभगनिर्दोष॥अथसंग्रामनाम॥आ
योधनरनवाजिमृधअल्ब्यसंकसपीक॥संवरापसंगरसम
रसंप्रुगकलहअनीक॥सुरतयुद्धजवपीवसोंनोहिवनैगो
वाम॥मखनाराचनिसुनिकुअरकरिहैकहाप्रनाम॥अथन
खनाम॥करजपुनभैवनखरनखहेंगभीनीवाम॥कवकी
स्तिहिजोलियतवलिनहिकछुनषसोकाम॥अथअल्प॰
नाम॥तुल्यअल्पलवसूक्ष्मतनुनिपटक्रिसोदरथोर॥कहि
वलियेतोमानसुचिराख्योंदेकेहिठौर॥अथमकरीनाम॥तु
लासूत्रामरकटीउर्नेनाभिपुनिहोय॥जनुकहुमकरीगुनकरीपक
रीविद्यासोय॥अथमारगनाम॥वर्तमअव्रसरनीपपथसंवरवदउ
विहार॥मगदेखतहैहैं दईमोहननंदकुमार॥अथाक्रुपाना
म॥मायादयाक्रुपाघृनाअनुकंपाअनुक्रोध॥करुनाकरक
रुनानिधेछाडिछिमाकरुबोध॥अथखडगनाम॥रिष्टिकुखे
यछपानिअसिमंडलअग्रकरवाल॥षगतेतोतेतूकहीघाय

करनकहैवाल॥अथदिसानाम॥कन्याकाष्टाककुभदिसि गोआसायहिचोर॥कबकेचितवतहैदईनागरनंदकिसोर अथनदीनाम॥ सरिताधुनितरंगिनीतटनीह्रदिनीहोइ॥सरितास्त्रवतीनिर्मगापगापरेफासोई॥स्त्रैवलनीश्रोतास्वयनिह्रीपावलिजलमाल॥नदीनहीकोउवारमेंसोचतकाहेवाल॥ अथविवाहनाम॥परनिनिवेसनपानिगृहउत्सवविहितविवाह॥सौतिपरीजोभौनहीदुखदेतीउहिनाह॥अथमदिरानाम मधुमाध्वीमदिरामिरासुरावारुनीहोय॥आसवमयकादंबरी मधुआरामइरोय॥सिंधुरसनावधिहाहालासिंधुपसूति॥ मदपीयेज्योंवकतकोऊकहावकतेहैदूति॥अथसुभाव नाम॥प्रकृतिनिसर्गसहजअनिजविष्वसुसीलसुभाव॥कौनटेवटेढीपड़तिसुंदरसरलकहाव॥अथअंधकारनाम॥ अन्धतमिश्रनकावतमधुंधतकुहरनिहार॥ विनाभजनभगवानकेमिटेन मनअंधिहार॥ अथवृक्षनाम॥ पत्रीदलीफलीवहिरवृक्षमहीरुहहोय॥साखीविटपिअनोकुहूकुजद्रुमपादवसोय॥अथपत्रनाम॥पत्रपरनदलवरहछदस्वर्कतजबतरुपात॥तुवआगमभ्रमचौकपियउठिउठिउतलौजात॥ अथपवननाम॥स्वस्नसदागतिमरुतपुनिमारुतजगतपरान॥अनिलप्रभंजनगंधवहनवायुपूतहनुमान॥तुअतनपरिमलपरसिजवगवनततधीरसमीर॥नाकहवहसन्मानकरिपरिरंभनवलपीर॥ अथधुनिनाम॥नादनदनिस्वरसद्बपुनिमुरवरतरुनतरभाव॥ब्रवंसीमेंकहतपियहेप्यारीपुनिआव॥अथाज्ञानाम॥पयआदेसनिदेसपुनिआज्ञासासनयोग॥ आयसुहोय अवज्ञाउवलिलहैप्रीतकोलोग॥अथअतिनाम॥भृसअति सैंअलिवलिअतिअधिकअत्यंतनितंत॥ अतिसर्वत्रभलीन हीकहिगयेआगेसंत॥अथसमूहनाम॥ निकरवुकरनिकुरवजपुरसुगयुथथोह॥ कंदलजालकलापकुलविवाहनिवयव्रोह॥व्रातअनंतकदंबगनग्रामतोमवद्रुवंद॥मैत्रने

कवातेकहीभईतवेकीबुंद॥ अथअल्पनाम॥ दररसोकइ
खद्अलपरंचकमंद्मनाकु॥लवतियसहचरितनचितैमुस
किकुअरइतनाकु॥ अथदुखनाम॥ कदनविधूरकद्रनतुद
गहओष्टजपुनिआहि॥दुखजनदेअवज्ञानिदेकत वैठीअन
खाहि॥अथअधरात्रनाम॥निसीनिसितऔमहानिसहोन
लगीअधरात॥ तवनचलैसखीसोइरहुजइयेउठिपरभात॥
अथवज्रनाम॥ असिनकुलिसनिर्घातपविवज्रसीतरीनाहि
॥परौवुरेकेभवनपैजोविरसकरैरसमाहि॥ अथलज्जाना
म॥ ह्रीलज्जाव्रीडासकुचतत्रनकरिविनकाज॥चलिवलि
प्यारेपियपेऔषद्खातकीलाज॥अथचरनपादुकानाम॥प
दतत्रानउपानपुनिपादपीठमृदुभाय॥पनहीमनहीभावती
आगेधरीवनाय॥अथअटननाम॥सोधहमीलप्रसादतेच
लीयुवतिगतिमंद॥सोभितमुखजनुगंमनतेअवनीउतरेचं
द॥अथचंद्रिकानाम॥ज्योतिस्नापुनिकौमुदीवहुरिचंद्रिका
पाव॥जोन्हसीपसरितेवदनथोरोहसिवलिजाव॥अथवीथि
कानाम॥परायप्रतोलीविथिकरथ्याकहियेताहि॥पेहीवि
थिचलिजाउवलिनिपटनिकटपियआहि॥अथउपवननाम
॥कृतवनऔउपधानपुनिउपवनसोआराम॥यहिवृंदावन
वागतुवलखिवलिछविकोधाम॥अथवसंतनाम॥कुसुमा
कररितुराजमधुमाधवीसुरभिवसंत॥मालीज्योंजुगवतस
दांजानेऔधिलसंत॥अथपक्षीनाम॥द्विजसकुंतपक्षीसकु
निअंडजविहगविहंग॥विहगपतत्रीपत्ररथपत्रीपतगपतं
ग॥अथपीपरनाम॥ चलदलपीपलगजअसनवोधारक्ष
अस्वत्थ॥पीपरदेवलिदाहिनेजोरिहाथपरिमस्थ॥अथपा
टलनाम॥थालीपटलीफलरुहावामास्यामानाम॥अंवव
सामधुदूतिसोपाटलकरतप्रनाम॥अथआंवनाम॥पिकव
ल्लीकामांगचुतमदिरसखासनकार॥यहरसालकीमालव
लिनपजोरहीफलनार॥ अथमहुआनाम॥ मावमधुद्रुमम

धुम्रवामधुस्तीवगुडफूलि॥येमधूककेफूलवलिकछुतुम्म
अंगनिसूल॥अथकदलीनाम।।रंभामोचागजवसारातुफू
लिसुकुमारि।।येकदलीजिन्हमेकछूतुम्मउरुउनअनुहार
।।अथवेलनाम।।सुरभिसुलोकीवसाफलतालविलुमालू
र॥येश्रीफलतवकुचनसमकहतवहुतकविकूर॥अथतमा
लनाम॥कालकंधतापीछपुनिकंदुकसोइतमाल॥बैठेहै
जहांकान्हिवलितुमअरुमोहनलाल॥अथकदंबनाम॥
नूतनीपपष्टकसोपुनिमदिरागंधसुवाह।।यहकदंबजेहि
कान्हवलिचढिकूदेदहमाहि॥अथटेसूनाम।वोथचोथपुनिब्र
ह्म द्रुमटेसवेपरनपलास॥टेसूविरहीजननकोनाहरनाहि
विलास॥अथवहेरानाम॥अक्षविभातकअक्षफलसंवर्त
ककलिवृक्ष॥भूतवासवहेरतरहैजनिचलुमृगअक्ष।।अथ
नारिअरनाम॥वारनमुखलांगूलपुनिनारिकेलिसुभकाम॥
श्रीतरुनीयेनारिअरतोहिकरतपरनाम।।अथसुपारीनाम॥
घोठरूमुकगुआकपुनिपुंगिसुपारीअहि॥वारीवारीकहतच
लि रंचकयहितनचाहि॥अथकेसनाम॥कोवलिकाकाकपि
लताविस्वभ्यासीनाऊ॥कटुकतींवहऔरपैकेसछुयेवलि
जाऊ॥ अथपीपरनाम॥कोलाकृष्णामागधीत्रिगमतंदुल
होय॥वैदेहीस्यामाकनासोडीकहियेसोय॥अथमिर्चनाम
॥तिक्तताउपनाकोलकाकृष्णफलीपुनिनांउ॥मिरचलता
पीपरकहतभलीकरीवलिजांउ॥अथहरितुकीनाम॥पथ्या
अव्यथाअमृताकेचीहैसुभभोग॥यहहरीतुकीपगगहति
हरतिउदरकेरोग॥अथसुंठीनाम॥विस्वनागरीगजभिख
कमहाऔरवधीनाउ॥यहसुंठीतूअपायपरिकहतकिव
लिवलिजाउ॥अथछुद्रघंटिकानामे॥स्वादिम्रीडकामधुर
साकालमेरवलाहोय॥म्रीडिप्रवालागोसथ नीचारुफलापु
निसोय॥यहछुद्रावलिपापरतिरंचकयहतउचाहि॥नहिन
गसीलीवालसीनिपटरसीलीआहि॥अथपवारनाम॥सुवि

रनटिननिषीधमनिकंपोतापरवाल॥तुअअधरनसमक
हतकविपैनहीमृदुलरसाल॥अथयुथिकानाम॥हरिनग
निकायूथिकाहेमपुष्पिकाजाहि॥यहजूथीगूथीछवीठा
ढीलेतवलाहि॥अथकेसरनाम॥कासमीरकुंकुमरुधिरदे
ववल्लभानांउ॥यहकेसरद्विगभरकहतभलीकरीवरुजांउ
॥अथराजवल्लीनाम॥अंवष्टाप्रियवादनीराजपुत्रिकाआ
हि॥तुमहिदेखिफूलीजोअतिरंचकयहतनचाहि॥अथच
मेलीनाम॥सुमनाजातीमल्लिकाउत्तमगंधाआसु॥कछुइक
नवतनवासतेभिलतजासुकोवासु॥अथसजीवनमूरीनाम॥
जीवनमधुअवजीवतीत्रैजीवापुनिनाउं॥इतैसजीवनमूरवह
जोहेतूवलिजाउं॥अथदुपहरियानाम॥वंधूजीववधूकपु
निजपाकुसुमपुनिआहि॥दुपहरियाकेफूलवलिलखिफूले
महिचाहि॥अथगुंजानाम॥काकविककाकृष्णलागुंजाकर
तिप्रनाम॥मुखजोश्यामततुश्यामकोलेतिनामअभिराम
॥अथकेतुकीनाम॥नाथभरखजुरीत्रिनद्रुमाकेतुकीपकर
तिपाय॥तुअआगमआनंदवलिफूलीअंगनसमाय॥अ
थलवंगनाम॥ललितलवंगलताइतेहिपगनपरतिवलि॰
जांउ॥देवकुसुमश्रीसंज्ञपुनिजापकजाकोनांउ॥अथइला
यचीनाम॥चंद्रान्यककानिठकुटीत्रिकुटवालुकावेलि॥इते
इलाचीपगगहतिवलिमुखरंचकमेलि॥अथमाधवीनाम
॥वासंतीपुद्रकसोइमुक्तलतातानाउं॥इतमाधिकापापर
तितनकचितैवलिजाउ॥अथनागलतानाम॥तांबूलीअहि
वल्लरीहिजापानकीवेलि॥सरसमइतुअदरसतेवलिरंचक
मुखमेलि॥अथवटकेनाम॥जटाकपरदीरक्तफुलपुहुपद
पुनिनिःक्रोध॥यहवंसीवटदेखिवलिसभसुखनिरवधिरो
ध॥अथसरवरनाम॥हिदेपुष्करसारसरिसरिताताडनडाग
यहदेखोवलिमानसरफूल्योतुअनुराग॥अथकालिंदीनाम
॥जैमअनुजारविजाजमाकृष्णासामलआप॥कालिंदीजमुना

करतितवपतिपदनितज्ञाप॥अथतरंगनाम॥भंगतरंगक
लोलपुनिवीचीउर्मिसुभाव॥लहरीहाथपसारपुनिजगुनाप
रसतिपांव॥अथबेंतनाम॥बेंतसरीविद्रीछरीपियोमपुष्पवा
नीर॥मंजुलवंजुलकुंजतरवैठेहैबलवीर॥अथकोकिलाना
म॥परभृतकलरवरक्तद्रिगपिकधुनिजंहरसपुंज॥जनुपिय
आरतिनिरखितुहिटेरतिवलिचलुकुंज॥अथइन्द्रीनाम॥गो
हृखीकखंकरनगुनइन्द्रीज्योंसुखपाय॥त्योंराधामाधोमि॰
लेपरमप्रेमसरसार॥अथमालानाम॥मालास्त्रकुअजगुन
वतीहियजोनामकीदाम॥जोयहकंठकरिहैसोनरह्वैहैछवि
कोधाम॥अथयुगलनाम॥जमलयुगुलयुगद्वंदद्वैउभैमिथु
नविविवीय॥युगलकिशोरसदावसैगंगासुतकेहीय॥इति
श्रीगंगासुतकृतकाव्यसंग्रहपंचागप्रथमअंगकोशसमा
प्तः॥ ॥अथद्वितीयअंगनाममालाप्रारम्भः॥दोहा॥उचरि
सकतनहिसंसकृतजानाचाहतअर्थ॥तिनहितगंगासुतकि
योभाषअनेकाअर्थ॥अथगोनाम॥गोइन्द्रीगोवाक्यजल
गोस्वरवज्रखगचंद॥गोधनुगोतनुगोकिरनगोपालकगोवि
न्द॥अथसुरभीनाम॥सुरभीचंदनसुरभमृगसुरभीबहुरिव
संत॥सुरभिचराचतवनसुनेजोजगकर्ताकंत॥अथमधुनाम
॥मधुवसंतमधुचैत्रनभमधुमदिरामकरंद॥मधुजलमधुपै
मधुसुधामधुसूदनगोविंद॥अथकलिनाम॥कलिकलेस
कलिसूर्मकलिनिरखंगसंग्राम॥कलिकलियुगतहंऔरन
हिकेवलकेसोनाम॥अथधनंजयनाम॥अग्निधनंजयक
हतकविपवनधनंजयआहि॥अर्युनवहुरिधनंजयाकृ
ष्ण साथीजाहि॥अथअर्युननाम॥अर्युनद्रुमअर्युनधव
लसहसाअर्युनआथ॥अर्युनबहुरीगांडीवधरहरिखलत
जेहिसाथ॥अथपत्रनाम॥पत्रपर्नअरुपत्रसखाहनपत्रसु
वित॥पत्रपंखविधिनहिदियोउडउडिमिलत्योंमित्त॥अथ
पत्रीनाम॥पत्रीतनुपत्रीकमलपत्रीवहुरिविहंग॥पत्रीसरक

रवितजिमइ मिसेवोश्रीरंग ॥ अथ बरहीनाम ॥ बरहीद्रुमवर
हीअगिनबरहीकुक्कुटनाम ॥ बरहीमोरकिशोरकेचंद्रधरे
सिरश्याम ॥ अथधामनाम ॥ धामतेजअरुधामतनधामकिर
नगृहधाम ॥ धामयोतिजेब्रह्म भोधनीभूतहरिश्याम ॥ अथ
कामनाम ॥ कामभोगअभिलाषपुनिमनमथकहियेकाम ॥
कामकाजतजिमूलमतिभजिरेसीताराम ॥ अथवामनाम
॥ वामकुटिलअरुवामशिववामकामकरवाम ॥ वामनोहर
कोकहतजैसेसुंदरस्याम ॥ अथभवनाम ॥ भवशंकरसंसार
भवभवकहियेकल्यान ॥ भवपूजनजगसुफलतवजवभजि
येभगवान ॥ अथकंनाम ॥ कंसुखकंजलकंअनलकंसिर
कंपुनिकाम ॥ कंकांचनसोप्रीतिजसतसभजलेहरनाम ॥ अ
थखं नाम ॥ खंनभखंगृहखंनखतखंरधुनीकोनाम ॥ खंइ
न्द्रीदुखदेतुहैदयाकरौहरिश्याम ॥ अथकल्पनाम ॥ कल्प
विधीदिवसकल्पभकल्पसमर्थजोकोइ ॥ कल्पकपटतजि
हरिभजैकल्पवृक्षसमहोइ ॥ अथकरनाम ॥ करगजसुंड
करदंडपुनिकरजोकिरनकेरदान ॥ करतजिविषैविलास
सबभजहरअमीनिधान ॥ अथदरनाम ॥ दरजोकहतक
विसंखकोदरइंखदरहार ॥ दरडरतेराखहुकुअरगिरधर
नंदकुमार ॥ अथवरनाम ॥ वरसुंदरवरश्रेष्ठपुनिवरजोदेव
तादेत ॥ वरहुलासतेकान्हनितब्रजतियहियहरलेत ॥ अ
थवृषनाम ॥ वृषसुरपतिवृषकूर्मपुनिवृषजोवृषभवृषका
म ॥ वृषसुधर्मकरिहरिभजोजोचाहोसुखधाम ॥ अथपतं
गनाम ॥ तरनिपतंगपतंगखगपावकवहुरिपतंग ॥ सबजग
रंगपतंगकेहरिएकैनवरंग ॥ अथदलनाम ॥ दलकहियेनृ
पकोकटकदलपत्रिनकोनाम ॥ दलबरहीकेचंदसिरधरेस्या
मअभिराम ॥ अथपलनाम ॥ पलआमिखकोकहतहैखट
उसांसपलहोय ॥ पलजोपलकहरिबिनुपरेगोपिनेग्रसत
जोसोय ॥ अथबलनाम ॥ बलवीरजधीरजबहुरिबलनपद्ल

कोनाम॥ बलसाहसबलदैत्यपुनिबलकहियेबलराम॥ अथवयनाम॥ वयविहंगकोकहतकविवयकहियेपुनिकाल॥ वयजोकरिकुमंजातुहैभजलैमदनगोपाल॥ अथअलनाम॥ अलअपर्यसमर्थअलअलपूरनकोनाम॥ अलआभरनअलअलसतजिभजुमनमोहनस्याम॥ अथसारनाम॥ सारवृषथीरजधरमसारवज्रघृतसार॥ सारसवनकोसांवरोभाडपैरोसंसार॥ अथकलभनाम॥ कलभकहतहरिसावकहिकलभवहुरिउत्ताल॥ कलभकलुखकलकालतेराषैकृष्णकृपाल॥ अथनभनाम॥ नभअसिननभभाद्रपदनभसावनकोमास॥ नभआकासनभनिकटहीघटघटरसानिबास॥ अथवसुनाम॥ अष्टअमरवसुवन्हिवसुहैकिरनीवसुनीर॥ वसुधनजगमेसोधनीजाकेवसुबलवीर॥ अथपटुनाम॥ पटुतीक्षनकोकहतकविपटुआरोग्यकहंत॥ पटुप्रवीनसोईजगतमेभजेजोकरुनाकंत॥ अथतुरंगनाम॥ गरुडतुरंगतुरंगमनबहुरितुरंगतुरंग॥ हरिनतुरंगकुरंगसोइरंगानजोहररंग॥ अथजीवनाम॥ जीववृहस्पतिकोकहतजीवकहावैचंद॥ जीवआतमाकोकहतजियकोजियनदनंद॥ अथआत्मजनाम॥ आत्मजकहियेरुधिरकोआत्मजकहियेकाम॥ आत्मजकहियेपुत्रसोइभजेजोसुंदरश्याम॥ अथकमंधनाम॥ विनसिरकहतकमंधहैहैकमंधपुनिनीर॥ राक्षसयेककमंधजेहिगतिदीन्हीरघुवीर॥ अथहंसनाम॥ हंसतुरंगमहंसरविहंसमरालसुछंद॥ हंसजीवकोकहतकविपरमहंसगोविंद॥ अथपयोधरनाम॥ मेघाअरुकुचसैलद्रुमयेजुपयोधरआहि॥ चरनपयोधररामकेसनकादिकभजताहि॥ अथवाननाम॥ बानकहतकविस्वर्गकहंश्रीहरपदनिर्वान॥ वानकहावैवलितनयविसखअदैपुनिवान॥ अथवरुननाम॥ वरुनकहतकविनीरकोवरुनस्यारकोनाम॥ वरुननंदकोखोजवकेसेध्यायेश्याम॥ अथगोत्रनाम॥ गोत्रनामकोक

हृतहैंगोत्रसैलसुनिश्रंत॥गोत्रवंससोधनजहाँगोविंदगुनग
नसंत॥अथतनुनाम॥तनुसरीरविस्तारतनुतनुसूक्ष्मतनुता
त॥तनुविरलोकोऊजगतमेंजानैरसकीबात॥अथवालना
म॥वालसिरोरुहवालसिसुमूककहावैवाल॥अक्षसोईहै
जगतमेभजैजोबालगोपाल॥अथजालनाम॥जालभरो॰
खाजालगनजालदंभअरुमंद॥जालभगलविद्याजगतेंद॰
रिविभूलिजनिनंद॥अथकालनाम॥कालअसितपुनिकालव
यधर्मराजपुनिकाल॥कालव्यालकोकालहरमोहनमदनगो
पाल॥अथतालनाम॥तालतालहरितालपुनिहिभुजस्काल
नितालं॥तालवृक्षफलखायखरहत्योजोनन्दकोलाल॥
अथव्यालनाम॥व्यालक्रूरखरव्यालगजवासरश्रंतजोव्या
ल॥व्यालसर्पसिरचढिनचेनठवरवपुनंदलाल॥अथज
लजनाम॥जलजमीनमोतीजलजजलजसंखअरुचंद॥
जलजकमलसुफीरावतेव्रजआवतनंदनंद॥अथतमनाम॥
तमतामसश्रृंगाररसतमजोतिमिरतमक्रोध॥तामसज्ञा
नकोहरहुहरिउरधरदीपप्रबोध॥अथगुननाम॥गुनराज
सगुनसूत्रपुनिगुनकुदंडकोजेह॥गुनचरित्रगोविंदकेगाव
हुहियभरिनेह॥अथअविनाम॥अविपरपतअविसेषपुनि
अविसविताकोनाम॥अविरक्षकसवजगतकोएकैसुंदर
स्याम॥अथवननाम॥वनपानीकोकहतहैवनवारिदकोना
म॥वनकाननतेसुरभिसंगवनिआवतघनस्याम॥अथघन
नाम॥घनदृढघनविस्तारपुनिघनजेहिगढवलोहार॥घन
अंबुदघनसघनघनरुचिघननंदकुमार॥अथवर्ननाम॥व
र्नअस्तुतिअक्षरवरनहिजावरनहैचारि॥वरनअरुनसितपी
तहैऔरन एकमुरारि॥अथपोतनाम॥पोतकहावैनिप
टसिसुपोतजोपात्रअनूप॥पोतनावजलजगविषयकृष्णहि
नामस्वरूप॥अथवुधनाम॥वुधपंडितकोकहतहैवुधस
सिसूनवखान॥वुधहरिकोअवतारएकवुधभयोजेहिकान

अथअनंतनाम॥ गगनअनंतहिकहतवुधहरीअनंतअ
नेक॥ सेषअनंतहिकहतहैंअरुअनंतप्रभुएक॥ अथ
छपनाम॥ छपविनासकोकहतहैंछयकहियेछयरोग॥
छयपरलैमोंहरिविषैलीनहोतसबलोग॥ अथराजीव॰
नाम॥ राजिवससिराजिवकमलराजिवमुक्तामीन॥ राजिव
नाभिगोविंदकीजहंविधिसेअलिलीन॥ अथलोकनाम॥
लोकव्याकरनलोकजनलोकदेहरसमूल॥ तीनलोकसुतउ
दरिलखिरहियेसोमतिभूल॥ अथसुक्रनाम॥ सुक्रवी॰
जैअरुअग्निपुनिसुक्रजेठकोमास॥ सुक्रअजहुवामनहि
मतिबलिहितभरतउसास॥ अथखगनाम॥ खगरविखग॰
ससिखगपवनखगअंवुदखगदेव॥ खगचिहंगहरिसु
तरुहिभजितजिजगसमसेव॥ अथकलापनाम॥ गुनकला
पतूनीरपुनिअभरनआहिकलाप॥ वरहीचंदकलापपुनि
हरिभजुनकरकलाप॥ अथब्रह्मनाम॥ ब्रह्मब्रह्मकुलब्र
ह्महविप्रब्रह्मवेदअरुजीय॥ ब्रह्मनंदकेसदनमेंजाहिनचाव
ततीय॥ अथउडनाम॥ उडविहंगउडनखतगनकेवर्तन
उडआहि॥ उडपचंदनवकाउडपउडपगरुडवलवाहि॥
अथमंदनाम॥ मंदसनीचरमंदखलमंदअल्पअघमंद॥
मंदमूढनरकोगनतजेनभजेनंदनंद॥ अथवारननाम॥ वा
रनकहियेवरजिवोवारनपुनिसन्नाह॥ वारनगजहरिउरध
र्यो आनिगहयोजवग्राह॥ अथसंदननाम॥ संदनजल॰
केंहकहतकविसंदनचित्ततरंग॥ संदनरथचढिरुकमिनी
चलिआईहरिसंग॥ अथपंथीनाम॥ पंथीससिपंथीमदन
पंथीपवनप्रचंड॥ पंथीबहुरोराहुहैहरिकीन्होविवखंड
॥ अथकोसिकनाम॥ कोसिकगुगुलइन्द्रपुनिकोसिकउल
कानाम॥ कोसिकविश्वामित्रपुनिजांचेसुंदरस्याम॥ अथ
पुष्करनाम॥ पुष्करजलपुष्करगगनपुष्करसुंडगयंद॥ पु
ष्करतीरथयापहरपुष्करनयनगोविंद॥ अथअंबरनाम॥

अंबर आव्रत कोक हत अंबर गगन कहाय॥ अंबर पीत सो श्याम तन दामिन रही लोभाय॥ अथ संबर नाम॥ संबर जल संबर असुर संबर सैल अनूप॥ संबर बांधे गांठि गहि कृष्ण नाम सुखरूप॥ अथ कंबल नाम॥ कंबल गोगल तन कहत कंबल जल परवाह॥ कंबल धेनु चरावत औ द्विजो जग के नाह॥ अथ नग नाम॥ नग कहिये नग द्रुम नगर त्तन नग कहिये पुनि धाम॥ नग गिरजा के कान्ह को नागर गिरधर नाम॥ अथ नाग नाम॥ नाग पुत्र औ नाग गज नाग दुष्ट नर वाम॥ नाग सर्प संसार को सिद्ध मंत्र हर नाम॥ अथ कर्न नाम॥ कर्न कहावै रविन्तन पकर्न कहत पुनि कान॥ कर्ना वजे हि खेइ ये कर्नधार भगवान॥ अथ द्विज नाम॥ द्विज पक्षी को कहत कवि द्विज कहिये पुनि हंस॥ तीन वरन द्विज जानिये चौथो है परमहंस॥ अथ शिव नाम॥ शिव शंकर शिव ललित पुनि कृष्ण सदाशिव सोय॥ शिव सुसील कल्यान पुनि श्रेष्ट पुरुष शिव होय॥ अथ विरोचन नाम॥ वन्हि विरोचन सूर्य पुनि चंद विरोचन रात॥ है स विरोचन धन्य सो है जाके बलसे तात॥ अथ बलि नाम॥ बलि हरि बलि जो जरीब वलि वलि भोजन वलि भाग॥ वलि राजा को जाउ वलि जाहि यो हरि अनुराग॥ अथ वृक नाम॥ वृक पावक को कहत कवि वृक भेडहा को नाम॥ वृक दानव दले देव शिव राखे सुदर स्याम॥ अथ रज नाम॥ रज राजस अरु तेज रज रज युवती को होइ॥ रज धूली रज पाप को हरि निर्मल जल धोइ॥ अथ कुस नाम॥ कुस सीता सुत दर्भ कुस कुस कहिये पुनि नीर॥ कुस दानव दल हारका तहां बसे बलवीर॥ अथ कंबु भवन नाम॥ कंबु संख औ कंबु गल कंबु इष्ट को नाम॥ भवन गगन औ भवन जल त्रिभुवन नायक स्याम॥ अथ कूट नाम॥ कूट वहुत औ कूट गिर अहरनि कूट कहंत॥ कूट कपट को निपट तजि भजिले मन भगवंत॥ अथ खर नाम॥ खर राक्षस खर सान खर खर तीक्षण को नाम॥ खरग रदभ त्तन ते अधिक जे न भजे श्रीराम॥

अथकुजनाम॥ कुजमंगलकोकहतकविकुजअंगारको॰ नाम॥ कुजभौमासुरअसुरकोजायहत्योघनश्याम॥ अथ हरनीनाम॥ हरनीव्रतमाइेमकोहरनीमृगकीतीय॥ हर नीयूथीजासुकीफूलमालहरिहीय॥ अथधात्रीनाम॥ धा त्रीकहियेआवलाधात्रीगायबखान॥ धात्रीधरनीसीसप रसोहततिलपरमान॥ अथसिंहनाम॥ सिंहसूरकोकह तुहैंबहुरिसिंहकोसिंह॥ सिंहपौरमेदैत्यहतिसिंहनादनर सिंह॥ अथ शिवानाम॥ शिवासंभुकीसुंदरीशिवास्या॰ कीबाम॥ शिवाहड़जेहिरोगहरइमिअघहरहरनाम॥ अ थरसनानाम॥ रसनाकांचीकहतकविरसनाबहुरोदाम॥ र सनाजिव्हासुबसहैकोनलेतहरनाम॥ अथरंभानाम॥ रं भाकहियेअपसरारंभाकदलीनाम॥ रंभागोकुलगायधु॰ निजेहिमोहेघनस्याम॥ अथमायानाम॥ मायाछलमाया दयामायानेहकहंत॥ मायामोहनलालकीजेहिमोहेसब संत॥ अथइलानाम॥ इलामहीबुधितीयइलाउमाइला॰ अभिराम॥ इलासारदामातुमोहिरतिदीजेहरिनाम॥ अथ जोतिनाम॥ जोतिजोन्हाईजोतिदुतिजोतिनेत्रअरुआगि॥ जोहिब्रह्मसोइनंदग्रहमचलतहैदधिलागि॥ अथसुमना नाम॥ सुमनाकहियेमालतीसुमनामुदितातीय॥ सुमनार तिसोस्यामसोंकरिलेलंपटजीय॥ अथइड़ानाम॥ इड़ाब हुतनभदेवताइड़ाभूमिअभिराम॥ इड़ाअंबिकामातुमो हिरतिदीजेहरनाम॥ अथनिसानाम॥ निसाजामिनीकोक हतनिसाहरिद्रानाम॥ गंगासुतकोनसायहभजियेसुंदर स्याम॥ अथअजानाम॥ अजाछागमायाअजाचतुराननसु खधाम॥ गंगासुतवेदिब्रह्मकोनिसदिनकरतप्रनाम॥ अ थविधिनाम॥ विधिविधाविधिदेवपुनिविधिकहियेजोविधान विधिकोविदजोहरकरीसोईविधिहैपरमान॥ अथजिन्हना म॥ जिन्हअलसकरबलितनरजिन्हकहावैमूढ़॥ जिन्हकप

टतजिहरभजोघटघटमगटतबूढ॥ अथहस्तनाम॥हस्त कहतगजसुंडकोहस्तनछत्रसुभाय॥ हस्तहाथतेडारुज निनरहीरातनपाय॥ अथकृतांतनाम॥ आवतसरकृ- तांतसमपुनिकृतांतसिद्धांत॥ जमकृतांतकेत्रासतेत्रात कमलाकांत॥ अथमित्रनाम॥ मित्रभानुकोकहतकवि मित्रअभिकोनाम॥ मित्रमीतसबजगतकोएकैसुंदर स्याम॥ अथसारंगनाम॥ रविससिहयगजमगनगिरकेह रिकीरकुरंग॥ चातिकदीपकअलिधनुषरागछुपुनिसार ग॥ वनितनवसनपवनतमघनतडितासभओज॥ पावक अनधनुधनकनिसिनामश्यामउरोज॥ पंचमहिजविषवित- नतनुवनवसंतछविचीर॥ येसारंगविरंगसबपरमरंगरघु बीर॥ सारंगवीनहिकहतकविकटिनीपुनिसारंग॥ सारंग कहतसोहावनोनैनकमलसारंग॥ अथहरिननाम॥ इन्द्र चन्द्रअरविंदअलिकपिकेहरकीकान॥ कंचनकामकुरं गघनसकुमंडननभभान॥ पानीपावकपवनपयगिरगज नागनरिन्द॥ येहरिइनकेमुकुटमनिहरिइस्वरगोविंद॥ अथध्रुवनाम॥ ध्रुवनिश्चलध्रुवयोगपुनिध्रुवभूपदध्रु- वताल॥ ध्रुवतालजिमतेअटलगुनहिजेगुनगोपाल॥ अ थसुमननाम॥ सुमनससुरसुमनसपुहुपसुमनसबहुरिव- संत॥ सुमनसतेजेहिमनवसैकोमलकमलाकंत॥ अथवि टपनाम॥ विटपश्रृंग पल्लवविटपविटपकहतविस्तार॥ विटपरुक्षकीडारधरिठाढेनंदकुमार॥ अथदाननाम॥ दा नहिजनकोदीजियेगजमदकहियेदान॥ दानसांवरोलेति बलिगोपिनप्रेमनिदान॥ अथरसनाम॥ रसनवरसरसत्र तअमृतरसविरसरसनीर॥ रससबैसहैप्रेमरसजाकेवस बलवीर॥ इतिश्रीगंगासुतकृतकाव्यसंग्रहपंचांगद्वितीय- अंगवर्णमालासमाप्तम्॥ ॥ ॥ ७ ॥ ॥

॥अथपिंगल॥ अवप्रथम पिंगलमेलघुगुरुकाजानना जरूरहै इसकारनलघुगुरुलिखतेहैं॥ दोहा॥संयोगीके आदिजोदीर्घदुमात्रि कहोइ॥ मिश्रितविसर्गअनुसारको गुरुआपतसबकोइ॥ इनअक्षरोंकोगुरुकहतेहै औरजोअक्षरइनसेपरेहै उनकोलघुकहतेहै॥अथगनादिस्वरूपवर्णन॥ दोहा॥तीनौगुरुहै मगनमेनगनतीनलघुमान॥आदिगुरुसोभगनहैयगनआदिलघुजान॥ जगनमध्यगुरुजानियेरगनमध्यलघुहोइ॥सगनअंतगुरुहोयजो तगन अंत लघुसोइ॥वार्तिक॥ गनतो आठप्रकारके है सोगनचारहै औअगनचारहैमगन। नगन॥ भगन॥ यगन॥ येचारौगन है औजगन॥ रगन॥ सगन॥ तगन॥ येचारौ अगनहै अबयहजानाचाहिये किगनागन केस्वरूपक्याहैतीनगुरुमगन॥ औतीनलघुनगन आदिगुरुभगन॥ आदिलघु यगन॥ मध्यगुरुजगन॥ मध्यलघुरगन॥ अंतगुरुसगन अंतलघुतगन॥ औयेआठौगनागनतीनतीनअक्षरकेहै औयेहीतीनअक्षरोंसेछंदमेगनागनकाविचारकीयाजाताहै॥ अथछंदोंभेदवरनन॥ सोचारगनसुभहै औचार असुभहै॥ मगन॥ नगन॥ भगन॥ यगन॥ इसुभ॥ अथ असुभ॥ जगन॥ रगन॥ सगन॥ तगन॥ अथगनागनदेवतावरनन ॥ दोहा॥ महीदेवतामगनकोनागनगनकोजान ॥नीरनाथहैयगनकोचंदभगनकोमान॥ जगनरगनको अग्निरविकवियोकरतप्रकास॥ पवनदेवतासगनको स्वामीतगनअकास॥ अथगनागनफलवरनन॥ दोहा॥ महिलछमीपुनिसर्पबुद्धिससियशदाताहोय॥ आयुशदातानीरको असवरनतसबकोय॥ अग्निदाहकरुरोगरविकालविदेसकज़ान॥ गंगासुतनभसून्यहैकविजनकरतबखान॥ इतिफल॥ अथसंज्ञा॥ महीसर्पपुनिमित्रहै यशआयूदैदास॥ अरुचारौयेसत्रुहैकविजनकरतप्रका

स॥ इतिगनागन॥ अथछंदोभेदवरनन॥ सोछंदद्वैप्रकार केहैं एकवरनिकदूसरामात्रिकजिनकेचरनकीगिनतीवरनसेहोयसोवरनिकऔजिनकीगिनतीमात्रासेहोयसोमात्रिकपरयेसंज्ञाहमनहीलिखसकतेकिमात्रिककेतनेप्रकारकेहैंऔवरनिककेतनेप्रकारकेहैं इसकारनसेपांचअक्षरसेलेके इकीसअक्षरतककेसोलहछंदवरनिकलिखदेतेहैं अथअक्षरपंक्ती॥ जहांपहिलाऔचौथाऔपांचवांअक्षरगुरुहोयसोअक्षरपंक्तीजानौ। अथशसिवदनाछंद यहछेअक्षरकाहोताहै औरदूसरा औपांचवांऔछठवां अक्षर गुरुहोताहै सोससिवदनाछंदकहाजाताहै॥ अथमदलेखाछंद॥ जहांपदमेंसातअक्षरहोंयऔतृर्यचतुर्थपंचमअक्षरलघुहोयऔरसबगुरुसोमदलेखा॥ अथमानवकाकीडछंद॥ जहांपदआठअक्षरकाहोयऔर पहिलाचौथापांचवांआठवांअक्षरअंतकागुरुहोयसोमानवकाकीडछंदजानौ॥ अथमनिबंध छंद॥ जहांपदनवअक्षरकाहोयऔपहिलाचौथापांचवांछठवांअक्षरअंतकागुरुहोयनववांअक्षरअंतकागुरुहोय=औविश्रामपांचचारपरहोयसोमनिबंधछंदजानौ॥ अथचंपकमालाछंद॥ जहांपददसअक्षरकाहोयऔपहिलाचौथापांचवांछठवांनवांदसवांयेछअक्षरगुरुहोयऔविश्रामपांचपांचअक्षरपरहोयसोचंपकमालाछंदजानौ॥ अथशालनीछंद॥ जहांपदग्याराअक्षरकाहोयऔपहिलादूसरातीसराचौथादसवांग्यारहवांअक्षरगुरुहोयऔ विश्रामचारऔसातअक्षरपरहोयसोशालनीछंदजानौ॥ अथतोटकछंद॥ जहांपदबारहअक्षरकाहोयऔसातवांदसवांअक्षरलघुहोयऔरसबअक्षरगुरुहोयऔविश्रामआठचारअक्षरपरहोयसोतोटकछंदजानौ॥ अथभावतीछंद॥ जहांपदतेराअक्षरकाहोयऔपहिलादूसराचौथानवांग्यारहवांअक्षरगुरुहोयऔविश्रामतीनतीन अक्षरपरहोयसोभावतीछंदजा

नौ ॥ अथवसंततिलकाछंद ॥ जहांपद चौदाअक्षरकाहोय औपहिलादूसराचौथाआठवांग्यारहवांतेरहवांचौदहवांअ क्षरगुरुहोय औ विश्रामसातसात अक्षरपरहोयसोवसंत छंदजानौ ॥ अथमालिनीछंद ॥ जहांपदपंद्राअक्षरकाहोय औसातवांआठवांग्यारहवांबारहा तेरहाचौदहांअक्षरगु रुहोय औआठसातपरविश्रामहोयसोमालिनीछंदजानौ ॥ अथहरनीछंद ॥ जहांपदमेसतराअक्षरहोय औछटवांसा तवांआठवांनववांदसवांबारहांपंद्रहांसत्रहांअक्षरगुरुहोयऔर विश्रामचारछसातअक्षरपरहोयसोहरनीछंदजानौ ॥ अ थसारदूलविक्रीडितछंद ॥ जहांपदउन्नीसअक्षरकाहोय औपहिलादूसरातीसराछटवांआठवांबारहांतेरहांचौद हांसोलहांसतरहांउन्नीसवांअक्षरगुरुहोय औविश्रामबा रासातअक्षरपरहोयसोविक्रीडितछंदजानौ ॥ अथस्रग्धरा छंद ॥ जहांपदइक्कीसअक्षरकाहोयऔपहिलादूसराती सराचौथाछठांसातवां चौदहांपंद्रहांसत्रहांअठारहांबीस वांइक्कीसवांअक्षरगुरुहोयऔर विश्रामसातसातअक्षरपर होयसोस्रग्धराछंदजानौ ॥ इतिवरनिकछंद ॥ अथमात्रिक अथआर्याछंद ॥ जिसकेपहिलेचरनमेबारामात्राहोयऔदूसरेमेअठारा औतीसरेमेअठारा औतीसरेमेबारा औचौथेमेपंद्रामात्राहोय सोआर्याछंदजानौ ॥ अथगीतकाछंद ॥ जिसकेपहिलेचर नमेबारादूसरेमेपंद्रातीसरेमेबाराचौथेमेपंद्रामात्राहोयसो गीतकाछंदजानौ ॥ अथबार्तिक ॥ हमनेजोयेछंदलिखेहै उसकाअभिप्राययहहैकिजोछंदइतनेअक्षरकेआवेंगेसो इसी धुनिसेपढेजायगे ॥ ॥ इतिश्रीगंगासुतकृतकाव्यसं ग्रहपंचांगतृतीयअंगपिंगलसमाप्तम् ॥ अथकाव्यभूषन प्रारंभः ॥ केसवदासजीनेकविप्रियामेऐसालिखाहै ॥ दो हा ॥ राजेनरंचकदोषयुतकविताबनितामित्त ॥ बुंदकहा लापरतहीगंगाजलअपवित्त ॥ इसवास्तेहमकोपहिलेलि

खनादूषनकाव्यकाअवस्यहुआ सोग्रंथका व्यमेंपांचदू षनयहहै अंधवधिरपंगुनग्नमृतक अंध वहजोपंथविरोधीहोयऔस ब्दवधिरऔछंदविरोधीपंगुभूषनहीननग्नअर्थहीनमृत क॥अथअंधकोउदाहरनसवैया॥कोमलकंजसेफूलिर हेकुचरेषतहीपतिचंदविमोहे॥वानरसेचलचारुचिरोच नकोएरचेरुचिरोचनकोहे॥माषनसोमधुरोअधरामृत केसवकोउपमाकहटोहे॥ठाढीहेकामिनदामिनसीमृग भामिनसीगजगामिनसोहे॥ अथवधिरकोदाहरनसवै= या॥सिद्धिसिरोमनिसंकरुसृष्टिसंघारतसाधुसमूहभरी है॥सुंदरमूरतआतमभूतकीजारिघरीकमेंछारकरीहे॥ सुभ्रविरूपविलोचनसोंमतिकेसवराइकेध्यानअरीहे॥ वंदतदेवअदेवसवेमुनिगोत्रसुताअरधंगधरीहे॥अथ छंदोभंगउदाहरन॥दोहा॥तौलततूलरहेनजों कनकतु लातिलआधु॥त्योहीछंदोंभंगकोसहिनसकेश्रुतिसाधु॥ अथनगनकोउदाहरन॥सवैया॥नेरितनीदकटोरिकपो लनिजोरिरहेकरत्योनरहोगी॥पानरवाइसुधाधरपान कैपाइगहेतसहोनगहोगी॥ केसवचूकसवैसहिहोमु षचूमिचलेसुइत्तौनसहोगी॥कैमुषचूमनदेफिरिमोहिकि आपनीधाइसोजायकहोगी॥ अथपंगुउदाहरन॥सवैया धीरजमोचनलोचनलोलअलोकतलोककीलीकतछूटी॥ फूटिगयेश्रुतिग्यानकेकेसवआंषिअनेकविवेककीफूटी॥ छोडिदईसरितासुरकाममनोरथकेरथकेगतिपूटी॥त्यो नकरेकरतारतवारकज्योचितयोउहिवारवधूटी॥अथ मृतकछंदउदाहरनसवैया ॥ कीलकमालकलालकराल विसालविसालनिचालचलीहे॥ हालविहालनितालतमा लप्रवालकवालकवाललली हे॥ लोलविलोलकलोलअ मोलककोलकमोलकलोलकलीहे॥वोलनिचालकपोल कलोलनिठोलनिगोलगलोलगलीहे॥अथहीनरसवरनने

हीनरसउसकोकहतहैंकिजहांएकरसमेंदूसरारसदरसैजे सेश्रृंगारकेवरननमेंकरुनादरसैसोरसनवहै॥ अथरसव रनन॥ दोहा॥ प्रथमककहतश्रृंगारपुनिदूजोरसहैहास॥ती जोकरुनाकोकहतचौथोरुद्रप्रकास॥ वीररुद्रमुखलेहु गनिषष्ठभयानकजान॥ अद्भुतसागरसोगनौविभत्सनस् प्रमान॥सातसोजानहुखंडहैयेहीनवरसजान॥ गंगासुत· योंकहेगनिजसकछुकाव्यप्रमान॥ अथश्रृंगाररसकोउ· दाहरन॥ कवित्त॥ कोमलताकंजतेगुलाबतेसुगंधलैकेचं द्रसोंप्रकासलैकेउदितउजेरोहै॥ रूपरतिआनसोचातुरीसु जानसोनीरलैनिवानसोंकौतुकनिवेरोहै॥ ठाकुरविचारि कैबनायोविधिकारीगररचनानिहारिकान्हहोतचितचेरोहै ॥सोनेसोसुरंगलैकेसवादलैसुधासोंवसुधासोसुषलूटकैबं नायोमुषतेरोहै॥ अथहास्यरसकोउदाहरन॥ कवित॥ हं सिहंसिरहंसिरहंसिपूछैब्रजबालासबकहोकहाऊधोजहां उनकोसंकेतहै॥ तुमतोहौसखाहाहाहमसोसाचीकहौ कामकेउमगस्यामकैसेरसलेतुहै॥ कैसेकैदंपतिविराजत परसपरचेरीनिजरानीकेरसिकरसहेतुहै॥ कैसकेकूबरीको पीठिबोवनतआलीगढाखोददेतकीधौंखारकाटिदेतहै॥ अथकरुनारसकोउदाहरन॥ कवित्त॥ आसुनअन्हायहा यहायकैकहतसबऔधपुरवासीकैकहायोदुष्यदाहिये ॥ कहैपदमाकरजलूसयुवराजीकोसोअसोकोधनीहैजाय जाकेसीसवाहिये॥ सुतकोपयानदसरथजोतजेपरानबढ योसोकसिंधुसोकहालोंअवगाहिये॥ मूढमंथराकेकहेव नकोजोभेजेरामअरेसीयहबातकेकइकोतोनचाहिये॥ अथरुद्ररसउदाहरन॥ छप्पै॥ करिआदित्यअदिष्टनष्टज मकरौंअष्टवसु॥ रुद्रनवोरिसमुद्रकरौंगंधर्वसर्वपसु॥ बलि तअवेरकुबेरवलिहिगहिदेउंइंद्रअब॥ विद्याधरनअविद करौंविनसिद्धिसिद्धिसब॥ निजहोहिदासिदितिकीअदितिअ

निलअनलमिटिजाहिंजल॥सुनुसूरजसूरजउवतहीकरी असुरसंसारवल॥ अथवीररसकोउदाहरन॥कवित्त॥सो हेअन्नओढे जोनछ्रोडैसीमसंगकीलगरलंगूरउच्चओजके अतंकामे॥कहेपदुमाकरत्योंहुंकरतफुंकरतफैलतफलांक फालबांधतफलंकामे॥आगेरघुवीरकेसमीरकेतनैकेसंग तारिदेतडाकतडातडकेतमकामें॥संकदेदसाननकोहकादेसो वंकावीडंकादपविजयकोकपिकूदिपडेलंकामे॥सोवीररस काउदाहरनतोहोचुकापरंतुवीरचारप्रकारकेहै॥युद्धवीरद यावीर दानवीर धर्मवीर॥जैसेरनवीररनमेपीठनहीदेतेतैसे येउ दानइत्यादिकसेपीठनहीदेते॥अथभयानकरसकोउ दाहरन॥कवित॥पाहीभटमानीकेमहावलठानीरारिसोद् दुर्जोधनकेयोधनकोमूलहै॥कालहूकरालहूकोसन्मुखन आयेगनेकौरवनकेसंगसोइरनअनकूलहै॥तोषनिधिमनो जगंगासुतसोंवरैयोअरेतुमहोकनूकाबहुअनलकोतूल है॥राजाकहतसबभैयनसोहाथजोरेभीषमभयानकयहु भूखोसारदूलहै॥अथविभत्सरसकोउदाहरन॥छप्पै॥पढ तमंत्रअरुजंत्रअंत्रलीलतइमिझुग्गिन॥मनहुगिलतमदम त्तगरुडतियअरुनउरुग्गिन॥हरवरातहरखातप्रथमपर सतपलपगत॥जहप्रतापजितजंगरंगअंगउमंगत॥जहप दुमाकरउतपतिअतिरनरनकत्तनहिषवहत॥चषचकित चितचरवीनचुभिचकचकायचडीरहत॥अथअदभुतरस ॥अथउदाहरन॥कवित्त॥रासआरंभभयेबहुस्यामसोंहै हैगोपिनवीचविराजैं॥मध्यमेराधिकानंदतनयऊविदेष तदामिनवारिदलाजे॥यहभेदनजानेयोकोउसखीकरसोंक रजोरकैमंडलसाजे॥धन्यगोपालकहैहरखेसुरसुंदरीसंग विमाननराजै॥ अथसांतरस उदाहरन कवित्त॥ वैठिसदा सतसंगहिमेंविषमानिविषयरसरीतसदांही॥त्योंपदुमाक रझूंठजितोजगजानिसोग्यानदिकेअवगाही॥नाककीनो

कामंदीठदियोनितचाहैनचीजकहूंचितचाही॥संततसंत सिरोमनिहैधनहैधनवैजनवेपरवाही॥इतिनवरस॥अब येजान्नाउचितहैकिइनरसोंकोथाईकौनहकिजिनकेवरनन मेरसकाभावजानपरताहेकियहफलानारसहैजैसेभ्रृंगाररसकाथाईभ्रृंगारहैअरुहासकाथाईहास्यहैअरुकरुनारसकाथाईकरुनाअरुरौद्रकाथाईक्रोधअरुवीरकाथाईयुद्धअरुभयानककाथाईभयअरुविभत्सकाथाईगिलानदुर्गन्ध॥अद्भुतकाथाईआश्चर्य॥सांतकाथाईसतसंग तपस्या॥इनथाइनमेभेदहोयसोहीनरसजानो॥उदाहरन कवित्त॥दैदधिदीनोउधारहैकेसवदानकहाअरुमोललैषे है॥दीन्हेविनाजुगइजुगईहोगईनगईघरहीफिरजेहो॥ गोहितुवैरुकियोहितहुतौकववैरुकियोवरनीकीहैरैहो॥वैरुकैगोरसवेचहुगीअहोवेचौनवेचौतौठारिनदैहो॥अथजातिभंग॥जहांऔरचरनकावरनऔरचरनसेमिलजाइसोजातभंग॥उदाहरन॥दोहा॥हरिहरिकेसवमदनमोहनघन- स्यामसुजान॥ज्यांवृजवासीहरिकानाथरटतदिनमान॥अ प्यव्यर्थ॥जहांकवितकेप्रवंधमेअर्थकोविरोधहोयऔपूरवसेपरनमिलैसोव्यर्थ॥उदाहरन॥छंदमरहठा॥सबसत्रु संघारहुजीजनिमारहुसजिजोधाउमराउ॥वहुवसुमतिलीजे मोमतुकीजेदीजैअपनोदाउ॥कोरिपुतेरोसबजगहैरोतुम कहियतअतिसाधु॥कहुदेवमगावहुभूषभगावहुहोपुनि धनीअगाधु॥अथअपारथकोउदाहरन॥जिसकाअर्थन जानाजाय॥दोहा॥पीयेलेतनरसिंधुकोहैअतिसज्वरदेह ॥औरावतहरिभावतोदेखोगरजतमेह॥अथक्रमहीन॥ जोक्रमपहिलेवाधेऔनिर्वाहनवनेसोक्रमहीन॥उदाहरन॥दोहा॥जगकीरचनाकहिकोनकरीकेहिरापनकीजियपैजधरी॥अतिलोपकेकौनसंघारकरैहरिजूहरिजूविधिवुधिहरे॥अथकरनकटुवरनन॥जोसुनैयांकोअच्छीन

भातुमदेसोकारनकटु ॥ उदाहरन ॥ दोहा ॥ बारनुबन्योबनाव तनसुबरनबेलिविसाल ॥ चढियेराजमगाइकैमानोराज लकाल ॥ अथपुनरुक्तिलक्षन ॥ जोयेकबारकहिकेफिरिब हीकहैसोपुनरुक्ति ॥ उदाहरन ॥ नहीलिखाइसवास्तेकिस बजानतेहै ॥ अथदेसविरोधी ॥ औरदेशकीवस्तुओरदेशमे बरननकरेसोदेशविरोधीजेसेनर्मदामेंसालिकरामओगंड कीमेंमहादेव ॥ अथकालविरोधी ॥ जोओरकालकीवस्तु= ओरकालमेंबरननकरेसोकालविरोधी ॥ उदाहरन ॥ दोहा ॥ प्रफुलितनवनीरजरजनिदिनकुमदिनीविसाल ॥ कोकिल सरदमयूरमधुबरषामुदितमराल ॥ अथलोकविरोधी ॥ जो लोकोंसेविरुद्धहोसोलोकविरोधी ॥ उदाहरन ॥ दोहा ॥ थाई बीरसिंगारकेकरुनाघ्रनाप्रमान ॥ ताराअरुमंदोदरीकहतस तीनिसमान ॥ अथआगमविरोधी ॥ जोप्रबंधपहिलेबाधना हैसोपीछेसेबांधेसोआगमविरोधी ॥ उदाहरन ॥ दोहा ॥ पूजि येतीनौंबरनजगकरिविप्रनसोभेद ॥ पुनिलीबोउपवीतहम पढिलीजेसबवेद ॥ इतिद्वादसदोषसमाप्तम् ॥ अवयहजान्ना चाहियेकिकविलोगोंकाबरननकेप्रकारकाहैसोतीनप्रकार हैउत्तममध्यमअधम ॥ उत्तमदेवबरनन औमध्यममनुष्य बरनन औअधमदूषणबरनन ॥ सोरठा ॥ कविमतित्रिविध बखानसाचीबातजोबरनहीं ॥ झूठीबरनैबानिएकेबरनैने मके ॥ सांचीवहहैकिजेसेचंद्रयुतचांदनीओसूर्य्ययुतदिवस औझूठीवहजानोकीजहांछोटासरोबरननकरतेहैतहांहं सबरननकरतेहैपरंतुहंसकेवलमानसरोवरपररहतेहैय हीझूठहै तीसरानेमजेसेचंदनमलयागिरऔहेमगिरभो जपत्रचरनसेदेवबरननसिरसेमनुष्यबरननलज्जायुतकु लबधूनिर्लज्जगनिकाकुलटाकोअलज्जसलज्जनरतनारी मेला॰ चतुरगुनभूखदुगुनसाहसछगुनकामअष्टगुनको किलाकोबे॥ खोमधुमासमेंद्वितीयसुतकोदेखबरननक

रनायेनेमहैऔरस्त्रीकेशृंगारतोअनेकहैंपरंतुकविजनोंने नेमकरिकैषोड्सवरननकियेहैसोहमसोरहो पृथक्‌पृथक् वरननकरतेहैं प्रथम उपटना मंजन अमलपट जावक वे नीगूंधना अंगराग सोपांचप्रकारकाहै मांगमेसेंदुर माथे मेखौर गालपरतिलबनाना केसरअंगमेलगावना मेंहदी पगमेलगाना अंगमेभूषनसाजना फूलवेनीमेगूंधनाऔ रफूलोंकेगहनेपहिरना मुखवास मंजनदूसरीबार ताम्बू लखाना कज्जलनेत्रमेलगाना इतिकविनेम॥ अथअलं कारवरनन॥ दोहा॥ यदपिसुजातसुलक्षनीसुवरनसरससु वित्त॥भूषनविनुनविराजहीकवितावनितामित्त॥ दोहा॥ कविनकहेकवितानकेअलंकारदुइरूप॥एककहयेसाधा रनेंएकविसिष्टअनूप॥सोसाधारनअलंकारचारप्रकारहै एकवर्ण्य वर्ण दूसरातीसराभूषनचौथाराजश्रीभूषन॥अ वर्नाअलंकारसोसातप्रकारकाहै॥दोहा॥ सेतपीतकारोअ रुनधूमितनीलोवरन॥ मिश्रीतकेसवदासकहिसातभांतसु भकृन॥ अबयेजानाचाहियेकिऐसातोरंगोकीकविलोनें नेमकरकेकौनकौनचीजेंलिखाहै॥ अथसेतवरनन॥ की रतिहरिहयसरदकालकेघनचंदचांदनीजरामंदार हर हर गिर घृतदेवतासूर्य्य सुधासोधकपूरबलदेव बक हीराके वराकौडीजसकासकुंदकेचुली कुमुद हिमरेत भस्मकपा सचीनी हाड झरना चंवर चंदन हंस कमल छत्र सतयुग दूध संखमृनाल बुधसेष सिंधुउड सुकृति सुचि सतोगु न संतकेमन हांसरस सिंहसीप चूना अबरख फटिक ख रियाफेन उजियाला भृगुसुदरसन गंगा वरुन ऐरावत सु क्रनारदसारदपारद मोती रद ॥इतिसेत॥अथपीत॥ग रुडब्रह्मा शिवजटा दादुर हरदी हरताल दीपक चंपक वी ररस वृहस्पती महुआ कमल सुमेरु पृथिवी गोलोचन वानरकीपुतरी सुरपाल चक्रवाक गंधक गोमूत्र मनसिल

नूपरयुग पोखराज कोश पीताम्बर केसर कनक मैनाकी॥चोच चपला पीतर प्योरी पराग॥इतिपीत॥अथश्याम॥विन्ध्याचल तमाल आकास तरवार अर्जुन खंजन साप मोरकोकंठ सनी व्यास विसासी पाप राक्षस अगर लंगूरमुख मदिरा राहू रामचंद्र रुद्रास घनद्रौपदी सिंधु असुर तम चोर जामुन जमुना पानि तिल खलके मन कमल चोर भिल्लकरी वन नर्क मसी मृगमद कज्जल नीर मधुप निसा शृंगाररस काली कुत्सा कोल अपजस रीछ कलंक कलि लोचन पुतरी मारग किसान लोभ छोभ दुष मोह विरह कोकिल मक्खी लोहा कांच कीच कच काम मल काक केकी कुरूप कलह छुद्र छल॥ इतिस्याम॥ अथअरुन॥इन्दुवधू जुगनू मंगल केसर कुसुम बन्धूप मदिरा गज मुख रवि विंदु तांबा तक्षक रसना अधर नीचेकीपलक मुर्गाकीचोटी मानिक सारसको सिर सुकचोच वानर मुख कोकिल चकोर पिक पारावतके नखनैन चोच चरन कल हंसकेजपा अनार किंसुक असोक पावक पल्लव वाटिका रक्तचंदन रुद्रास छत्रिनकोधर्म महावर मजीठ गेरू संध्यासमयको आकास रुधिर ईंट इतिरक्तः॥ अथ धूम्र॥ काककंठ खर मूसा करभ कपोत धूम्र॥ इतिधूम्र॥ अथनील॥ दूब बांस कमल नलिन अनिल व्योम त्रिनवाल मरकतमनि हयसूरकेसेवार॥ इतिनीलः॥ अथमिश्रित॥ मिश्रितउसकोकहतेहैं जोदोरंगसे मिलायाजायकेवनायाजायजैसेस्यामपीत मिलकै हरितरंगवनजाताहै॥ इतिमिश्रित ॥इतिरंगसमाप्तः॥ अ वर्ण्यवर्णनंसम्पूर्ण॥ आवर्त कुटिल त्रिकोन तीक्ष्न गुरु कोमल कठिन निश्चल चंचल सुषद दुषद मंदगति सीतल तप्त क्रूरस्वर सुस्वर मधुर अवल बलिष्ट सत्य गूढ मंडल अगति सदागति सुरूप सुरस॥ यहवर्ण्यजोहमने लिखआयेसो सत्ताइसप्रकारके हैं।

अबयेजानाचाहियेकि एकएक प्रकारमेकवियोने कौनकौ नचीजकानेमकियाहै॥ अथसंपूर्णबरनन॥ कमलमुख- आरसी संतत प्रेम प्रकास॥ इतिसम्पूरन॥ अथमंडल॥ कुंडलमुद्रिका बनेठी चक्र आलवाल परिवेष रविमंड ल॥ अथआवर्तबरनन॥ चकई चक्र आतपत्र खरसान ॥अथकुटिलबरनन॥ अलक अलीक भृकुटी दुर्वचन- खोर कूची पलासकेफूल सुककीचोंच सर्प कटाक्ष धनुष बिजुरी कंकन भग॥ अथत्रिकोनबरनन॥ गाडी सिंघाडा पृ थ्वी अग्निकुंड हलवज्र शिवनेत्र॥ अथसुवृत्यबरनन॥ वेलगुच्छ वृषभकंध रथअंग कुंभी कुंभ कुच अंड मनिया गेंद कलस॥ अथतीक्ष्नबरनन॥ नख कटाक्ष सर दुर्वचन सेल॥ अथगुरुबरनन॥ कुचनितंब लाजरति॥ अथकोम लबरनन॥ पल्लव कुसुम दयालमन माखन मृनाल पाट- पामरी जीभपद प्रेम पुन्य॥ अथकठोरबरनन॥ कुच भु जमूल वज्रधातू हाड हीरा वैरीकोमन सूरकेतन सूम केमन काठकमठकीपीठ सूरवाचर्म मूढकोहठ दुर्जनदी ठ बिरहीकोमन॥ अथनिश्चलबरनन॥ सती सूर संतके मन धर्म अधर्मकानिमित्य॥ अथचंचलबरनन॥ तरल तुरंगकुरंग॥ वानरकेपानि लोभीकेमन सूरजन बालक काल कुलटाकोकटाक्ष औरमन स्वपनकीसंपत मीन- खंजन अलिगजस्रवन श्रीदामिनी पवन प्रवीन॥ अथ सुखदबरनन पंडित पुत्र पतिव्रतास्त्री विद्या निरोग्यता अभिलाषफल संपति मित्रकासंयोग दानमानध्यान- योगजपरागवाग घर सुंदरस्वरूप मुक्ती सोमसर्वज्ञता ॥अथदुखदबरनन॥ पापपराजै झूठ हठ सठता मूर्खमि त्र ब्राह्मनरोगी कुरूप असहन वेसील आधिव्याधि अप मान रिन परघरभोजनवास कन्यासंतत वृद्धता बरषा कालमेचांदनी सठसेवक कुस्वामी अडियलघोडा कुउ

रनिवास कुनारी परवस दरिद्रता अरि॥ अथमंदगतिव
रनन॥ कुलतियाहास विलास वुधकाम क्रोध मद मानस
नीचर गुरु सारस हंस गज तियगति॥ अथसीतलवरनन
॥ चंदन दाख कलिंद सुख मिश्रीमीत प्रियसंगम घनसा
र ससि कमल जल हिम॥ अथतप्तवरनन॥ रिपु प्रताप दु
र्वचन तप्त बिरह संताप सूरज अग्नी बिज्जुरी दुख तृष्णा
पाप विलाप॥ अथसुरूपवरनन॥ नलनलकूबर अस्वनी
कुमार प्रद्युमन मदन दमवंती सीता॥ अथकूरस्वरवरनन
झींगुर सांप उलूक अज महिखी सुअरकाल काक वक
हाथी खर स्वान॥ अथसुस्वरवरनन॥ कलरव केकी को
किला सुकसारी कलहंस॥ तंत्री कंठी मीठेस्वरकी दुंदुभी
वासुरी॥ अथमधुरवरनन॥ प्रियाके अधर सोमकर माख
न दाख वालवचन कवियुक्ति मंहुआ मिश्री दूधघृत श्रृं
गाररस ऊख मयूष पीयूष संचाईष्ट॥ अथअवलेवरनन॥
पंगु गुंग रोगी वनिक भीत अंध भूखा अनाथ अज्ञादबाल
क अवला॥ अथवलिष्टवरनन॥ पवन पवनपूत परमेश्व
रइन्द्र॥ काम भीम बाली वलदेवजी वलिप्रथुकाल सिंह
वाराह गयंद गुरु सेस सती गरुड वेद माता पिता अदि
ष्ट॥ अथअगतिवरनन॥ सिंधुगिर ताल तरु वापी कूप॥ अथ
सदागतिवरनन॥ नदी नद पंथ जग पवन॥ अथदानिवरनन
॥ गौरी गिरीस गणेश विधि गिरा चंद चिंतामनि कल्पवृक्ष
जगमाता जगदीस रामचंद हरिचंद नल परसराम दधीच
प्रथु वलि भीषम करन भोज विक्रम॥ इतिदानि॥ अथसत्य
मिथ्यावरनन॥ सत्यनारायन झूठसंसार॥ इतिकाव्यभूष
न॥ अथभूमिभूषनवरनन॥ सोभूमिभूषनतेरहहै॥ देश
नगर वन वाग गिरि आश्रम सरिता तालरवि ससि सागर
रितु काल॥ अथदेसवरनन॥ रत्न खानि पसु पक्षी व
सु वसन सुगंध नदी नगर गढ॥ अथनगरवरनन॥ खांई

कोट सहरपनाह अटा धजा बापी कूप तडाग बारिनारि सती असती नगर विभाग॥ अथवनवरननं॥ सुरभी औरवनकेजीवअनेक भूतप्रेत भय भिल्लनकेघर वल्ली विटप दावानल॥ अथगिरवरनन॥ तुंगशिखरदीरघ सिंह कंदरा खोहदरी धातु सुरनर औषदी झरना॥ अथआश्रमवरनन॥ होमकाधुंआ वेदध्वनि ब्रह्मविचार सिंघ मृगादिकोकाअविरोध विचरना मुनियोकेआश्रम॥ अथनदीवरनन॥ जल जलचर जलज जज्ञकुंड मुनिवास अस्नान दान येपावननदीवरनीजातीहै नीरकेबाग कगारा॥ अथबागवरनन॥ ललितलता तरुकुसुम कोकिल कलरवमोर भ्रमरोंकागूंजना॥ अथतालवरनन॥ लहर पक्षी सुरभी सीतल बयार पुष्प तमालादिअनेकवृक्ष जलकेपक्षी मत्स्यजलचर भ्रमरकोगूंजनोकमलपर॥ अथ समुद्रवरनन॥ ऊंचेतरंग गम्भीतो रत्न मोती मछली आदि अनेक जलचर गंगाकोसंगम नारायनजीकीसैनगिर वडवानल सर्प देवता अपसरा राक्षस वृक्ष ससिको देखिकेवढना मनुष्यजोटापूमेरहतेंहै विमान॥ अथ सूर्य्यउद्योतवरनन॥ अरुनता जलकीपवित्रता संख ध्वनि वेदध्वनि राहीगमन चकईमिलाप कमलकाफूलना कोंईकाकुम्हिलाना कुलटाकोदुख ताराऔचंद्रमाको सकुच चोरतमकानास॥ अथचंद्रउद्योतवरनन॥ चकवा कमल माननीनायकादिकोदुष विरहकीवृद्धी अंधकारकोनास कुमदिनी सिंधुचकोरकोसुख॥ अथषट्‌रितुवरनन॥ वसंत पुष्प भ्रमर कोकिल कलरव कलितवन कोमलपात सुरभी सीतलसमीर अथग्रीष्म॥ तप्तसमीर सरितातालकासूखना जीवकीअवलता रसालकाफलना॥ अथवर्षा॥ हंस वकपांत दादुर चातिक मोर केतकी कदम्ब कंजजलकीवर्षा दामिन घनघोर पवनकीझकोर

सरिताबाढ़िविरह पंथकोनसूझना इन्द्रधनु जुगनू ढावरपा
नी॥ अथसरद॥ निर्मलआकास चंद्रमाकोप्रकास कम
लकांसकाफूलना पंथीगमन नृपपयान पित्रपक्ष जलकी
निर्मलता॥ अथहेमंत॥ तेलतूल ताम्बूल तिय ताप धाम रा
तवडी दिनछोटा सीतकीवीसेषता कंपकपी॥ अथसिसि
र॥ सरसमन नाचना गाना खेलना गालीदेना॥ अथसर्वका
ल॥ लव निमेष परमान घड़ी पहर दिन मास वर्ष युग॥ इति
भूमिभूषनसमाप्तः॥ अथराजश्रीभूषनवरननं॥ राजा रानी रा
जसुत मोहित सैनापती दूत मंत्री मंत्र पयान गज हय सं
ग्राम आखेटन जलकेलु विरह स्वयंवर सूरता दान॥ अथ
राजवरनन॥ प्रजा प्रताप पुण्य प्रतिज्ञा प्रसिद्धिता सासन स
त्रुकोनास वल विवेक दंड अनुग्रह धीरता सत्य सूरता दान
उद्यम छमा कोस देस॥ अथरानीवरनन॥ सुंदरता पवि
त्रता सुरुची सलज सील सुबुद्धि पतिव्रता॥ अथराजकु
मारवरनन॥ विद्या विनोद सील आचार सुंदरता सूरता उ
दारता वल विभवं॥ अथप्रोहित॥ राजाकोहितू वेदयुत स
त्यसील आचार उपकारी ब्रह्मण्य पापरहित कोपरहित सु
मतिविचारी॥ अथसैनापती॥ स्वामीभगत परश्रमी पंडित
अभीत आलसरहित प्रियजन जसी संग्राममे अजीत॥ अ
थदूतवरनन॥ अपनेराजाकातेजवढावनेवाला रिपुकाक्षो
भदाई समइक अलोभ॥ अथमंत्री॥ राजनीतजनैया राज
रत सुचि सर्वज्ञ कुलीन छमी सूर जस सीलयुत मंत्रमेप्र
वीन॥ अथमंत्रवरनन॥ पंचांगतिथिवारनक्षत्रयोगकरन
षटगुन॥ संध्य विगरह यानि आसन दुविधभाव संश्रित
॥ चौदाविद्या॥ ब्रह्मग्यान रसाइन पौरना धनुषविद्या घो
ढासवारी पदुमेद-सत्रुसेमित्रकरायदेना काव्यसभाविचार
वेद समुद्रिक आचार अगम सास्त्र निगम॥ अथपयान॥ चमर पताका
छत्र रथ गज वाजि पैदल विमान शिविका दुंदुभी जलथल भूमिकंपन धूरका

उडुना।अथहय।तेजगति। चंचल सुखकासच्चा खेतसालहोत्रकेस
वलक्षनसोसंपन्नहोय॥अथगज॥मत्त विसाल चालमंद का
नचंचल मुक्तामान सूरसुंदर गरदनकोतह मस्तकऊंचा
रदविसाल महाउतकेबस॥अथसंग्राम॥सैनासनाह धूरि
काउडाना साहस सस्त्रकाप्रहार अंगभंगः सूर योधनेको
लडनो कमंध योगिनी रुद्रभूत लोहूकीनदी काक कंक शृ
गालादिभूमिकंपन॥अथसिकार॥जुर्रा बाजबहरी नीलव
स्त्र चीताकुत्ता जंगल बहेलिया बानर बाघ बाराह मृग मी
नापक्षीवनजंतु आदि बंधन बेधन बधन॥अथजलकेल॥
जलासय कमल सुभसोभा सेतवस्त्र मीनगति प्रियकोसंग
सुंदरभुवन॥अथविरहबरनन॥सोविरहचारप्रकारकाहै प्र
वास करुना मान पूर्वा अनुराग॥सोविरहमेयेसातबस्तुघट
तीवढतीहैं स्वांस चिंता रुदन येवढै सरीरकारंगबदलैगात
तप्तसीतलहोय भूषप्यासमुधिबुधि सुख निद्रा दुति येघ
टैऔसुखदवस्तुदुखदहोय॥अथस्वयंबर॥भूमिरचना रा
जनकोबलरूप गुन बंस रंगभूमि रक्षकरंगभूमिके बाला जय
माला॥इतिसामान्यअलंकारसमाप्तः॥अथविशिष्टअलंका
रबरननं॥ दोहा ॥ ॥ जातिसुभावविभावनाहेत विरोध
विसेष॥उतप्रेक्षाआक्षेपक्रम आसिषप्रियश्लेष॥अभिन्न
भिन्नउपमासहित अविरूधप्रतिनियमंत॥सूछमलेसनिद
रसनै अहंकाररसवंत।अन्यअर्थकेभावतें न्यासप्रयुक्तस
मान॥औरअयुक्तयुक्तासहितयुक्तायुक्तप्रमान॥अन्य
अर्थकेन्यासवितरेक अपन्हुतिउक्ति॥व्याजअसतुतिनिंदा
अमितप्रजायुक्तअयुक्त॥सहितसमाहितजमकहितवरनि
सुसिद्धसमीत॥केसवदासप्रकासवसकरूप्रसिद्धविपरीत॥
रूपकदीपमहेलिकापरव्रतउपमाचित्र॥भाषाजमकनिभूष
ननिभूषितकीजेमित्र॥अथजातिसुभावलछन॥ वार्तिक॥
जाकोजैसारूपगुनहोयवैसाहीबरननकरैसोजातिसुभाव॥

उदाहरन॥ दोहा॥ छत्रिनकेयेकामहै रनमेंदेयनपीठ॥ दान धर्ममेधीरता परनारीनहिदीठ॥ अथविभावनालछन॥ वार्तिक॥ जहाकारजबिनाकारनकेसिद्धहोयसोविभावना॥ उदाहरन॥ दोहा॥ विनापानमुखलालहैसोंधेविनतनवास॥ गंगासुतसोधन्यनररहतसदांतवपास॥ अथहेतलस्तन॥ सो दोप्रकारहै सभाव अभाव सभावउसकोकहतेहैकिजहां जैसाहेतहोयवैसेदरसैसोसभाव॥ उदाहरन॥ दोहा॥ करतमंदसवसोधकोतवसरीरकीवास॥ मुखसोभातेहोतहै भूमिलचंदअकास॥ अथअभावलस्तन॥ अभावउसकोकहतेहैकिजिसवस्तुकोचितनचहैसोईकरनापडैसोअभाव॥ उदाहरन॥ जंहरसमेकछुविरसहोपयहअभावप्रमान॥ राजदेनकहिदीनवनदसरथनृपजगजान॥ सभावअभावमिश्रितलस्तन॥ दोहा॥ जहांप्रथमरसमेविरसपुनिपाछेरसहोय॥ करतमानजिमपावदुखपुनिपाछेसुखहोय॥ अथविरोधलस्तन॥ जहावरनतमेंविरोधहोयओअर्थअविरोधहोय सोविरोध॥ पगुविनचढैपहाड परकरविनकमअपार॥ गंगासुतश्रीरामकीलीलाअपरम्पार॥ अथविसेखलस्तन॥ साधनजहाकारनसेविकलहोयओकारजसिद्धिदरसैसोविसेष॥ दोहा॥ साधनकारनसोविकलकारजहोयजोसिद्धि॥ निर्गुनकहसवरामको गुनअतिजगतप्रसिद्ध॥ अथउतप्रेक्षालस्तन॥ जहाओरवस्तुमेओरतर्कउपजैसोउतप्रेक्षा॥ दोहा॥ गोरेमुखपरतिलवन्योअरुसितलाकोदाग॥ मध्यदिवसको जलजज्यौंमधुकरपियतपराग॥ अथआछेपलस्तन॥ जहाकारजकेआरम्भमेकोईयुक्तिकरिकैवारनकरैसोआछेप॥ उदाहरन॥ जहाकारजकेआदिमेकरैकोईप्रतिखेद॥ जैसेब्रह्मविचारमेकहैपढोजनिवेद॥ सोअछेपआठप्रकारकाहै॥ दोहा धीरजप्रेमअधीरपुनिसंसयमरनअसीस॥ सिक्षावहुरिउपायसनिकहेसकलुकवीस॥ ॥ ॥ अथप्रेमआछेप॥ दोहा॥

जहाजनावतप्रेमके होयजोकारजवाद॥ चाहतचलनवि देसकोमैनतजोपलआध॥ इसीतरहजौनप्रकारसेआछे पकरिकैकारजमेमरनादिकजोदरसायसोई आछेपजानौ अथक्रमाअलंकार॥ जोक्रमवाधैउसकावहीक्रमरहै॥ जैसे धीगमंगनवीनगुनही॥ अथगननाअलंकारलसन॥ अथ एक १ सूर्य्यकेरथकोचक्र गनेसकोदांत सुक्रकीआंख आत्मा॥ अथदुइ २॥ नदीकेकूल रामकेसुत पसीकेपंख खड्गकीधार आंख अस्वनीकुमार दुजसंज्ञा भुजा पद॥ अथतृतीय ३॥ गंगाजीकीधारा मंदाकिनी भागीरथी अलकनंदा ताप भूतिक भवतिकदेहिक वेद श्याम यजुर रिगु पावक जठरानल दावानल वडवानल काल भूत भविष्यवर्त्तमान पुष्कर३॥ जठमेधक नीठ विक्रम ३॥ मन वच काय गुन ३॥ सत रज तम पुर ३॥ स्वर्गभू पाताल त्रिवेनी ग्रीवरेख त्रिसूल॥ त्रिवलीसंध्या॥ शिवनेत्र॥ कफवात॥ पित्त॥ अथचतुर्थ४॥ समुद्र आश्रम सन्यस्त वानप्रहस्त॥ ब्रह्मचर्य ग्रहस्त ब्रह्माकेमुख नारायनकीभुजा गुन४॥ साम दाम दंड भेद अहिरावतकेदंत हरिवाहन केपंख॥ विउरचना वेद सैनाचतुरंगिनी हयदल पयदल गजदल रथदल धनुष४॥ सारंग पिनाक गांडीव॥ इन्द्रधनु॥ युग वीथी कोचक चक्र संकट धनुष ४॥ अथपंचम॥५ पांडवपुत्र॥ इन्द्री ५॥ आंख कान नाक रसना॥ त्वचा कमल नाभी ह्रिदय कंठ भृकुटी महादेवजीकेमुख॥ संध्योजातक॥ वामदेव इसान अघोरत तपुरोख पंचवान सोवन मोहन संदीपन उन्मादक संतापन पुरानलक्षन स्वर्ग विसर्ग मन्न्यत वंस वंसानवंस पंचभूतआत्मा प्रान॥ अपान समान उदान व्यान पंचवर्गकवर्ग चवर्ग तवर्ग टवर्ग भवर्ग पंचतरु मंदार पारजात संतानक कल्पतरु हरिचंदन पंचसब्द नफीरी संख भेरी पनवानक गो

मुख॥ पंचसंधी॥ संज्ञा॥ स्वर प्रकृति॥ व्यंजन॥ विसर्ग॥
पंचांग॥ तिथि॥ वार॥ नक्षत्र॥ योग॥ कर्न॥ पंचकन्या तारा
मंदोदरी॥ द्रुपदी॥ कुंती॥ अहिल्या॥ पंचपातक॥ ब्रह्मघा
त॥ सुरापी॥ स्वर्नचोर॥ गुरुसेजगामी॥ गोघात॥ पंचतत्व
॥ मृत्तिका॥ जल॥ अगनी॥ वायू॥ आकास॥ पंचजज्ञ॥ देव
॥ भूत॥ पित्र॥ मनुष्य॥ ब्रह्म॥ पंचगव्य॥ पंचामृत॥ वृक्षके
पंचांग॥ फूल फल॥ दल॥ तुचा॥ मूल॥ पंचमाता॥ गुरुप-
त्नी॥ राजपत्नी॥ मित्रपत्नी॥ सास॥ जननी॥ पंचपिता॥ उ
पनेता॥ गुरु॥ अन्नदाता॥ भयहरता॥ अथषट॥ ६॥ कु-
लिसकोन॥ तर्क ६॥ मानसिक॥ वाचक॥ दृष्टिक॥ स्रवनि
क॥ सुगंधिक॥ सास्त्रअवलोकिक दरसन॥ ६॥ स्रवन॥
चित्र॥ स्वप्न॥ साक्षात॥ प्रेम॥ ह्रिदय॥ गुन ६॥ इस्वर्ता॥ गो
त्रकीर्ती॥ विसष॥ वितर्क॥ जीवनमुक्ति॥ रितुषट॥ वेदअंग
सिक्षा॥ कल्प॥ व्याकर्न॥ निरुक्त॥ योतिष॥ छंद॥ चक्रव
र्ती॥ युधिष्ठिर॥ विक्रम॥ सालिवाहन॥ विजयाभिनंदन ना
गार्जुन॥ कलिक॥ स्वामिकार्तिकके मुख॥ रागषट॥ भैरव॥
श्री॥ हिंडोल॥ मेघ॥ दीपक॥ मालकोस॥ शास्त्र ६॥ वेदांत॥
सांख पातंजल॥ वैसेषक॥ मीमांनसा॥ न्याय॥ आततताइ॥
रस॥ अथसप्तम॥ ७॥ पाताल॥ अतल॥ वितल॥ सुतल॥ त
लातल॥ रसातल॥ पाताल॥ तल॥ लोक॥ भू॥ भुवा॥ सह मह
॥ तप जन॥ सत॥ मुनि॥ मरीची॥ अत्री॥ अंगिरा॥ पुलस्त
॥ पुलः॥ क्रतू॥ वसिष्ठ॥ दीप॥ जाम्बू॥ पिपल॥ साकल॥ कु
सद॥ साक॥ क्रौंचक॥ पुहकर समुद्र॥ क्षारोदक॥ सुरो
दक॥ घृतोदक॥ क्षीरोदक॥ दधिओदक॥ जलोदक॥ मधो
दक॥ सप्तस्वर॥ खडज॥ रीषव॥ गंधार॥ मध्यम॥ पंचम॥
धैवत॥ निषाद॥ गिर ७॥ सुमेरु॥ हिमाचल॥ उदयाचल॥ वि
न्धाचल॥ गन्धमादन कैलास॥ लोकालोक॥ तालसप्त॥ स
रोवर॥ मान्सर॥ विन्दुसर॥ पंपासर॥ रेवालसर॥ ओदुइगुसैं

ब्रक्षसप्त॥ मंदार॥ पारजातक॥ संतानक॥ कल्पतरु॥ हरि चंदन॥ अक्षैवट॥ कैलासवट॥ छंदसात॥ गायत्री॥ अनुष्टुब ॥ ब्रहत्ती॥ जगती॥ त्रिष्टुप्॥ उसमक॥ पंक्ती॥ पुरी॥ अयोध्या मथुरा॥ माया॥ काशी॥ काम्ची॥ अवंतिका॥ द्वारावती॥ सुख ॥७॥ खान॥ पान॥ धन॥ धान्य॥ यानु॥ नान॥ दुति॥ चिरंजीवः ॥ अस्वत्थामा॥ राजाबलि॥ व्यास॥ हनुमान॥ बिभीषन॥ प रसरामजी॥ कृपाचार्ज मात्रिका ॥७॥ ब्रह्मानी॥ माहेस्वरी कौमारी॥ वैष्णवी॥ वाराही॥ इन्द्रानी॥ चामुंडा॥ सूर्यकेघो डे॥ अन्न॥ ताड॥ तुच्वा॥ अथअष्टम॥८॥ योगअंग॥ संयम ॥ नेम॥ आसन॥ प्रानायाम॥ प्रत्याहार॥ ध्यान॥ धारना॥ स माधी॥ दिग्पाल॥ इन्द्र॥ अग्नी॥ यमराज॥ नैरित्य॥ वरुन॥ म रुत॥ कुबेर॥ सौम॥ वुसू॥ जल॥ सोम॥ धरा॥ अनिल॥ अ ग्नी॥ प्रत्यूष॥ प्रभास ध्रुव॥ सिद्धि॥ अष्टकुलीनाग॥ तक्षक॥ महापदम्॥ संखचूड॥ कुलिक॥ कंवल॥ यस्तर॥ धिर्तराष्ट ॥ वलाहक॥ व्याकरनी॥ इन्द्र॥ चंद्र॥ गर्ग॥ साकल्य॥ सक ठ॥ कात्यायन॥ पाननीय॥ उपेंद्र॥ दिग्गज॥ ऐरावत॥ पुंड रीक॥ वामन॥ कुमुध॥ पुष्पदंत॥ सार्वभो॥ सुप्रती॥ कस्यप ॥ नायका॥ अथनव॥९॥ अंगद्वार॥ मुख॥ नाक॥ कान॥ नेत्र ॥ गुदा॥ लिंग॥ भूखंड॥९॥ इलाव्रत॥ रम्यक॥ कुरु॥ नरहरी ॥ किम्पुर्ष॥ वरखे॥ भर्थ॥ केतमाल॥ भद्राश्व॥ नवनिध॥ ना डी॥ इंगला॥ पिंगला॥ सुखमना॥ गंधारी॥ गजजीहा॥ पूखा ॥ प्रसद्द॥ स्वनी॥ स्वस्नी॥ भक्ती॥ श्रवन॥ कीर्तन॥ अस्मर न॥ चरनसेवा॥ अर्चन॥ वंदन॥ दस्यन॥ साधन॥ निवेदन॥ रस९॥ बाघिनकेकुच॥ नवग्रह॥ सुधाकुंड॥ अथदसम॥१० रामकेअवतार॥ रावनकेसीस॥ विस्वेदेवा॥ दोष१०॥ कादर ॥ गूंगा॥ कूर॥ अंध॥ बधिर॥ कुवडा॥ अंगभंग॥ पंगु॥ कुलद्रो ही॥ दुजद्रोही॥ दशा१०॥ नैनमति॥ चिंता॥ संकल्प॥ निद्रानास॥ कसित॥ रुचिहानि॥ लाजभंग॥ उन्माद॥ मूर्छा॥ मृत्यु॥ दि

श॥१०॥ महाविद्या॥ इतिगननाअलंकार॥ अथप्रेमालंका
रलछन॥ जहांप्रीतमेअंतरनहोयसोप्रेमालंकार॥ उदाहरन
॥दोहा॥ कछुएकवातवियोगकीसपनेसुनैजोमीत॥ कहुआ
नदेहोऋवैयहैप्रेमकीरीत॥ अथअश्लेषालंकारलछन॥ ज
हाएकपदकेकईअर्थहोयसोअश्लेष॥ उदाहरन॥ यसुदावा
रवारयहभाखे॥ हैकोइब्रजमेहितूहमारोचलतगोपालैरा॰
खे॥ सोदुइप्रकारहै॥ एकभिन्नएकअभिन्न॥ अथभिन्नपद॥
भिन्नवहहैकिजोएकसब्दकेकईअर्थहोय॥ उदाहरन॥ कवि
त॥ कहांकहौकुंजतीरआजुकीविहारवीरमेटिकैसिंगारहारदू
रकियोचीरहै॥ परसनसाइहैलल्लाईअधरानहूकीविथुरीअ
लकवाढयोपुलकिसरीरहै॥ मेटयोचारुचंदनकोपंकअंकमे
लगायगरेलपटायहरेहरयोतापपीरहै॥ देखतरसालीछवि
सालीप्रीतकीकटारीकहांवनमालीआलीकालिन्दीकोनीर
है॥ अथअभिन्न॥ जहांपदहीसोपदनिकसैसोअभिन्न॥ औ
रजहांभिन्नभिन्नपदनकेअर्थहोयसोउपमालंकारश्लेष॥ अ
थउपमाश्लेषअभिन्नपदकोउदाहरन॥ कवित्त॥ राजैरजके
सोदासटूटतअरुनलारप्रतिभटअंकनितेअंकपसरतुहै॥ से
नासुंदरीनिकेविलोकिमुखभूषननिकिलकिलकिजाहिता
हीकोधरतुहै॥ गाढेगढ़षेलहीविलोननिज्योतोरिडारोजग
जयंजसुचारुचंदकोअरतुहै॥ इन्द्रजीतभुवपालअंगनवि॰
सालरनतेरीकरवालवाललीलासीकरतुहै॥ अथउपमाश्ले
ष॥ दोहा॥ व्रषभवाहनीअंगउरवासुकीलसतप्रवीन॥ शिव
संगसोहतसर्वदाशिवाकिरायप्रवीन॥ अथविरोधालंकार
नामकथन॥ दोहा॥ वहुरौयेकअभिन्नक्रतआविरुधक्रतु॰
आन॥ सुनिवीरुधकर्मोअवरनेमविरोधीमान॥ अथअभि
न्नक्रत॥ दोहा॥ जारतअघनअनेकजगअरुसत्रुनकोमान॥
गंगासुतश्रीरामजूराजाऔरक्रसान॥ अथअविरुधक्रिया
उदाहरन॥ सवैया॥ कछुकानसुन्योकलवोलतकोकिलका

मकीकीरतगावतहै॥वातेकहैकलभाषनिकामनीकेलिक लानवढावतहै॥वाजतिवीनप्रवीननवीनसुरागहियेउप जावतिहै॥कहिकेसवदासप्रकासविलाससवैवनसोभव ढावतहै। ॥अथविरोधक्रम॥उदाहरन॥कवित॥दो ऊभगवेततेजवंतवलवंतअतिदुहुनकीवेदनवखानीवा तऐसीहै॥दोऊजानेपुण्यपापदुहुनकेशिषिवापदुहुनिकी देषियतमूरतसुदेसीहै॥सुनौदेवदेववलदेवकामदेवप्रिय केसोराइकीसोतुमकहौजेसीतैसीहै॥वारुनीकोरागहोत सूरजकरतअस्तउदौहूजराजकोजोहोतयहवैसीहै॥अथ नियम॥उदाहरन॥कवित्त॥वेरीगायबाम्हनकोकालैसव कालजहंकविकुलहीकोसुवरनहरकाजहै॥गुरुसेजगामी एकबालकैविलोकियतमातंगनिहीकेमतवारेकेसोसाजु है॥अरिनगरीवप्रतिहोतहैअगम्यागौनदुर्गनिहीकेसोदास दुर्गतिसीआजुहै॥राजादसरथसुतराजारामचंदतुमचिर चिरराजकरोजाकोऐसोराजहै॥अथविरोधी॥सवैया॥ कृष्णहरेहरयेंहरेसंपतिसंभुविपतियेहेअधिकाई॥जालक कामअकामनिकोहितघातककामसकामसुहाई॥छाती मेंलछिदुरावतवेतोफिरावतएसबकेसंगधाई॥जद्यपिके सवएकतउहरितेहरिसेवककोसतभाई॥अथसूक्ष्मालंका र॥वार्तिक॥जहांकोनोप्रकारतेहृदयकीवातलषपरेसोसूक्ष मालंकार॥उदाहरन॥कवित॥वैठीगुरुलोगनकेपासआ नप्यारीजहांप्यासमिसआयेतहांप्यारेरसिकाइहै॥छति मातेछैलकोनछोडतछवीलीभौवेरतिकीसुरतकीसुरतहि येआइहै॥भनतकविंदचेखिनारंगीललाकेकरवालहूउचि तकीन्हीचित्तचतुराइहै॥हाथलकेहरदीवदनमेंछुआई फेरिआगुरीहियेसोहरिकेसमेमिलाईहै॥अथलेसालंकार लसन॥दोहा॥चतुराईकेलेसतैचतुरनसमुझलवेस॥वरन तकविकोविदसवेताकोकेसवलेस॥उदाहरन॥सवैया॥

खेलत हेहरिवागेवनेजहंवैठीप्रियारतिते अतिलोनी॥केस वकैसेहूंपीठीमैडीठिपरीकुचकुमकुमकीरुचिरौनी॥मात समीपदुराइभलेतिनसांतुकभावनिकीगतिहोनी॥धूरिक पूरिकीपूरिविलोचनसूंघसरोरुहओढिउढौनी॥अथनिदर सालंकारलछन॥दोहा॥कौनहूंएकप्रकारतैसतग्ररुग्रस तसमान॥कहिजेप्रगटनिदरससुग्रसप्रुग्रतसकलसुजान॥ कवित्त॥तेईकरैचिरराजुराजनिमेराजेराजतिनहीकेलोक लोकलोकनिग्रटतहै॥जीवनजनमतिनहीकेधन्यकेसोदा सग्रौरनिकेपसुनिज्योंदिननघटतहै॥तेईप्रभुपरमप्रसिद्ध पुहमीकेपतितिनहीकीप्रभुप्रभुताईकोरटतहै॥सूरजसमा नसोममित्रहूग्रमित्रकहंसुखदुग्रापनेउदेहीप्रगटतहै॥ अथग्रहंकारालंकारलछन॥यथाकवित्त॥कोवपुराजोमि लोहैबिभीषनह्वैकुलदूषनजीवैगोकेलो॥कुंभकरनमरयौ मघवारिपुतोहूंकेहानडरोजमसोलो॥श्रीरघुनाथकेगातन सुंदरीजानहितूकुसरातनतौलौ॥सालुसवैदिगपालनकेकर रावनकेकवालहैजोलो॥अथग्रर्थांतरन्यासलछण॥जहां वस्तुग्रौरव रवानैग्रौरग्रर्थग्रौरहोयसोअर्थांतरसोचारप्र कारहै युक्त अयुक्त अयुक्तायुक्त युक्तायुक्त॥अथयुक्तां तरन्यासलछन॥जैसोजहाचहिएवैसेहीरूपगुणसीलयुक्ति करकैबरननकरैसोयुक्ति॥अथअयुक्तांतरन्यासलछन॥ जहांपरजैसावरननकरनानचाहियेतहांपरतैसावरनैसोअ युक्ति॥अथअयुक्ताजुक्तांतरन्यासलछन॥जहांअसुभसुभ ह्वैजायसोअजुक्तायुक्तजैसेहानिअसुभहैपरंतुपातकहानि सुभहै॥अथयुक्तायुक्तार्थांतरन्यासलछन॥जहांसुभवात असुभह्वैजायसोयुक्तायुक्त॥जैसेचांदनीसदैवेसुखदहै परंतुविरहीकोदुखदहोतीहै॥अथयुक्तकोउदाहरन॥कवि त्त॥गुरुवेगुरुकेदोषदूषितकलंककारिभूषितनिसाचरीनग्र कनभरतुहै॥चंडकरमंडलतैलैलैतोमचंडकरकेसोदासप्र

तिमासमासनिसरतहै।।विषधरबंधुहैअनाथनिकोप्रतबंधु
विषकोविसेषबंधुहियेहहरतहै।।कमलनयनकीसोकम
लनयनमेरेचंद्रमुखीचंद्रमातेनाहीजरतहै।।अथअयुक्त
कोउदाहरन।।कवित्त।।केसवदासहोतिमारसिरपैसुमारसी
री आरसीलैदेषिदेहदेहऐसीयेहेराउरी।। अमलवतीसी
ऐसेललितकपालनेरेअधरतमोरधरेद्रिगतिलचाउरी।।ए
हीछुबिछुकिजातछिनमेंछबीलोहरिलोचनगवारिद्वीनले
हैइतआउरी।। वारवारवरजतिवारवारजातकतमैलेवारवा
रीआनिवारीहैतूवा वरी।।अथअयुक्तायुक्तकोउदाहरन
।।पातकहानिपितानिसोंहारिवोगर्भकेसूलनतेडरीयेजू।।ता
लुनिकोबंधिवोवधुरोरकोनाथकेसाथचिताजरियेजू।।पत्र
फटेतैकटैरिनकेसवकैसेहूतीरथजोमरियेजू।।नीकीलगै
सदागारीसगेनकीडाडिभलोजोगथाभरियेजू।।अथयुक्ता
युक्तकोउदाहरन।।कवित्त।।सूलसेफूलसुवासकुवाससी
भाकसीसेजभेभौनसभागे।।केसववागमहावनसोजुरसी
चढिजोन्हसबैअंगदागे।।नेहुलग्योउरनाहरसोनिसिनाहु
घरीककहूंअनुरागे।।गारिसेगीतविरीविसुसीसिगरेइसिं
गारअंगारव्हैलागे।।अथवितरेकालंकारलक्षन।।जहांसमा
नवस्तुमेंभेदवरननकरैसोवितरेकालंकार।।सोदुइभांतहैयु
क्ति।।सहज।।अथयुक्तवितरेकालंकारकोउदाहरन।।कवित्त
।।सुंदरसुखदअतिअमलसकलविधिसदलसफलबहुसरस
संगीतसो।।विविधसुवासयुक्तकेसोदासआसपासराजेद्वि
जराजपरमपुनीतसो।।फूलेहीरहतदोऊदीवेहीकोप्रतिपल
देतकामनानिसमग्रितहप्रीतसो।।लोचनवचनगतिविनइत
नोइभेदइंद्रतरवरअरुइंद्रइंद्रजीतसो।।अथसहजवितरेक
कोउदाहरन।।कवित्त।।गाइवरावरधामुसवेधरुजातिवरावर
हीचलिआई।।केसवकंसदिवानपितानवरावरहीपहिरावन
पाई।।वेसवरावरदीपत्तदेहबरावरहीविवुधि बढाई।।येअलि

आजुहीहोहुगीकैसेवडीतुमआंषिनहीकीबडाई॥ अथअपन
हुतीलक्षन॥जहामनमेऔरहोयमुहतेऔरकहैसोअपन्हुति
॥दोहा॥देखनकेमिसस्यामकेलगीपौरलोआय।कोंपूछैकौ
तूक्यौखडीबनतेआवतगाय॥ अथउक्ताअलंकारवरनन॥ज
हाकछूकोइयुक्तिकरिकैतर्ककरैसोउउक्तावहपांचप्रकारहै॰
वक्रोक्ति अन्योक्ति विधिकरन विशेष सहोक्ति॥ अथवक्रो
क्तिलक्षन॥जहासीधीबातमेंटेढाभावदरसावैसोवक्रोक्ति॥ दो
हा॥हमकुलघालकसत्यतुमकुलपालकदससीस॥ अंधहु
बधिरनकहैअसश्रवननैनतववीस॥ अथअन्योक्तलक्षन
॥ औरकीबातऔरप्रतवखानैसोअन्योक्त॥ कवित्त॥रितुवी
तगईतीवसंतहुकीचितमेचर्चासबहीचहतो॥ करिलेतोक
छूदिनलोगरुतामहिमंडलमेमहिमाल ह तो॥गतितेरीकहा
कहियेमतिमंदजोनेकतूमौनगहेरहतो॥ रंगकोपलमांझमि
लोहतोकागरेकोकहतोनतोकोकहतो॥ अथविधकरनोक्ति
लक्षन॥औरमेऔरकेगुनदोषप्रगटकरैसोविधकरन॥ सवै
या॥पूतभयोदसरथकेकेसवदेवनकेघरवाजीवधाई॥ फूलिकै
फूलनकोवरषैतरुफूलिफलेसबहीसुखदाई॥छीरवहीसरि
तासबसीतलधीरसमीरसुगंधसिहाइ॥सर्वसलोगलुटाव
तदेखिकैदारिददेहदरारनिछाई॥ अथविशेषोक्तिलक्षन॥
जहाकारनसकलविद्यमानहोयओकारसिद्धिनहोयसोविसे
षोक्त॥ कवित्त॥ वेईहैचाननिधाननिधानअनेकचमूजिन
जोरहईजू॥वेईहैबाहुउहैधनुधीरजदीहदिसाजिनसुदूजई
जू॥वेईहै अर्जुनआपुतहीजगमेंजसकीजिनवेलिवईजू॥दे
खतहीतिनकेतवकावैननीकेनारिछिनाइलईजू॥ अथसहो
क्तिलक्षन॥जहांसुभअसुभदोनोकीवृत्तीहोयसोसहोक्ति॥ दो
हा॥ हानिलाभइकसंगजहकविजनकहतप्रवीन॥जोवनबा
ढतअंगमेहोतसदाकटिछीन॥अथव्याज अस्तुतिनिंदावरनन
॥जहांअस्तुतिमेनिंदाओनिंदमेअस्तुतिहोयसोव्याजअस्तुनिं

द॥उदाहरन॥चौपाई॥धर्मसीलतातवजगजागी॥पावा
दसरसहमहुवडभागी॥अथनिंदाव्याजअस्तुति॥उदाहरन॥
दोहा॥हरहरमतकरवावरेहरसुमरेअसहाल॥येतनकीसै
नामिलैअरुमुंडनकीमाल॥अथअमितलक्षन॥जहांसाध
साधककीवस्तुभोगैसोअमित॥सवैया॥दूतीउसासविशेषक
हाकहादोरगईपुनिदौरहीआई॥भृष्टभयेअलकावलिक्यों
कहाप्यारीरीपीतमपायपराई॥लालीकहाभईओठनकीक
हायेअवलानंदलालखकाई॥पटपीतमकोवदलोभयोक्योंक
हाप्यारीतेरीपरतीतकोलाइ॥अथअपर्यायोक्तिलक्षन॥ज
हांकौनोप्रकारतेविनाहीकियेकार्यसिद्धिह्वैजायसोअपर्या
योक्तिलक्षन॥कवित्त॥खेलतहीसतरंजआलिनसोतहाहरि
आयेआपुहीलेकौधौकाहूकेबोलायेरी॥लागेमिलिखेलन
मिलैकैमनहरेहरै देनलागेदाऊआपआपमनभायेरी॥उठि
उठिगईतिमिसहमिसजित्ततितकेसोराइकीसोदोऊरहेछ
विछायरी॥चौंकिचितैचहूदिसतिहिछिनराधाजूकेजलज
सेलोचनजलदसहैआयेरी॥अथयुक्तालंकारलक्षन॥दोहा
॥वुद्धिविवेकअनेकवलकहियेतेसोरुप॥तासोकविकुलयु
क्तिकहिवरनतबहुतसरूप॥कवित्त॥मदनवदनलेतलाज
कोंसदनदेखिजदपिजगतजीवमोहिवेकोकोछुमी॥कोटि
कोटिचंद्रमानिहारिवारिवारिडारोंजाकेकाजब्रजराजआ
जहूलैसजमी॥ऐसेतेरेसविलासमुखकीसुवासुसषिसुनि
आरसहीसारसनसोरमी॥कोसदंहदलवलवालकुतेजाके
ताकेकेसोराइतासोकहौकोनवातकीकमी॥अथसमाहि
तालंकारलक्षन॥जहांकारजविनाहेतकेदेवजोगकरिकै
होयसोसमाहित॥कवित्त॥साथनस्यानोकोऊहाथनह
थ्यारघुनाथजीकेजज्ञकोतुरंगगहिराख्योई॥काहूनिकडौ
टीसिरछोटीछोटीकाकपछपाछहींबरसकिनिएडअभिला
ष्योई॥नलनीलअंगदसहितजामवंतहनुमानसेअनंतजि

ननीरनिधनाष्योई॥ केसोद सदीपदीप भूपनसोरघुकुलबल वानकुसलवजीतिकै विजयरसचाष्योई॥ अथसुद्धालंकारलक्षन॥ जहांसाधेऔरकोई औभोगेऔरकोईसोसुद्ध॥ दोहा॥ सीचसीचमालीमरैवासलुहैसरदार॥ भूषनसुषलहैयोषिताग ढगढमरैसुनार॥ अथप्रसिद्धालंकारलक्षन॥ जैसेएकसाधेअनेकभोगैसोप्रसिद्ध॥ सुरसरआईजगतमेछाडिब्रह्मआगार॥ तपकीन्हाभागीरथ मुक्तलहैसंसार॥ अथरूपकालंकारलक्षन॥ जहांउपमेयप्रतउपमाकरैसोरूपकालंकार॥ दोहा॥ वदनचंद्रलोचनकमलबाहुनागकरिजानि॥ करपल्लवसुकनासिकोविवाअधरवखान॥ सोरूपकतीनप्रकारहै अद्भुत॥ विरुध॥ रूपरूप॥ अथअद्भुतरूपक॥ कवित॥ सोभासरवरमाझफूलोइरहतसषिराजैराजहंसनिसमीपसुषदानिये॥ केसोदासआसपाससोरभकेसोभघनेघ्राननिकेदेवभौरभ्रमवखानिये॥ होतिजोतिदिनदूनीनिसमेसहसगुनीसूरजसुखदचारुचंद्रमनमानिये॥ रतिकोसदन छ्वैसकैनवेमदनऐसोकवलवदनजगजानकीकोजानिये॥ अथविरुधरूपकलक्षन॥ जौनकहनेमेअनमिलहोयऔअर्थउसकासुमिलहोयसोविरुधरूपक॥ कवित्त॥ राजतपरजंकपरकोमलकमललुनालतागिरकनकहैवनकविसालहै॥ कहेंकविदूलहसोअंगनसहिततामेतरुनतमालअतिसोहैछविजालहै॥ कमलकेनालयुगतामेयुगरंभारंभामेकमलयुगसोहतसनालहै॥ कमैपैकुरुविंदकुरुविंदपैचंदचंदपैचढेचारुबोरुतमरालहै॥ अथरूपकारूपकलक्षन॥ जहांभावमेकोईरूपकवरननकरैसोरूपकारूपक॥ कवित्त॥ सुच्चहैसुधासीमनिकांतचंद्रमासीवालरंभादरसासीरूपकोमलरमासीहै॥ चापलचकासीकरिहांसीगतिभासीजासुझूमदिरासीकरैविषकीविनासीहै॥ सुधीकपिलासीवुद्धिवैद्यसुखरासीडाठसुरतरुतासीदानीमानीअनुमासीहैकेसनडोसीतवतीनवलखासीलुरफूलनरमासीतनतोलमेछमासीहै॥ अथदीपकालंकारलक्षन॥ वाच्यमि

याकरकेगुनद्रव्यजहावरननकरैसोदीपक॥ दोहा॥ दीपक
भेदअनेकहैंमैवरनेहैरूप॥ मनिमालातासोकहैकेसवकविक
विभूप॥ वरषासरदवसंतसिसिसुभतासोभसुगंध॥ प्रेमपव
नभूषनवचनदीपकदीपकवंधु॥ इनमहएकजोवरनियेकौन
हुबुद्धिविलास॥ तासोमनदीपकसदाकहियतकेसवदास॥
अथमालादीपक॥ मालादीपउसकोकहतेहैकिजहांदेसकाल
गुनसववरननहोय॥ उदाहरन॥ सवैया॥ दीपकदेहदसासो॰
मिलैसोदसामिलितेजहिजातिजगावै॥ जागिकैजोतिसवैसमु
झैतमसोधिसुतोसुभतादरसावै॥ सोसुमतारसैरुपकरूपसुरू
पककामकलाउपजावै॥ कामसुकेसवप्रेमवढावतप्रेमलैप्रान
प्रियाहिमिलावै॥ अथपहेलिकालक्षन॥ जहांवस्तुदुरायकेकौ
नौप्रकारसेवरननकरैसोपहेलिका॥ उदाहरन॥ दोहा॥ स्याम
वरनद्वारिकावासीदेतअभैपददान॥ कृष्णनहीकोईऔरहै
बूझतचतुरसुजान॥ अथउपमालंकारलक्षन॥ सोयेकइसप्र
कारकीहैसोहमप्रथकप्रथकलिखतेहैं॥ अथसंसयउपमालक्ष
न॥ जहांकोईतरहसेनिरनयनहोयसोसंसयउपमा॥ जैसेकहा
किनैनकामिनीकेखंजनहैकिकमलहैकीमृग॥ अथहेतउप॰
मालक्षन॥ जहाकोनौहेतकरिकैउत्तमसेहीव्हेजायसोहेतउप
मा॥ जैसेकिसीकोकहाकिगुलाबकेवडाआदिमिलैतवतेरमुख
कीवासतुल्यहोय॥ अथअभूतउपमालक्षन॥ जिसकिसीकी
उपमाकहीनजायसोअभूतउपमा॥ जैसेकहाकिइनकेजेवरकी
क्याउपमाकीजियेइनकेमुखकीदुतिदेखिकेरात्रदिनकेसमा
नहोजातीहै॥ अथअदभुतउपमालक्षन॥ जोउपमातीनकाल
मेंकिसीनेनकहीहोयसोकहैवहअदभुतउपमा॥ अथविक्रियो
पमालक्षन॥ जहांएकहीप्रकारसेउपमाकरैसोविक्रियोपमा
॥ जैसेकहाकिआपकारंगकुंदनसमानऔदुतिमनिसमानहै॥
अथदूषनउपमालक्षन॥ जहांभूषनछिपायकेईषोवरननक
रैसोदूषनउपमा॥ जैसेकहाकिआपकामुखदेखिकैचंद्रमाकोई

षींहोतीहैकियेऊहमारेसमानहै॥ अथभूषनउपमालस्रन॥
जहांदूषनदुरावैश्रौभूषनदरसावैसोभूषनोपमा॥ कवित्त॥
सुवरनयुतसुवरनवल्लिनपुनिभौरौसोमिलतगनिललितवितानी
है॥ पावनप्रगटद्युतिदुजनकीदेषियतदीपतिदिपितअतिश्रुति
सुखसानीहै॥ सोभासुभसानीपरमारथनिधानीदीहकलुषरु
पानीमानीसबजगजानीहै॥ पूरवकेपूरेपुन्न्यसुनियेप्रवीनरा
यतेरीवानीमेरीरानीगंगाकीसोपानीहै॥ अथमोहउपमालस्र
न॥ जहांरूपहोय नहोयपरंतुकोनौप्रकारतेमनमेवसजाय
सोमोह॥ कवित्त॥ खेलतनखेलकछुहासीनहसतहरिसुनतन
कानगानवानतानसीकहै॥ श्रोढतनश्रंवरनिडोलतदिगम्वर
सेसंवरज्यौंसंवरारिदुषदेहकोदहै॥ भूलेहूनसूघेफूलफूलिफूलि
कुंभिलातजानखातवीराहूनवातकाहूसोकहै॥ देखिदेखि चं
दमुहकेसवचकोरसमचंद्रमुखीचंद्रहीकेविंवत्योचितैरहै॥
अथअतसयउपमालस्रन॥ जहांएककोयेकैसावरननकरैसो
मोहउपमा॥ कवित्त॥ केससोकेसलसैमुखसोमुखनैनसोंनैनर
हैरससोंछकि॥ देवकहैसवअंगसेअंगसुरंगदुकूलनमेझलकै
दुकि॥ श्रौरनहीउपमाउपजैजगढूंड्योसवैवहुभातिन सोंछ
कि॥ राधिकाश्रीव्रषभानसुतासुनतूसीतुहीश्रौरकोनमेरे
वकि॥ अथउतप्रेक्षितोपमालस्रन॥ जोएकदीपतएककीअ
नेकनमेदेखाइदेयसोउतप्रेक्षितउपमा॥ जैसेकामसर॥ अथ
नेमोपमालस्रन॥ जहंमनवचकायकरिकैकेवलसुभ हीव
रननकरैकिइनमेकेवलसुभहैसोनियमोपमालस्रन॥ जैसेकहा
सीताजीकोमुखसखीकेवलकमलसो॥ अथगुनाधिकउपमा
लस्रन॥ जहांउपमासेउपमेयकेगुनविसेषवरननकरैसोगु
नाधिक॥ जैसेकहासीतानखचंदपेदुचंदछविदारीहैतोचंद्रमा
सकलंकहैनखअकलंकहै॥ अथअस्लेषोपमालस्रन॥ जहांरू
पश्रौसब्दकाएकहीअर्थहोयश्रौजाकेयैपडेसोअस्लेषोपमा॥
कवित्त॥ चोपकरिविरचीविरंचरुपरासश्रैसीकमकेकलासीचा

रुचातुरीकेसालासी॥कहेमजघोखाउरवसीओसुकसीदल
बाकेरूपवारियतकोटमेनवालासी॥चंद्रमासीचांदनीसीचा
मीकरचपलासीसुधासीसषीजनकोसोतिनकोहालासी॥चं
पककीमालाहियेलागतवरसकालावालासिसिरदुसाला
होतग्रीषममेपालासी॥अथधर्मउपमालक्षन॥जहांउपमाउ
पमेयकाएकैधर्महोयसोधर्मउपमा॥जैसेउजरेउदार॥उदार
कहीउजलाउजलाकहीउदार॥अथविपरीतउपमा॥जहांपहि
लेगुनबरननकरकेफेरिउसीमेदोषदेखावेसोविपरीत॥कवि
त्त॥भूषितदेहविभूतिदिगम्बरनाहिनअंबरअंगनवीने॥दूरि
कैसुंदरिसुंदरीकेसवदूरिदरीनमेमंदिरकीने॥देषियेमंडितदंड
नसोभुजदंडदुवौअसिदंडविदीने॥राजनश्रीइन्द्रजीतकेवैरकु
मंडलछाडिकमंडलुलीने॥अथनिर्नयउपमालक्षन॥जहांउ
पमाउपमेयकागुनदोषविचारहोयसोनिर्नयोपमा॥दो॰जन्मसिं
धुपुनिबंधुविषदिनमलीनसकलंक॥सीयमुखसमतापावै
किमचंदवापरोरंक॥अथलाक्षनिकउपमालक्षन॥जहाउप
माउपमेयकालक्षनमिलैसोलाछनिकोपमा॥दोहा॥जैसेब्रा
म्हनसोकह्योतुमहोचंदसमान॥वाकोसवपंडितकहतआ
पहुविद्यामान॥अथअसंभावितोपमालक्षन॥जहाजोवस्तु
संभावितनहोयऔवरनेसोअसंभावितउपमा॥दोहा॥जैसे
मलयजकोसवैसीतलकहतवखान॥वुद्धिविवेकतेदेखिये
तामेअग्निसमान॥अथविरोधोपमालक्षन॥जहांउपमाउप
मेयसेविरोधहोयसोविरोधउपमा॥चौपाई॥तवकुलकमल
विपिनदुखदाई॥सीतासीतनिसाजनुआई॥अथमालउप
मालक्षन॥जहांउपमाउपमेयकीमालाहोयसोमालउपमा॥
कवित्त॥कैसीसेतचांदनीवतावोकविवरमोहिजैसेसेतसे
तवहैसुरसरधारहैकैसेसेतसेतवहैसुरसरधारकह्योजैसे
सेतसेतसुभरजतपहाडहै॥कैसोसेतुसेतुसुभरजतपहाक
ह्योजैसेसेतसेतवाढहीरनकोहारहै॥कैसेसेतसेतवाढही

रनकोहारकहयोजैसेसेतजसरामचंदकोअपारहै॥ अथअप
रस्यरउपमालस्रन॥ जहांउपमेयउपमानमेंअभेदहोयसोपर
स्यरउपमा॥ कवित्त॥ बारेनवडेनवृधिनाहिनागूढ़हस्तसिद्धि
बरेनबुद्धिवंतनारिऔनरसे॥ अंगीनअनंगतनऊजरेनमैलेम
नस्यारऊनसूरेनथावरेनचरसे॥ दूबरेनमोरेरंकराजहूकहेन
जायमरनअमरअरुअपनेनपरसे॥ वेदहूनभेदकछुपाईज
तुबेसोदासहरजूसेहरहरिहरहरैहरसे॥ अथसंकीर्णोपमाल
क्षन॥ दोहा॥ बंधुचोरुवादीसुहृदकल्पवृक्षप्रभुजान॥ समरिपु
सोदरआदिदएइनकेअर्थवखान॥ कवित्त॥ विधुकोसोबंधु
कीधौचारहासरसकोकिकुंदनकोवादकिधौमोतिनकोमीतहै॥
कल्पकलहंसकोकीछोरीनिधिकुविपुष्यहिमगिरिप्रभापभुप्र
गटपुनीतहै॥ अमलअमितअंगगंगाकेतरंगसमसुधाकोसु
बुद्धिरिपुरुपकअभीतहै॥ दिसिदिसदेसदेसपूरनप्रकासर
मानऐसोकेसोदासरामचंदजीकोगीतुहै॥ चीतउपमा॥ अ
थजमका — लंकारलस्रन॥ सोजमकदुइप्रकारकीहै अव्य
पेतऔसव्यपेतअव्यपतउसकोकहतेहैजोबिनुअंतरहै औस
व्यपेतउसकोकहतेहैकिजोअंतरसहितहोय॥ पहिलेचरनज
मक॥ दोहा॥ सज्जनीसदनीरजनिरषिहरषिनचितइतमोर॥
पीवपीचातिकरटतचितवोहरकीओर॥ दूसरेचरनमेंजम
क॥ मानुकरतसखिकौनसोहरितूहरितूआहि॥ मानुभेव
कोमूलहैताहिदेखिचितचाहि॥ तीसरेचरनमेंजमक॥ सोर
भितसोभाअंगकीयहीसत्यहैसार॥ वारनवारनगुंजरतदी
नेविनुसंसार॥ चौथाचरनमेंजमक॥ राधाकेसबकुअरकी
बाधाहरहुप्रवीन॥ नेकसुनावहुकरिकृपाश्रवनवीननवीन
॥ अथआदिअंतपदजमक॥ हरिकेहरिकेवलमनहिसुवृ
षभानकुमार॥ गावहुकोमलगीतहैसुकरताकरतार॥ त्रिपदोतजम
क॥ सारससारसनैनिसुनिचंदचंदमुखिदेखि॥ सुनिरमनीयरमनीय
ररतातेहरीमुखलेखि॥ द्विपदाद्जमक॥ अलिनीअलिनीरजवसैप्रति

तरवरनिपतंग॥ह्वैमनमथमनमथनिहरिवसैराधिकासंग॥इति
अन्येत॥अथआतपादद्विजमक॥आपमनावतप्रानपतिमा
ननिमाननिवारि॥परमसुजानसुजानहरिअपनेचित्तविचार
॥द्वैपदातजमक॥जिनहरिजगकोमनहरेयोवामवामद्विग
चाहि॥मनसावाचाकरमनाहरिवनतावनताहि॥उत्तरार्धज
मक॥आजुछवीलीछविवनीछाडिछलनकेसंग॥मिलेतरु
नितरुनीकरतकरतरकेसवअंग॥द्वैपदाजमक॥देखिप्रवा
लप्रवालहरिमनमनमथरसभीन॥खेलनवहसुंदरगईगि
रिसुंदरीदरीन॥त्रिपदाजमक॥परमानंदपरमानंदहरिदेख
तवनउपकंठ॥यहअवलाअवलागिहैमनुहरिहरिकेकंठ॥
अथचतुरवपदीजमक॥नाहीउरवसीउरवसीमदनमदनवसिभक्त
॥सुरतरवरतरवरतज्योनंदनंदनआसक्त॥अथसुव्येत
जमकवरनन॥द्वैपदांतजमक॥माधवमाधवराधिकापाव
हुकान्हकुमार॥पूजौमाधवनेमसोगिर्जाकोभर्तार॥आदि
जमक॥सियास्वयंवरमाझजिमयुवतिनदेखेराम॥तादि
नतेतिनसबतरुनितजेस्वयंवरधाम॥आदिअंतजमक॥
पापनसतयोंकहतहीरामचंद्रअवनीप॥नीपप्रफुल्लितदे
खिज्योंविरहीविरहसमीप॥आदिअंतअंतरजमक॥जैसे
छुअनचंद्रमाकमलाकरसविलास॥औसेहीसवसाधपरक
मलाकरनिउदास॥त्रिपादिजमक॥दानदेतज्यौंसोभियेदा
नरतिनकेहाथ॥दानसहितज्योराजहींमत्तगजनकेमाथ॥च
तुषपदाद्विजमक॥नरलोकहिराखतसदानरपतश्रीरघुनाथ
नरकनेवारननामजगनरवांदरकेसाथ॥इतिजमकालंका
रसमासम्॥अथचित्रालंकारलक्षन॥चित्रालंकारउसको॰
कहतेहैकिजोचित्रमेंहोयपरन्तुयेअलंकारवारहोदूषनसे
रहितहैऔअर्थहीनहोय॥अथनिरोष्ठवरनन॥जहांछंदमे
अक्षरनिरोष्ठहोयसोईअधरजानौ॥उदाहरन॥कवित्त॥
लोकलोकलाजलीलतसेनंदलालुलोचन ललितलोलली

लाकेनिकेतहै॥सोहनिकोसोचनसकोचकाहूलोकहूकोरे
तसुखसखीताकोदूनोदुखदेतहै॥केसवदासकान्हरके नैर
कीकोरकसेअगरगैरातेरंगअंगअतिसेतहै॥देखिदेखिहर
कीहरकीहरिनताहरिनताहरिननैनीदेखोनाहीदेषतही
हीयाहरलेतहै॥अथमात्रारहित॥दोहा॥येकेस्वरजहवर
नियेअद्भुतरूपअवर्नं॥कहियेमात्रारहितयह मित्र चित्रआभ
र्नं॥कवित्त॥जगजगमगतजसगतजरसरसषसभवहरसह
करकरतअचलचल॥कनकवरनतनअसनअनलवडवट
दलवसनसजनथलथलकर॥अजरअमरअजवरदचरन
धरपरमधरमजगमगनसरनपर॥अमलकमलवरवदनं
सदनजसहरनमदनमदमदनकदनहर॥इतिश्रीगंगासु
तकृतकाव्यसंग्रहपंचांगकाव्यदूषनभूषनचतुर्थअंगसमा
प्तम्॥ ॥अथनायकाभेदआरंभो॥अथनायकालक्षन॥
दोहा॥भांगभरीजोवनभरीरतिरसभरीनिहारि॥पियजिया
कीसुखदायकावहैनायकानारि॥उदाहरन॥कवित्त॥सुंद
रसुरंगनैनसोभितअनंगछविअंगअंगफैलततरंगपरमल
के॥वारनकेभारसुकरतेलचतअंगराजैपरजंकपरभीत
रमहलके॥कहैपदुमाकरविलोकिजनुरीझैजाहिअंबर
अंवरकेसकलजलथलके॥कोमलकमलकेगुलावनके
दलकेसोजातगडिपांयनविछौनामषमलके॥सोनायकाती
नप्रकारहै॥सुकिया॥परकीया॥सामान्या॥अथसुकिया
लक्षन॥सुकियाउसकोकहतेहैकिजिसकेनेत्रमेलाजहो
यऔपतिव्रताहोय॥कवित्त॥छितकीछमासीजानिकोमल
सुसीलवानीपाइहैउमातेकीरमातेसीषिआइहै॥संगकीस
खीनसिखपाईकुलरीतजैसेमालतीमिलापतेतिलीमेगंधता
ईहै॥रामजीसुकविपतिव्रतकीप्रवीनताईवढतनवीनताई
ललितसुहाईहै॥सुघरसियासीकुलयुगुलदिपासीविधिकौ
नसुकियासीऔरवनितावनाईहै॥सोसुकियाअवस्थाकरि

कैतीनप्रकारहै।।मुग्धा।।मध्या।।प्रौढा।। अथमुग्धालछन।।
दोहा।।जाकेजोवनकीझलकअंगअंगदरसात।। ताकोमुग्धा
कहतहैजेप्रवीनकविग्यात।। सोमुग्धादोप्रकारहै एकग्यात
।।दूसरीअग्यात।। जिसकेजोवनआयोअपनेअंगमेजाननप
रैसोअग्यात।।औजिसकोजानपरैसोज्ञात।।अथअज्ञातयौव
ना।।उदाहरन।।कवित्त।।योवनआवतअंगनमेकठिनाइलि
येकुचकारगहेहै।।फारिकेओठनिकोअचरागहिपीपरपात
सोबांधिदयेहे।।तालखिकेभभरीनवलानहिजानकोलाहल
भेदनयेहै।।बावरीवापपुकारैपरीकहेहायहमेवरतोरभयेहै
।।अथज्ञात।।कवित्त।।काननलौलागेमुसक्यानप्रेमपागेलो
नेलाजभरेविलसतलोचनअनंगते।। भारुधरिभुजनिडोलत
चलतमंदऔरैओपउलहतउरजउतंगते।।मतिरामजोवनप
वनकीझकोरआयबाढतसरसरसतरलतरंगते।।पानिपवि
मलकीझलकझलकनलागीकाईसीगईहैलरिकाईकढिअं
गते।। औरयेहीमुग्धाकोनवोढाभीकहतेहैसोदोप्रकारहै नवो
ढाविस्रब्धनवोढा।।नवोढाउसकोकहतेहैकिजोलाजडरकैरऔ
रतिनचाहैऔज्ञोप्रतीतकरैसोविस्रब्धनवोढा।।कवित्त।।आ
लीकेलिमंदिरमेल्याईछलवलकरिप्यारेयेखिपकरीउछरिप
रजंकते।।भनतकविंदथिरकैसेरहेथोरीवैसपारदकीरदकीच
पलताईसंकते।।नीवीकरधरिरहीझमकपसाररहीझपकप
गाररहीवदनमयंकते।।लालभुजभरीवालऐसीतडफरीहा
लजालकेसीसफरीउछरपरीअंकते।। अथमध्यालछन।।जाके
तनमेजगमगेलज्जामदनसमान।। ताकोमध्याकहतहैजेप्रवी
नमतमान।।सवैया।।सूरतवामनमोहनकीनिसवासरजीमे
फिरैथिरकीसी।।देवगोपालकेवैनसुनेछतियासहरापसुधाछि
रकीसी।। नीकेझरोषनझाकसकैनहीनैननलाजघटाघिरकी
सी।।पूरनप्रीतहियेहिरकीखिरकीखिरकीनफिरैफिरकीसी।।
अथप्रौढालछन।।जोकेलकलामेप्रवीनहोयसोप्रौढ।।कवित्त

जाहीजुहीगुलनारअनारसोंहायेप्रसूनसुवासप्रकासमे॥चंप
कचारुचमेलिनकेगुनवेलिनकेवनसोहेविकासमे॥पीतमवा
गसमीपरच्योनिजमंदिरसुंदरकेसवपासमे॥काकहियेइन
मालिनसोनगुलावकोसीचतीक्योंमधुमासमे॥सोमध्याप्रौ
ढामानसमैतीनप्रकारकीहोतीहै धीरा अधीरा धीरधीरा
॥जोव्यंगसोकोपजनावेऔपतिकोमानकरैसोधीराऔजोप्र
गटकोपकरिकैपतिकोअनादरकरैसोअधीरा औजोवचन
धीराकहैऔरोइकैकोपजनावैसोधीरधीरा॥ कवित्त॥जानै
कोकहाथोभयोसुंदरसवलश्यामदूटोगुनधनुष तुनीरतीर
झरिगो॥हालतनचंपलताडोलतसमीरवानीकोकिलकलित
कलरवकंठपरिगो॥छोटेछोटेछौनाकलहंसनकेनीकेनीकेति
नकेरुदनते स्रवनमेशभरिगो॥नीलकंजमुदितविलोकिवि
स्रमानभानसिंधुमकरंदहिमलिंदपानकरिगो॥ अथजेष्टाक
निष्ठाकोलस्सन॥जोप्यारीसोजेष्टाअन प्यारी सोकनिष्टा॥कवि
त्त॥एकपलंकापैबैठीसुंदरीसलोनीदोऊचाहिकैछवीलोछैल
आयोरतिकेलिघर॥चिंतामनिकहैआनिबैठीढिगपीतमकेर
काहूसेकछूकहिसकतनदोऊकेडर॥रतिकेवाढइवेकोएककोना
हविपरीतरतिकोस्वरूपलिखिचित्रपर॥जौलौवहसकुचनआ
खैमूंदिरहीतौलौआनप्यारीप्यारीकेकुचनपरराख्योकर॥ इतिसुकिया
॥अथपरकीयालक्षन॥जोपरपुरुससोंप्रेमकरैसोपरकीयासोदो
प्रकारकीहै उढा अनूढा॥उढाजोव्याहीहोयऔरबिनव्याही
अनूढा सोछप्रकारहै गुप्ता विदग्धा लसिता कुलटा मुदि
ता अनुसैना॥ अथपरकीया॥उदाहरन॥ सवैया॥ कोइनआं
खिनसो नसँक ह्वै मोहनकोतनपानिपपीजे॥नेकनिहारेकलं
कलगैयहगांवसेकहोकेसैकेजीजे॥होतरहैमनपोमतिरा
मकहूवनजायवडोतपकीजे॥ह्वैवनमालहियेलगियेऔरह्वै
मुरलीअधरारसलीजे॥अनव्याहीकहूपुरुषसोअनुरागीजो
होय॥ताहिअनूढाकहतहै कविकोविदसवकोय॥अथगु

स्रालक्षन॥ दोहा॥ सुरतिछिपावैजोतियासोगुप्ताउरत्रानि॥ वरनतकविमतिरामयोचतुराईकीखानि॥ सोतीनप्रकारहै भूत भविष्यवर्तमान॥ जोभईवातकोदुरावैसोभूत॥ जोवर्तमान दुरावैसोवर्तमान॥ जोहोनहारदुरावैसोभविष्य॥ अथभूतगुप्ता॥ कवित्त॥ जौरजगीजमुनाजलधारमेधायधसीजलकेलकीभाती॥ त्योपदुमाकरपैरचलेंउछलेंजूतरंगतुरंगबिभाती॥ टूटेंहराछराछूटेंसवैसरावोरभईअंगियारंगराती॥ कोकहलोयहमेरीदसागहतोनगुविंदतौमैंवहजाती॥ अथभविष्यगुप्ता॥ कवित्त॥ आजुतेनजैहौंदधिवेचनधौआइखाउभैपाकीकन्हैयाउत्तठाढोईरहतहै॥ कहेपदुमाकरत्योंसांकरीगलीहैअतिइतउतनाजवकोदोऊनलहतहै॥ दौरदधिदानकाजऐसोकमनेतकान्हआलीवनमालीआनिवहियागहतुहै॥ भादौंसुदीचौथकोलखोहैमृगुअंगतातेसाचहूंकलंकमोहिंलागनचहतहै॥ अथवर्तमानगुप्ता॥ कवित्त॥ छूटजातगहयाकीबिलइयाचाटिचाटिजातकौनदसदैयादैयासोचउरधात्योंमे॥ होइनाजिवैयाओसहैयानिजसैयातेरैकरिगोकन्हैयाहासहोइगोविचारोमे॥ ग्वालकविहियालौकोअवैयानिर्दइयायहीआजयासमैयाओटपइयागहिपात्योंमे॥ भैयाकोबोलावोजोकन्हैयाकोकरैकुहालदधिकोचुरैयामैयापकरिपछात्योंमे॥ अथविदग्धालछन॥ सोदोप्रकारकोहै। एकवचनविदग्धाओएकक्रियाविदग्धा॥ अथवचनविदग्धालक्षन॥ करैवचनमेचातुरीवचनविदग्धाजानि॥ करैक्रियासोचातुरीक्रियाविदग्धामानि॥ उदाहरन॥ दोहा॥ खततिहारेधानकोयोबूझतमुसकाय॥ इहैहमारोहैकह्यो सघनज्वारदरसाय॥ अथक्रियाविदग्धा॥ दोहा॥ करिगुलालसोंधुंधुरितसकलग्वालिनीग्वाल॥ रोरीमीडनकेसुमिसगोरीगहेगोपाल॥ अथलक्षितालसन॥ जिसनायकाकीपीतकोनोभातिसेदूसरेकोलखितहोजाय सोलक्षिता॥ उदाहरन॥ कवित्त॥ अंगनमरोरिअरसोहीअ·

खियानदेखैंअरसीरसीलीगिरीवेंदीभालपरकी॥छूटसीसफू
लटूटघोवेनीफूलअनेदतगजमुक्तानकीललितलरलरकी॥
करकीचुरीहैचारुसरकीपलौटिसारी उन्नतउरोजनमेंञ्ञा
गीञ्ञैचदरकी॥ञ्ञौरैभइलालीञ्ञधरानहूंकीमेरीञ्ञालीदुरे
नादुरायेपायमालीलशंकरकी॥ञ्ञथकुलटालस्सन॥ञ्ञष्ट
जामतियकामवसवहुनायककीचाह॥ताकोकुलटाकहत
हैकविजनसिंधुञ्ञथाह॥कवित्त॥योञ्ञलवेलीञ्ञकेलीकहूं
सुकमारिसिंगारसेंकैकैचलै॥त्योंपदुमाकरएकनकेउरमेंरस॰
वीजनवैचवैचलै॥यकनसौवतुरातकछूछिनएकनकोम
नलैचलैलैचलै॥एकनकोतकिघूंघटमेंमुखमोरकनैनीखदे
चलैदैचलै॥ञ्ञथमुदितालस्सन॥जोपीतमकोसंकेतसुनिकै
मुदितहोयसोमुदिता॥सवैया॥सासुरेञ्ञाईसरोजमुखीवि
रुखीरुखमायकेकेसुकयाके॥पासपरोसकेभौनकेलखीखि
रकीनिजभौनकेनाके॥व्योतवन्योहितकोहितचाहिचढयो॰
चितञ्ञानंदञ्ञंदकेचाके॥फूलिगयेकुचकंचुकीजूटिगयेवंददू
टितडाकतडाके॥ञ्ञथप्रथमञ्ञनुसैनालस्सन॥जोसंकेतभृष्ट
देखिकैदुषकरैसोपहिलीञ्ञनुसैना॥कवित्त॥ऊखउखरतदु
षरतसोकहीजायढोलकोबजायभीरपायञ्ञभुञ्ञानिहैं॥कहै
कवितोषवनितानपगगहैञ्ञानि वातनवनायपानदीन्हेग
हिपानिहै॥ऊखञ्ञरहरसनवनञ्ञासौराखिहैजोभांतिभांति
ताहिहमसवसुरवदानिहै॥भानिहैजोकोऊताहिभांनिभानि
खैहैहमहुकुमभवानीकोनमानिहैसोजानिहै॥ञ्ञथदूस
रीञ्ञनुसैनाकोउदाहरन॥दोहा॥निघटतफूलगुलाबकेध
रतीक्योनहीधीर॥ञ्ञमलकमलफूलनलगेविमलसरोव
रतीर॥ञ्ञथतीसरीञ्ञनुसैनाकोउदाहरन॥दोहा॥कलक
रीलकीकुंजमेउठतञ्ञतरकीबोय॥भयेतोहिभाभीकहाउठी॰
ञ्ञचानकरोय॥इतिपरकीया॥ञ्ञथगनिकालस्सन॥गनिकाउ
सकोकहतेहैकिजोकेवलधनसेकामराखै॥उदाहरन॥कवित्त

आरसोऔरतसम्हारतनसीसपरगजबगुजारतगरीवनकी॰
धारपर॥कहैपदुमाकरसुगंध सरसा तवैसेविथुरेविराजै
वारहीरनकेहारपर॥छाजतछवीलेछ्हरिछराकिछोरभोरउठि
आईकेलमंदिरकेद्वारपर॥एकपगभीतरसोएकदेहरीपैधरै
एककरकंजएककरहैकेवाडपर॥अबयेजानोचाहियेकि॰
जोसुकियापरकीयासामान्यायेतीनजोवरननकियासोसम
यपाकरसुग्धामध्याप्रोढाहोजातीहैऔरयेहीक्रमकरकैदस
प्रकारकीहै॥प्रोषितपतिका॥खंडिता॥कलहांतरि ता॥वि
प्रलब्धा॥उत्कंठा॥वासकसज्जा॥स्वाधीनपतिका॥अभि
सारिका॥प्रवत्स्यतपतिका॥आगतपतिका॥अथप्रोषितप
तिकालक्षन॥जिसकापतिविदेसमेहोयऔरवहसोचकरै
॥कवित्त॥दत्तकविजादिनतेवालमविदेसगयेतादिनतेल॰
लनाअनंगकीछुरीहै॥निसदिनओठेजामदहतहैवाहीओ
रआगुरीनछालेपरगिनतधरीहै॥सोचनकीवतियासकोचन
दुरावतिहैमोचनचहतप्रानऔधिकीधरीहै॥इन्दुवधूजेभा
लगिविरहअचंभालगिकंचनकेखंभालगिरंभासीखडीरहै
॥अथखंडितालक्षन॥जिसकापतिदूसरीनायकासेरमनकरि
कैभोरसमेआवेऔरउसकेरतिकेचिन्हदेखिकेदुखितहोय
सोखंडिता॥कवित्त॥वैठीपरजंकपैनवेलीनिरसंकजहांजागी
जातिजाहिरजवाहिरकीजामेजो॥ कहैपदमाकरकहूतेनं
दनंदनहूओचकहीआइअलसायेप्रेमपागेयों॥झपकोहै
पलकनपियाकेपीकलीकलखिझुकिझहरायहूननेकअनु
रागेत्यों॥वैसहीमयंकमुखीलागतनअंकहुतीदेखिकैकलं
कअवयेरीअंकलागेक्यो॥अथकलहांतरि तालक्षन॥
दोहा॥कलहकरैनिजनाहसोंपुनिपाछेपछिताय॥कलहांत
रिता नायकाताहिकहतकविराय॥क॰॥सीसीकिसीसीकिहियो
कसकिउठैयाहीअपसोसनकढैनाभौनकोनेसो॥येकतन
लागेमुक्तानकेअनेकहारवकसीदराजकाजरूपेसोनसोनेसो॥

भनतकविंदऐसेनाहतेगुनाहविनकियोमैविगारटारेटरैकहा टोनेसो॥ येरीमोकुमितमोसोकरूहकरायोअवसुलहकरा वैकौंनसांवरेसलोनेसों॥ अथविप्रलब्धालक्षन॥ जोनायका संकेतमेजायकरपतिकोनापाकरदुखितहोयसोविप्रलब्धा ॥ कवित्त॥ चलीमतिरामप्रानप्यारेकेमिलनकाजनेसुकनिहा रकैविगारकाजघरको॥ पियरेवदनदुखहियरेसमाइरह्योकुं जनमेभयोनामिलापगिरधरको॥ विसरेविलासवैविलाइगयो हासछायोसुंदरकेतनमेप्रतापपंचसरको॥ तीक्षनजुन्हाईभ ईग्रीषमकोघामभयोभीषनपपूषमानुभानुदुपहरको॥ अथ उत्कालक्षन॥ जोनायकासंकेतमेजाकरपतिकोआगमनपर खेसोउत्का॥ कवित्त॥ वैठीरंगरावटीमेहेरतपियाकीवाट आयेनाविहारीभईनिपटअधीरमैं॥ देवकीनंदनकहैस्याम घटाघेरिआईजानीगतिडरानीभयभीरमे॥ सेजपैसदाशिव कीमूरतिबनायपूजीतीनडरतीनौकीकीन्हीतनवीरमे॥ पाष नमेंसावरो सुलाषनमेअषेवटताषनमेलाषनकीलिखीतसवी रमै॥ अथवासकसज्जालक्षन॥ जोनायकासेजसवारकेपति हेतसंकेतमवैठैसोवासकसज्जा॥ कवित्त॥ घासेरवसकानेव नकुंजनवरसानेतहंखानेमोदखानेसोसुगंधसरसानेहै॥ सु कविहरदेसगिरधारीजीतिहारेकाजवैठीवहदीपतिविहारठान ठानेहै॥ सेजचुनिकुसुमगुलावआवदारुचारुवरसमीपदीप कसवरससरसानेहै॥ सखीललितानेवृषभानकीसुतानेताने ललितलतानमेवितानताननतानेहै॥ अथस्वाधीनपतिकाल क्षन॥ जिसनायकाकेवसमेपतीवनारहैसोस्वाधीनपतिका ॥ कवित्त॥ चाहभरयोचंचलहमारोचितनौलवधूतेरीचालचं चलचितौनमेवसतुहै॥ कहैपदमाकरसुचंचलचितौनहूते औझकिउझकिझिझकीनमेफसतुहै॥ औझकउझकिझिं झिकीनतेसुरझिवैचाहीकीगहनमैसोआनिविलसतुहै॥ वा हीकीकहनितेसोनाहीकहनआयोनाही–कीकहनितेसु

नाहीनिकसतुहै॥ अथअभिसारिकालक्षन॥ जोनायकाशृं
गारकरकैपतिकैनिकटमिलिवेकोअभिसारकरैसोअभिसा
रिकासोतीनप्रकारहै॥ शुक्ला॥ कृष्णा॥ दिवा॥ उदाहरन॥
अथशुक्लाअभिसारिका॥ कवित्त॥ तनकीगोराईतरुनाईः
कीनिकाईछाईजाकीउजराईतेउजारहूलजातहै॥ सरदनि
सामेरामविसदसिंगारसाजिगजगमनीकीनीकीसोभासर
सातुहै॥ चलीअनुरागमनमनमोहनकेमिलिवेकोचांदनीमे
मिलगईकाहूनालखातुहै॥ लपटसुगंधनकीउपजतहैआः
छेअंगताहीकीतरंगलगीसंगसखीजातुहै॥ अथकृष्णा॥
कवित्त॥ सूझतनगातवीतिआईअधरातअरुसोयेजानयु
रुजनसकलघरके। छिपकैछवीलीअभिसारकोकेवाडखोल्योपु
लिगेसुगंधचारुचंदनअगरके॥ देवगुंजिगुंजिआईकुंजन
तेभौरभीरपूछिपूछिपीछेपरेपाहरुडगरके॥ देवताकिदामि
नीमसालकीधौजोतिज्वालझ्गरेमचतजागेसगरेनगरके॥
अथदिवाअभिसारिका॥ कवित्त॥ सारीजरतारीकीझल
क झलकततैसीकेसरकोअंगरागकीन्हेसवतनमे॥ तीक्ष
नतरनीके किरनतेदुगुनजोतिजगतिजवाहिरजडितआ
भरनमे॥ कविमतिरामआभाअगनिअंगारनकीधूमकेसी धार
छविछाजतकंचनमे॥ ग्रीषमदुपहरीमेहरिकोमिलनचलीः
जानीजातनारी नादवारीजातवनमे॥ अथप्रवत्सितपति
कालक्षन॥ जिसनायकाकापतिपरदेसजायकोत्यारीकरकै
जानचहतहोयउससमयदुखकरैसोप्रवत्सितपतिका॥ अ
थकवित्त॥ संगरह्योसुखसंगलह्योकवहूनभयोकसकैपल
न्यारो॥ छोडिकैताहिचलोचहैपीतमकैसेरहैतुमहीधौविचा
रो॥ प्राननकोअरुपीतमकोहठदेखनोहैअवहोतसवारो॥
कोचलिहैधौअंगारसखीयहदेहतेप्रानकीगेहतेप्यारो॥ अ
थआगतिपतिका॥ जोपतिकोआगमनसुनिकैप्रसन्नहोयसो
आगतिपतिका॥ कवित्त॥ आजुहैपूरनमोमनसावडीभागसो

कीन्हीरूपाव्रजहै॥राजहैकोटनवोनिधकेसीधिआठौलिए
सकेग्रहकाजहै॥काजहैआनंदकोकरिवोयहलोकअलौकि
येतौजिय लाजहै॥लाजहैआलीकहाकरियेवनमालीमिले
दिनसोनेकेआजुहै॥ इतिदशनायकासमाप्तम्॥ अबयेभी
जानाचाहियेकिइनदशनायकाकेसेवायहोनायकाऔरभी
है येकअन्यसुरतदुखिता दूसरीमानिनीसोमानिनीतीनप्रका
रकीहै रूपगर्विता प्रेमगर्विता गुनगर्विता॥ अथअन्यसंभो
गदुखितालक्षन॥ निजपतिकेरतिचिन्हजोलखैऔरतियदेह
॥अन्यसुरतिदुखिता कही कैपंचसो तेह॥ कवित्त॥ धोई
गईकेसरकपोलकुचगोलनकीपीकलीकअधरअमोलनलगा
ईहै॥कहैपदुमाकरत्योनैननहूंनिरंजनभैतजतिनकंपदेहपु
लकनछाईहै॥बादमतिठानैझूठवादिनभईरीअबदूतपनो
छाडिधूतपनमैसुहाईहै॥आईतोहिपीरनप राईमहापापि
नतूंपापीलौंगईनकहूवापीनाहयआईहै॥ अथमानिनील
क्षन॥पियसोकैरजोमानतियव हैमानिनीजान॥ ताकोक
हतउदाहरनदोहाकवितवरवान॥वहवक्रोक्ति गर्विताहिवि
धकहतरसधाम॥ प्रेमगर्विताएकपुनिरूपगर्विताताम॥करे
प्रेमकोगर्वजोप्रेमगर्विता नारि॥रूपगर्विताहोयवहरूपगर्व
कोधारि॥अथरूपगर्विताकोउदाहरन॥ कवित्त॥ कंचनको
रंगुरीनजानोजातअंगुरीनतेसीपुलीषरीछविखागाकेछला
नकी॥ कहाकहौनायनसोपायनमहावरैएडिनकोलालीआ
लीअतिहीमलानकी॥रूपकोसदनमेरोवरनविलोकिकाहि॰
लागतजोन्हाईनीकीसोरहौकलानकी॥जादिनतेलालनलो॰
नाइलखिलोपननतादिनतेआनकरीआनअवलानकी॥अ
थप्रेमगर्विता॥ उदाहरन॥ कवित्त॥ मोविनमाइनखापकलू
पदुमाकरत्योभइभावीअचेतहै॥ वीरनआयेलिवायवेकोति
नकीमृदुवानिहूंमानिनलेतहै॥ प्रीतमकोसमुझावतिक्योनही
एसखीतूजुपैराखतहेतहै॥ओरतोमोहिसवैसुखरीदुखरीय

हैमाइकेजाननदेतहै॥ अथगुनगर्बिताकोउदाहरन॥ कवित्त सानन बोलाऊंढ्हाइकबिनाछुवाऊंमुरलीधुनिनचाऊंओल गाऊंचोटतानकी॥ टोनानाकराऊंचतुराइमेरिझाऊंसुर्तिकी नकीबजाऊंओभुलाऊंमतिकानकी॥ सारीचुनवाऊंमैकिन रीटकवाऊंजेसेघायलघुमाऊंतोधोआईपंचवानकी॥ बे धौद्रिगकोरओमरोरिमोरिभौहनमेंडोरनमेडोलेतोमेबेटी वृषभानकी॥ इति॥ औरयेसब नायकातीनप्रकारकीहोतीहै॥ उत्तमा॥ मध्यमा॥ अधमा॥ अथउत्तमालक्षन॥ दोहा॥ पि याहितुकैअनहितकरेआपकरैहितनारि॥ ताहिउत्तमानाय काकविजनकहतविचारि॥ अथमध्यमालक्षन॥ दोहा॥ पियाअपराधअनेकनिजआंखिननहूंलखिपाय॥ तियऐसे हू कंतसोमानेकरतलजाय॥ अथअधमालक्षन॥ पियासो हितहेहितकरेअनहितकीन्हेमान॥ ताकोअधमाकहतहैक बिमतिरामसुजान॥ इतिनायकासमाप्तम्॥ अथनायकल क्षन॥ दोहा॥ तरुनसुघरसुंदरसकलकामकलानप्रवीन॥ नायकसोमतिरामकहिकवितगीतरसलीन॥ कवित्त॥ सुख सुखकंदलखेलाजेदासचंदओपचोपसेचुभतनैनगोपतनु जानके॥ तेसोसबसासनकेबसनहिशेकिमालकाननकेकुं डलबिजायठभुजानके॥ नासालखेसुकतुंडनाभीपैसुरसकुं डरदहैदुरदसुंडदेषतदुजानुके॥ नलकोनलीजेनामकामहू कोकहाकामआगेसुखधामस्यामसुंदरसुजानके॥ सोनाय कचारप्रकारकेहै॥ अनकूल॥ दक्षिन॥ धृष्ट॥ सठ॥ अथअ नकूललक्षन॥ जोसेवायएकस्त्रीअपनीकेदूरसेकामनरखे सोअनकूल॥ कवित्त॥ नैनअनुहारनीरनीरजनिहारैबैठेबेन अनुहारबानीबीनकीसुनोकरै॥ चरनकरनरदछदनकीला लीलखेताकेदेखिबेकोफूलजपाकोलुनोकरे॥ रघुनाथचाल हेतगेहबीचपालिराखेसुघरेमरालआगेमुक्ताचुनोकरै॥ बा लतेरेगातकीगुराईलखिवेकेहेतप्यारेनंदलालमालचंपेकी

गुनोकरै॥ अथदक्षिनलक्षन॥ जोबहुतयुवतिनसोंप्रीतसम
राषैऔसबप्रसन्नरहैसोदक्षिन॥ कबित्त॥ गुडहरगेदागुल
सब्बोसीबिसालछबिलालकचनारसीअनारसनमानीहै॥
सूरजमुखीसीगुलचंपासीजपासीसोहैदेवकीनन्दनगुल्लाला
समजानीहै॥ वेलीसीचमेलीसीजुहीसीसोनजुहीसमसेव
तीगुलाबगुलदावरीप्रमानीहै॥ कल्पतरोवरसोफूलोब्रजरा
जब्रजवारीऔरललनालसीसीलपटानीहै॥ अथधृष्टल
क्षन॥ जोपुरुषपरनारीभोगकरैऔरअपनीस्त्रीकीसंकाल
जनकरैसोधृष्ट॥ सवैया॥ उपरौनाधरेसिरभावतीकोप्रति
रोमपसीननच्वैनिकसै॥ मुसिक्यातइतैपरदासससवैगुरलो
गनकेढिगव्हैनिकसै॥ गुनहीमहराउपटयोहियमेंतेहिबी
चनखच्छदहैनिकसे॥ गृहआवतहैबृजराजअलीतनलो
जकोलेसनछ्वैनिकसे॥ अथसठलक्षन॥ जोपुरुषबचनम
धुरबोलेऔअंतसमेंकपटरखैसोसठ॥ कबित्त॥ होतो
निर्दोषदोषकोहेकोलगावैमोहिजैसीचाहैतैसीमेसोसपथ्थर
टापले॥ त्रिवलीत्रिवेनीनाभीकुंडमेंसिझेदेखुसोझेतोसुजा
नमानकीन्होसोघटापले॥ कुचकीकुटीपरशिवतपसीबिरा
जमानतापैधरापहाथसेसहूंमिटायले॥ कोपकीपावककपो
लगोलालाल्कररवलारववारमोसोजीभनचटापले॥ इन
चारोनायककेसेवायतीनप्रकारकेनायकऔरभीहै॥ पति॥
उपपति॥ वैसिक॥ पतिवहजोकेवलअपनीनारीसोप्रीतकरै
उपपतिवहजोपरकीयासोप्रीतकरै॥ वैसिकउसकोकहतेहै
जोगनिकानसोप्रीतकरै॥ अथउपपतिकोउदाहरन॥ सवैया
॥ आछेकियेकुचकंचुकीमेघटमेंनटकेसवटाकरिवेको॥ मो
द्रिगदूपैकियेपदुमाकरतोद्रिगछूटछटाकरिवेको॥ कीजैक
हाविधिकीविधिकोदियोदारुनलोहटपटाकरिवेको॥ मेरोहियो
कदिवेकोकियोतियातेरीकटाक्षकटाकरिवेको॥ अथवैसक
कोउदाहरन॥ कबित्त॥ सवनकीभौहैवकमटोमेसमातलंक

द्रिगनपेपंकजातखंजनखगीनको॥भनतकविदजिनपर॰ वारिडारियतआसुरीसुरीनहूकोपन्नगीनगीनको॥वैसक रिसिकलियेलगनवधूटीसंगमनमनमथवूटीरंजतीरगीन॰ को॥दूरियायातेएकौनाहिंपूरियाकेप्रेमकस्तूरियामृगाज्यो मोहिरोषतमृगीनको॥ औरजैप्रकारकेनायकाहेतईप्रकार केनायकभीहोतेहैपरंतुमैनेइसलियेनहीलिखाकिनायकान केलछनजोऊपरलिखिआयेहैउसीकोपलटकैचतुरजनजान लेइगें॥ इतिनायकसमाप्तम्॥ अथदरशन॥ सोचारप्रकारके है॥स्वपन॥साछात॥चित्र॥स्रवन॥ अथस्वप्नकोउदाहरन॥ ॥कवित्त॥आयेकान्हद्वारिकापेराधेउठिवेगदेषोकाहूनेखबि रिआनिदीन्हीहैसुधामई॥केतकदिनानहूकीतलवमिटाय वेकोहाहाकविदेवदौरिदेषनतहांगई॥झूठेसुखस्वपनेहूक रननपाईआलीदईनिरदईआनितुरतजगादई॥जवलौभरिनै ननिवहमूरतिनिहारदेखौतवलौनेनछोडिनीदवैरनिविदाभ ई॥ अथस्रवनकोउदाहरन॥दोहा॥जैसोतैवरनोसखीरूपका नकोआय॥तैसोईमेरेचखनरह्योआनिठहराय॥ अथचित्र कोउदाहरन॥ दोहा॥चित्रहुमेजाकेलखेहोयअनंतअनंद ॥सपनेहूकवहूसखीसोमिलहैव्रजचंद॥ अथसाछातदर शनकोउदाहरन॥दोहा॥लालतिहारेरूपकीकहौरीतयहको न॥जासोलागतपलकद्रिगलागतसोनपलौन॥ अथउद्दी पनभावलछन॥दोहा॥चंदकमलचंदनअगररितुवनवा गविचार॥उद्दीपनसिंगारकेजेउज्जलसंभार॥उदाहरन॥ दोहा॥प्रथमकामिजनमननिकोरमतिसुरभिरितुराज॥मं डततेहेनवपल्लवनिपुनिपीछेवनसाज॥ अथसखीलछन॥स खीउसेकहतेहैकीजिस्सेनायकनायकाअपनेमनकीबाते कहतेहैकुछदुरावनहीरखतेहै सोसखीकेचारक्रमहै॥दोहा ॥मंडनऔरउराहनोसिछाऔपरिहास॥चारक्रमहैसखि नकेलहैनायकासाथ॥ अथमंडनकोउदाहरन॥ दोहा॥स

खीतियाकेदेहमेंसजेसिंगारअनेक॥काजरारीअखियानमें
भूल्योकाजरदेत॥अथउपालंभलछन॥दोहा॥वाकोमनली
न्हेंललावोलेोबोलरसाल॥झुकतिततनकहीबातमेललितवे
लवरबाल॥अथसीक्षालछन॥उदाहरन॥दोहा॥कितसज
नीव्है अनमनीअसुवारतीनिसंक॥वडेभागनंदलालसेझूठ
हुलगतकलंक॥अथपरिहासकोउदाहरन॥दोहा॥प्रभातेरो
नालालकीपरीकपोलनआनि॥कहांछपावतचतुरतियकं
तदंतछतजानि॥अथदूतीलछन॥दोहा॥तूतीलोबोलेकरै
हरैविरहकीवान॥मिलवैनायकनायकासोदूतीपरमान॥सो
दूतीतीनप्रकारकीहै॥उत्तम मध्यम अधम॥उत्तमवहहै
किजोनायककेगुण वरननकरैऔरुपकीप्रसंसाकरिकैनाय
काकोनायकसोमिलावैऔमध्यमवहहैकिजोमधुरकटुमि
श्रीतवचनकहै अधमउसकोकहतेहैंकिजोसदीववव्यंगबो
ले॥अथउत्तमकोउदाहरन॥सवैया॥लेवलीहठिल्याई
हौलालकोलोककीलाजहुतेलरिरासो॥फेरिइन्हेसपनेहूनपे
यतलैअपनेउरमेधरिराखो॥देवललानवलाअवलायहचंद
कलाकलाकरिराषो॥आठहौसिद्धिनवोनिधलैघरभीत
रवाहेरहूभरिरासो॥अथमध्यमदूतीकोउदाहरन॥कवित्त॥
मानोजूमानोनमानोतौहमकहामानुषकेरुठेसमानुषमना
पहै॥रुपकोगरुरकरिवैठीहोवलिजाऊतुमकोमनावनको
ऊदेवतानआइहै॥मानोहठछाडिआलीचलोब्रजनागरपै
रजनीकेवीतेससिफीकोसोदेखायहै॥अथअधमदूतीको
उदाहरन॥कवित्त॥अलिनकीभीरदेखोअलीनकीभीरदे
खोअलिनलतानफूलफूलेबहुरंगना वैठीकहाभीतरहैवैठीकहा
भीतरहैवैठीकहाभीतरहैसातेरेसंगना॥सरसकीगहनि
तजितजियेगहनवेगिकीजियेगहनिवेगिऐसीतूनअंगना॥
चाहैदेवांगनासोठाढीतेरेअंगनाअनोखीतूहीअंगनासोए
कोतेरेअंगना॥अथभावलक्षन॥भावउसकोकहतेहैं कि

जोनैनवैनमृदुहास्यमुसिक्यानआदिसेजोप्रगटैसोभाव॥
उदाहरन॥ कवित्त॥ गहिहाथसोहाथसहेलीकेसाथमेंआव
तिहींव्रषभानलली॥ मतिरामसुवासतेआवतनीरेंनिवारत
भौरनकीअवली॥ लखिकेमनमोहनकोसकुचीकरयोचाहे
अपनीओटअली॥ चितचोरुलियोहगजोरतियामुखमोरकछू
मुसकायचली॥ अथअनुभावलक्षन॥ दोहा॥ तेअनुभावे
जानियोजेहैंसात्विकभाव॥ रसग्रन्थंअवलोकिकेवरनतसब
कविराव॥ सोअनुभावआठप्रकारहै॥ स्तंभ॥ स्वेद॥ रोमांच
॥ स्वरभंग॥ कम्प॥ वैवनी॥ आसू॥ प्रलाप॥ अथस्तंभलक्षन
॥ जहांलज्जाओहर्षादिकरिकैअंगचलनसकैसोस्तंभ॥ उदाह
रन॥ दो०॥ पाईकुंजएकंतमेंअंकभरीव्रजनाथ॥ रोकनकोतिय
करतुहेकहोकरतनहिहाथ॥ अथस्वेदलक्षन॥ जहांहर्षला
जभयकोप श्रमादिकसेपसीनादेहतेप्रगटहोयसोस्वेद॥ उ
दाहरन॥ दोहा॥ कुचतेश्रमजलधारिचलिमिलिरोमावलिरंग
॥ मनोमेरुगिरतरहठीभयोसितासितसंग॥ अथरोमांचलक्ष
न॥ हर्षभयादिसेजहांसरीरकेरोमखडेहोजायसोरोमांच॥
दोहा॥ जौनअंगढिगव्हैखडीछुईछैलकीछांह॥ अवहूलौअ
वलोकियेपुलकपटलतामांह॥ अथस्वरभंगलक्षन॥ जहां
क्रोधहर्षभयभीतमदतेवोलीकास्वरवदलजायसोस्वरभंग॥
॥ दोहा॥ कहाजनाववबातवहकहाचढावतिभौंह॥ अथनि
करेअधरानसोसोहेकीजतिसौंह॥ अथकंपलक्षन॥ क्रोधह
र्षभयादिसेजहांअंगथरथरायसोकंप॥ दोहा॥ लालवदनल
खिवालकेकुचनकंपरुचिहोति॥ चपलहोतचकवामनोचाहिचंद
कीजोति॥ अथवयवर्न लक्षन॥ जहांक्रोधभयमोहादिकसेवरन
औरप्रकारहोजायसोवयवर्न॥ उदाहरन॥ दोहा॥ वालरहीइ
कटकनिरखिलालवदनअरविंद॥ सियराईनैंननपरीपियराईमु
खचंद॥ अथ आंसूलक्षन॥ जहांहर्ष याभयसोंनेत्रमेआसुभ
रिआवैसोआसू॥ उदाहरन॥ दोहा॥ विनदेखेदुखकेचलैदेखे

सुखकेजाहिं॥कहौलालइनद्रिगनकेआसूक्योठहराहिं॥
अथप्रलापलक्षन॥जहांतनमनकासम्हारनरहैऔसुखसे९
आउवाउवकैसोप्रलाप॥दोहा॥तोमेअनमिखमैनताभोह
नमूरतिमैन॥अनमिखनयनसुनेनयेनिरखतअनिमिषनैन
॥अथजंभालक्षन॥जहांआलस्यतेअंगडाईआवैऔजंभा
ईलेयसोजंभा॥दोहा॥आयेपीवविदेसतेबहुतेद्योसबिता
य॥सखीउठाईपासतेसांझहितेजमुहाय॥अथश्रृंगाररस
लक्षन॥जहांनायकनायकाकेविलासमेरसउपजैसोश्रृंगाररस
॥यहश्रृंगाररसदोप्रकारकाहै संयोगऔरवियोग॥अथसंयो
गश्रृंगारलक्षन॥जहानायकनायकापरस्परविलासकरैसोसंयो
गश्रृंगार॥दोहा॥छुअतिपरसपरहेरिकेराधानंदकिसोर॥सब
मेंहूहीहोतहैचोरमहीचनचोर॥इतिसात्विकभाव॥अबयह
भीजानाचाहियेकिसंयोगश्रृंगारमेंदसहावहैं॥अथहावल
क्षन॥नारिनकेश्रृंगारकेकारनसेजोमनमेतरंगउठैसोहावसो
दशप्रकारकेहैं॥ लीला १ विलास २ विछित्त ३ विभ्रम ४ कल
किंचित ५ मोटा ६ कुटमित ७ बिंबो क ८ ललित ९ विहित १०
अथलीलाहावलक्षन॥जोस्त्रीपुरुषकावापुरुषस्त्रीकाभेषक
रैसोलीलाहाव॥दोहा॥मेरेसिरकैसीलगेयोंकहिबांधीपाग
॥सुंदररतिविपरीतमेंकियोप्रगटअनुराग॥ अथविलासहा
वलक्षन॥जोस्त्रीअपनेपतिकोकेलसमैनानाप्रकारसेप्रसन्न
करैसोविलासहाव॥दोहा॥समुझिश्यामकोसामुहेकरते
वारबगार॥मनमोहनमनहरनकोलगीकरनश्रृंगार॥अथ
विछित्तहावलक्षन॥जोनायकाकेअल्पहीबनावमेंनायक
प्रसन्नहोजाइसोविछित्तहाव॥दोहा॥नथुनीगजमुक्तान
कीलसतिचारुश्रृंगार॥जनिपहिरैसुकमारतनऔरअभूषन
भार॥अथविभ्रमहावलक्षन॥जहानायकाउलटाश्रृंगारक
रैसोविभ्रमहाव॥दोहा॥ चलीअलीकहिकौनपैवडेकौन
केभाग॥उलटिकंचुकिकुचनपैकहेदेतअनुराग॥अथकल

किंचितहावलक्षन॥ जहांरोषऔरहांससंगहोयसोकलकिंचितहाव॥ दोहा॥ सकुचिनरहिऐसावरेसुनिगरवीलेवोल॥ चढितभौंहविकसीतनयन विहसतगोलकपोल॥ अथमोटाहावलक्षन॥ जोनायकाअपनेभावतेकीचाहकीवातैसुनिकैप्रसन्नहोयसोमोटा॥ दोहा॥ झूठेहूजगमेलग्योमोहिकलंकगोपाल॥ सपनेहूकबहूंहियेलगेनेतुमनंदलाल॥ अथकुटमितहावलक्षन॥ जहांनायकानायकसोंदुखसुककीबातैअपनीप्रगटकरैसोकुटमित॥ दोहा॥ पीतमकोमनभावतीमिलतवाहदैकंठ॥ वाहीछुटैनकंठतेनाहीछुटैनकंठ॥ अथविंवोकहावलक्षन॥ जहांनायकानायककोअभिमानकरिकैनिरादरकरैसोविंवोक॥ दोहा॥ प्रानपियारोपगपरयोचूनललखतयहिओर॥ ऐसेउरजकठोरतोन्यायहिउरजकठोर॥ अथललितहावलक्षन॥ दोहा॥ वनेमानिकनसोंसरससकलआभरनअंग॥ ललितहावतासोकहतजेकविवुद्धिउत्तंग॥ उदाहरन॥ वीरीअधरअंजननयनमेहदीपगअरुपानि॥ तनकंचनकेआभरननीठपरेपहिचानि॥ अथविहितहावलक्षन॥ जहांनायकाकीनायककेसमीपअभिलाषपूरीनहोयसोविहित॥ दोहा॥ रूपसावरेसांचहैसुधासिंधुमेंरवेल॥ लखिनसकैअखियांपरीलाजकामकीजेल॥ इतिसंयोगशृंगार॥ अथवियोगसिंगारलक्षन॥ वियोगशृंगारउसकोकहतेहैंजहांनायकनायकाकावियोगहोयसोतीनप्रकारहै॥ पूर्वअनुराग॥ मान॥ प्रवास॥ अथपूर्वअनुरागलक्षन॥ जहांपहिलेहीदेखनेयासुननेसेअनुरागबढैऔमिलापनहोयसोपूर्वअनुराग॥ दोहा॥ निसदिनेहदुहूनकोनईदईयहवात॥ सूषतदेहदुहूनकीज्योपानिपसरसात॥ अथमानलक्षन॥ सोमानतीनविधिहै॥ गुरुमान॥ लघुमान॥ मध्यमान॥ अथगुरुमान॥ जहांनायकाअपनेपतिकोदूसरीस्त्रीसोबोलतदेषकेमानकरैसोगुरुमान॥ दोहा॥ वहुनायकसोवातमेंमानभलेनसयान॥ दुखसागरमेवूडिहैवांधिमरोगुरुमान॥ अथलघु

मानलक्षन॥ जहांनायकानायककोदूसरीइस्त्रीकेनिहारतदे
खकैमानकरैसोलघुमान।दोहा॥चितवनिरूखेदृगनकीहासीवि
नुमुसक्यान॥मानजनायोमानिनीजानलियोपियजान॥ अथम
ध्यममानलक्षन॥ जहांनायकापतिकेमुखसेदूसरीस्त्रीकानाम
सुनिकेमानकरैसोमध्यम॥ दोहा॥ भईदेवताभावसबवहतुम
कोवलिजाऊं॥ वाहीकोमनध्यानहैवाहीकोमुखनांउ॥ अथ प्रवा
सलक्षन॥ जिसनायकाकोपति विदेसमेहोनेसेविरहअधिक
होयसोप्रवास॥ दोहा॥ चलतलालकेमेकियोसजनीहियेपखा
न॥ कहाकरैदर्कननहीइतेवियोगकृसान॥ औरवियोगशृंगा
रमेदसदशाभीकवियोनेवरननकीहैसोलिषतेहैं॥ अभिलाषल
क्षन॥ जिसनायकाकोपतिकेमिलनेकीचाहहोयऔरवहविदेस
होयसोअभिलाष। कवित्त। सुनिबोलसोहावनेतेरेअटायहटेक
हियेमेधरीपेधरी॥ मढिकंचनसोचपरेवेअनमेमुक्तालरैगूंधिभ
रैपैभरी। तोहिपालिप्रवालकेपीजरमेंऔरअौगुनकोटिहरीपे
हरी॥ बिछुरेपियाजोपेमहेसमिलेतोहिकागतेहंसकरौपेकरौ॥
अथचिंतालक्षन॥ जोनारीवियोगमेचिंतवनकरैसोचिंता॥ सवै
या॥ खोरिलौखेलनजातीनतौकहौआलिनकेमतमेपरतीक्यो
॥ देवगोपालहिदेखतीजोनतोयाविरहानलमेंवरतीक्यो॥ बावरीऽ
आमकीमंजुलवालसीमालसीव्हेउरमेअरतीक्यो॥ कोमलऽ
कूकिकोयलीयाझूरकरेजनकीकिरचैकरतीक्यो॥ अथअस
मृतलक्षन॥ जोनायकापतिकेगुनरूपकाअस्मरनकरैसोअ·
स्मृत॥ दोहा॥ सोभासुमिरतसुंदरीनवसनेहसोवाम॥ तनबूड
तरंगपीतमेमनबूडतरंगस्याम॥ अथगुनकथन॥ जोनायका
वियोगमेंपतिकेगुनकथनकरिकैविकलहोयसोगुनकथन॥
दोहा॥ सरदचंदकीचांदनीजारिडारिकिनमोहि॥ वामुखकीमु
सक्यानकोकेहूंकहौनतोहि॥ अथउद्वेगलक्षन॥ जहांविरह
विथाकरिमनघवरायसोउद्वेग॥ दोहा॥ जेअंगनपियसंगमेवर्ष
तहुतेपयूष॥ तेबिछुरेविछुडाकसेभपेमयंकमयूष॥ अथअ·

लापलक्षन॥जोनायकाविरहमेमुखसेंआउवाउवकैसो प्रलाप॥
दोहा॥विकललालकोवालतूक्योनवि लोकतआनि॥वोलिको
किलनसोकहैबोलितिहारेज्ञान॥अथउन्मादलक्षन॥जहानाय
काविरहमेछिनमगनछिनविकलहोयसोउन्माद॥दोहा॥रोइ
उठैछिनहसिउठेपुनिउठिचलैरिसाय॥वौरीकरीवनायतैरूप
ठगोरीलाय॥अथव्याधिलक्षन॥जहांविरहमेकामपीरातेकोनी
उव्याधिउपजैसोव्याधि॥दोहा॥देषिपरैनहीदूबरीसुनियेश्या
मसुजान॥जानिपरेपरजंकमेअंगआचअनुमान॥अथजडताल
क्षन॥जहाविरहकरिकैतनमनकीखबरनरहैसोजडता॥कवित्त
जगुरीजगावैजगुजगुरीजगैनाजगैरैनजोतिहोतिजोतिजागैजगु
जगुरी॥हारकीडगरडगडगरीपरततापेडगरीपरतडीलडोलैड
गडगरी॥देवगुनागरीउसासेभरेअगरीदवावेदंतअंगुरीअच
लअंगअंगरी॥लंकलगवगरीकलंकलगवगरीसखिनसंगव
गरीवखीचवगरी॥इतिदसदस॥औरयेभीजानाचाहियेवि
संचारीभीतेतिसप्रकारकेंहैसोहमइसकवितमेलिखदेतेहै।
जहांजैसाभावसंचरैउहाउसकावहीसंचारीजानौ॥कवित्त
॥कहिनिर्वेदग्लानिसंकासोंअसूयाश्रमदधृतआलसविषाद
मतिमानिये॥चिंतामोहस्वपनविवोधस्मृतिअमरखगर्वउतसुक
तासुअवहित्थठानिये॥दीनताहर्षव्रीडाउग्रतासुनिद्राव्याधिमर
नअपस्मारआवेगहुआनिये॥त्रासउनमादपुनिजडताचपलता
ईतेतिसौंवितर्कनामयाहीविधिजानिये॥दोहा॥याविधिसंचारी
सबैबरनतहैकविलोग॥जोजेहिरसमेसंचरैतेतहांकहिवेयोग॥
इतिनायकनायकाभेदसमाप्त॥अथवनिता भूषनवरनन॥दोहा
॥श्रीगुरुचरनप्रतापतेवरन्योकविताअंग॥कहतमतीअनुसार
त्योंवनिताकेप्रत्यंग॥कहीजोपूरवकविजननिजनिज मति
अनकूल॥उपमाअंगनकीकहौताहीकीसमतूल॥नपतेसिषलौव
रनियेउपमाराधारानि॥सिखतेनखलौमानुखीकविजनकरतव
खानि॥रहतसदाजाअंगपरलोभितनंदकुमार॥उपमाताहीअं

गकीबरनौमतिअनुसार॥ अथचरनवरननं॥ वार्तिक॥ चरनमे औरसबउपमातोसमानहैपरंतुजावकअवस्यचाहियेऔरअ तिकोमलपल्लवकमलसम॥ अथजावकउपमा॥ राग रजोगुन प्रभातकेरवि॥ रंगभूमी पराग अनुराग॥ अथविछुआउपमा॥ सोभाप्रभाहंस अथअंगुलीउपमा॥ चंपेकीकली॥ अथनष॥ तारा रवि ससि मनि सुमन नग॥ अथनूपुरउपमा॥ जंत्रसो चकगुन जाचक जसपाठक मधुपजामिक वंस्नवार॥ अथजे हरउपमा॥ कंकन माला साला सभा सीमा सोपान॥ अथउरु उपमा॥ हाथीकीसुंड कदलीकेखंभ॥ अथनितंबउपमा॥ चक्र पीठ थल पुल पीन॥ अथकटिउपमा॥ सूक्षम॥ अथउदरउपमा चल दल॥ अथरोमउपमा॥ तम धूम अलि लता अति चिक्क न॥ अथरोमराजीउपमा॥ खंजरीट नख रेख काम वनकी वें ली श्रृंगाररसकोसार॥ अथकुचउपमा॥ चक्रवाककमलकलि का गिरसिखरघटमठ गुच्छ फल दुंदुभी कुम्भ सिधौरामहादे व॥ अथभुजाउपमा॥ नागसुंड नाग धुजा॥ अथकरउपमा॥ पंकजपल्लव॥ अथकरनखउपमा॥ रत्न उरगन कुसुम॥ अथ मेंहदीउपमा॥ इन्दुवधू इन्द्रा प्रवाल॥ अथ ग्रीवउपमा॥ सं ख कबूतर कंठ॥ अथपीठउपमा॥ कनक सिला कदलिपत्र॥ अथअधरउपमा॥ बिंब पल्लव प्रवाल॥ अथदंतउपमा॥ मुक्ता दाडिम कुंद मनि हीरा॥ अथहासउपमा॥ जोति जोन्हा इ सुधा प्रकास मरीचका दामिनी॥ अथमुखवासउपमा॥ मदन जिविका सुखजननि विलासकीमनि मोहनी कपट कीक्रिपानी रतिसुखमा॥ अथमुखरागउपमा॥ अरुनोदय राजीवमें अंगराग अनुरागरूपभूपरतिराजको राजतसुख॥ अथरसनाउपमा॥ कोमल कोविद अमल अमोल रसन कीदेवी रसहिस्रवतमुखवोल॥ अथवानीउपमा॥ वीना वे नु अलि सुक पिक किंकिन गान सोभन सुभ वहुअर्थमय॥ अथकपोलउपमा॥ मुकुर मधूक समतिल प्रसून तूनीर सुक

नासिका॥ अथनासिकाउपमा॥ सुगंधिस्वास सिद्धिनकी
गुहा सुभसोभन सुवास पुष्प कामतून कुंदनकीसीवा लो
चनविलासनी मुक्ताकोछिद्र तोयकी तरंग॥ अथनासिका
मुक्ताउपमा॥आनंद कंदफलत्रिभुवनरूपताकोतुंग समु
द्रकीतरंग दीपमनि पतंग॥ अथलोचनउपमा॥चकोर चा
तिक कुमुद तुरग अंजनयुत अलिकामसरखंजन मीन कु
रंग॥अथअंजनउपमा॥ विष शृंगाररस तूल॥ अथभौंहउप
मा॥ लता पल्लव धनुष रेखा षड्ड सुपास हाथीकेकान॥अथ
कर्नउपमा॥ रागरवन भाजन भवन सोभन लाजकेलोचन
मनकेमंत्री मित्र अथकर्नेलवउपमा॥ मनिमयटंकयुग तर
नि चलचक्र केसरि कुसुम षुदिला तितुली संयुत श्रवन
उपमा॥ दोहा॥ चलदलसीतितुलीजनुपताकरथमीन॥सरस
करसअकासकेदीसतिदीपनवीन॥अथभालवरनन॥कनक
पट्टिका सोभाकीसभा अर्द्धचंद्र॥अथअलकउपमा॥चिलक
स्याम सुवास चंचल चारु सूक्ष्म॥ अथमुखमंडलउपमा॥
अमलमुकुर कोमलकमल अकलंकितचंद॥अथकेसपास
उपमा॥भौरचौर तमजमुनाकोजल मोरपक्ष॥ अथमांगवरन
न॥जस अनुरागरेख सूरसोमकर तमतेज गंगाजल जमुना
जल सरस्वती मिश्रितलीक अरुनजलज कसौटीमेसुरंग
लीक॥ अथसीसफूलउपमा॥कवित्त॥कीधौश्यामघनमेप्र
कासहैप्रभाकरको कीधौअंधियारीरैनमध्यआभाइंदुकी
॥कीधौगुरुगिरकेसिखरआनि दियाधर्योजमुनाकेजलपरकुं
ईमकरंदकी॥कालीकेकपालपरकेसवकेपदुमपदपन्नगके
माथेकीधौमनिहैफनिंदकी॥तेरेसीससीसफूलऐसीसोभादे
तआलीमानिनीकेपायपरेमूरतगुविंदकी॥ अथवेनीउपमा
॥दोहा॥असिनिसिजमुनाधारअहिअलिअवलीसुखपाय॥
ऐसीवेनीवरनियेकेसोदासवनाय॥ अथवेंदावरनन॥दोहा
॥वेंदावरनतविवुधसवकेसोललितलिलार॥भागसोहागनरे

समगरविसतिउदितउदार॥ अथमागफूलसीसफूलबेनी॰
फूलकोउदाहरन॥ कवित्त॥ वेनीपिकवेनीकीसुनैनिनिवन।
यगुहीकचनकुसुमरुचिलोचननिपोहिये॥ केसोदासफैल
रहीफूलसीसफूलदुतिफूलेयोतनमेरीन्याइहरिमोहिये॥ बेंदा
जगमगतजराइजरयौताकीजोतिजीत्यौहैअजितउपमानआ
नटोहिये॥ मानोइनपाउडेनिपाउधारिआयेदोऊसोहतसोहा
गसिरभालभागसोहिये॥ अथअंगवासउपमा॥ दोहा॥ सह
जसुवाससरीरकीआकरषनविधिजानि॥ अतिअद्रिष्टगति
र्व्वता काइष्टदेवता मानि॥ अथवसनवरनन॥ कवित्त॥ की
धौपेहकेसवसिंगारकीसिंगारकीहैसिद्धिकीधौभागकीसहेली
कीसोहागकोसहावहै॥ जोवनकीजायाकीधौमायामनमोहिवे
कीकायाकिधौराजकीकिलाजहीआउहै॥ लाखलाखभांतिनकी
प्रीतमकेअभिलाषपहिरेबनाइकिधौसोभाकोसोहावहै॥ सारीज
रकसीजगमगतिसरीरकीधौभूषनजराऊहीकीजोतिकोजराउहै
॥ अथसंकीर्नेउपमावरनन॥ अंगउपमा॥ कवित्त॥ चंदकोसोभागु
भालभृकुटीकमानसीहैमैनकेसेपैनसरनैननिविलासहै॥ नासि
कासरोजगंधवाहुसेसुगंधवाहुदारयौसेदसनकैसोबीजुरीसुहासहै
॥ भाईऐसीग्रीवभुजपानसोउदरुअरुपंकजसेपायगतिहंसकीसी
जासुहै॥ देषीहैगोपालएकगोपिकामैदेवतासीसोनेसोसरीरसबसोधे
कीसीवासुहै॥ अथसंकीर्नभूषनवरनन॥ कवित्त॥ विछियाअनोट
वाकघुंघरुजराइजरीजेहरछबीलीइलुद्रघंटिकाकीजालिका॥ मू
दरीउदारपोचीकंकनवलयनकीकंठकंठमालहारपहिरेगुआलिका॥ वेनी
फूलसीसफूलमागफूलकर्नेफूलघुटिलातिलकनकमोतीवनीवालिका
केसोदासनीदवासजोतिजगमगरहीदेहधरेदेषियतिमानौदीपमालिका
अथदीपतिवर्नन॥ दो॰ कंचनकेसुककेतुकीचपलाचंपकचारु॥ कमल
कोसगोरोचनातियातनदुतिअनुसारु॥ अथगतिवर्नन॥ दो॰ राजहंसक
लहंससमअतिगतिमंदविलास॥ महामत्तगजराजसीवरनहुकेसोदा
स॥ इतिश्रीगंगासुतकृतनायकनायकाभेदकाव्यसंग्रहपंचांगंसमाप्तं॥

[illegible]

[East Ind]IAN RAILWAY.

मेरे [illegible] निकले मंदिर [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] १० [illegible]
[illegible] प्रतीज[illegible]
[illegible]

। शेर ॥
पड़े [illegible]
[illegible] हो गये [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] को [illegible] भूत हुई छोड़
[illegible] प्यारे

नगीनादास विजभूखनदास वानी

मु: बसीन जि. ठाना